यह भाव से अभाव तथा अभाव से भाव कैसे हो जाता है? आचार्य सोमदेव

JANUARY 30, 2016 1 COMMENT

जिज्ञासा :-

आचार्य जी, ''समाधान – 93'' में आपने जो दिया है, उसमें थोड़ी-सी शंका शेष रह गई है और वह यह है क ईश्वर ने इस साकार जगत् की रचना प्रकृति के परमाणुओं से की है। इसका मतलब प्रकृति के परमाणुओं में साकारत्व का गुण है, तभी तो साकार जगत् बन पाया। पंचभौतिक तत्त्व भी प्रकृति के परमाणुओं से ही बने हैं, तो इन परमाणुओं से निराकार पदार्थ कैसे बन जाते हैं और फर वे निराकार पदार्थ परस्पर मलते हैं, तो आकार कैसे ग्रहण कर लेते हैं, अर्थात् साकार कैसे बन जाते हैं? यह भाव से अभाव तथा अभाव से भाव कैसे हो जाता है?

निम्न बिन्दुओं पर भी स्थिति स्पष्ट करने का कष्ट करें-

(1) आपने आकाश निराकार बताया है। यह प्रकृति के परमाणुओं से बना है। इसी तरह वायु भी निराकार है, अग्नि जब प्रकट होती तब साकार होती है, अन्यथा निराकार। यह क्यों है?

(2) मेरे वचार से प्रलयकाल में जब प्रकृति अपने वशुद्ध रूप में होती है, तब निराकार ही होती है और ईश्वर तथा जीव निराकार होते ही हैं। फर निराकार प्रकृति से साकार जगत् कैसे बना?

(3) मह र्ष दयानन्द जी ने बताया है क साकार चीजें असीम नहीं होती, बल्कि जीवात्माएँ भी संया वाली हैं, चाहे वे मनुष्य की गनती से बाहर हों। ऐसी अवस्था में आकाश या अवकाश रूप आकाश असीम है या ससीम है?

(4) वायु ससीम है या असीम?

(5) क्या ईश्वर के अतिरिक्त अन्य भी कोई तत्त्व ऐसा है, जो असीम हो?

कृपया, समाधान करने का कष्ट करें।

– इन्द्र संह पूर्व एस.डी.एम. **29-** नई अनाज मण्डी, भवानी (हरियाणा) चलभाषः – **9416057813**

समाधानः– परमेश्वर ने यह संसार अपने सामर्थ्य से मूल प्रकृति को लेकर बनाया है। संसार के बनाने में परमेश्वर नि मत्त कारण और प्रकृति उपादान कारण है। स्थूल जगत् के बनने की प्र क्रया मह र्ष क पल ने अपने सांय दर्शन में दी है-

सत्त्वरजतमसां सायावस्था प्रकृतिः प्रकृतेर्महान्, महतोऽहङ्कारोऽहङ्कारात् पञ्चतन्मात्राण्युभय मद्रियं पञ्चतन्मात्रेयः स्थूलभूतानि......।। सां.- 1.61

सत्त्व, रज, तम- इन तीन वस्तुओं से मलकरजो एक संघात है, उसका नाम प्रकृति है। उस प्रकृति से महतत्त्व बुद् ध, उस महतत्त्व से अहंकार, अहंकार से पाँच तन्मात्रा अर्थात् सूक्ष्म भूत- रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द , दस इन्द्रियाँ तथा ग्यारहवाँ मन, पाँच तन्मात्राओं से पाँच स्थूल भूत अर्थात् पृ थवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश और इन पाँच महाभूतों से यह दृश्य जगत्।

प्रकृति से जो कुछ भी उत्पन्न होता है, वह आकार वाला होता है, क्यों क प्रकृति स्वयं आकार वाली है, जो गुण कारण में नहीं होते, वे कार्य में भी नहीं होते। यदि ऐसा होने लग जाये, तो अभाव से भाव की उत्प त्त माननी पड़ेगी, जो द्रव्यात्मक पदार्थों में कभी घट ही नहीं सकता। मह र्ष दयानन्द ने भी प्रकृति को आकार वाला माना है। मह र्ष लखते हैं-''.......वह प्रकृति और परमाणु जगत् का उपादान कारण है और वे सर्वथा निराकार नहीं, कन्तु परमेश्वर से स्थूल और अन्य कार्य से सूक्ष्म आकार रखते हैं।'' – स. प्र. स. 8

आपने जो कहा क ''मेरे वचार से प्रलयकाल में जब प्रकृति अपने वशुद्ध रूप में होती है, तब निराकार ही होती है।'' यह वचार ऋ ष के वचार से नहीं मल रहा है। यदि ऐसा मान भी लें तो अभाव से भाव की उत्प त्त वाली बात हो जायेगी, जो क युक्त नहीं है। ऊपर जो लखा क प्रकृति से उत्पन्न पदार्थ आकार वाले होते हैं, इस कथन से आकाश निराकार कैसे सद्ध होगा- यह प्रश्न खड़ा हो जायेगा। इसके लए मेरा कथन है क जो आपने परोपकारी के जिज्ञासा समाधान-**93** की चर्चा की है, उसमें साकार निराकार की तीन परिभाषाएँ लखी हैं, उनको यहाँ पुनः उद्धृत करता हूँ-

1. साकार वह है, जो प्रकृति से बना हुआ, इसके अतिरिक्त निराकार।
2. साकार वह, जिसमें रूप, रस, गन्धादि पाँचों गुण प्रकट हों, इससे भन्न अर्थात् जिसमें पाँचों गुण प्रकट न हों, वह निराकार।
3. साकार वह, जिसमें केवल रूप गुण प्रकट रूप में हो, अर्थात् जो आँखों से दिखाई दे वह साकार, इससे भन्न निराकार।

इन परिभाषाओं के आधार से पहली परिभाषा के अनुसार देखें तो जो प्रकृति से बना आकाश है, वह भी साकार होगा। जहाँ आकाश को निराकार कहा है, वहाँ सापेक्ष रूप से कहा है। आकाश पाँच भूतों में सबसे सूक्ष्म है, उसको हम केवल शब्द के आधार से अनुमान लगाकर जान पाते हैं। इसी प्रकार वायु को स्पर्श से जान पाते हैं। रूप क ी दृष्टि से तो ये निराकार ही कहलाएँगे।

हाँ, जिस अवकाश रूप आकाश की बात ऋ ष करते हैं, जो क प्रकृति से नहीं बना, वह तो निराकार ही है और यह अवकाश रूप आकाश असीम है। इन आकाश, वायु आदि के असीम- ससीम के वषय में हम इतना ही कह सकते हैं क ये पदार्थ प्रकृति से बने होने केकारण ससीम हैं। शेष बाद में लखेंगे।

– ऋ ष उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

‘सर्वव्यापक कर्मों का साक्षी परमात्मा मुनष्य को बुरे काम करने पर रोकता क्यों नहीं?’ -मनमोहन कुमार आर्य,

JANUARY 26, 2016 LEAVE A COMMENT

ओ३म्

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वज्ञ, जीवों के प्रत्येक कर्म का साक्षी व फल प्रदाता है। जीवात्मा सत्य व चेतन, सूक्ष्म, एकदेशी, अल्पज्ञ, अनादि, अ वनाशी, नित्य, अजर, अमर आदि गुणों वाली सत्ता व पदार्थ है। जीवात्मा को पूर्वजन्म के अभुक्त कर्मों, पाप-पुण्य वा प्रारब्ध के आधार पर भन्न भन्न योनियों में से कसी एक योनि में जन्म प्राप्त होता है। मनुष्य योनि में जन्म लेने वाले बालक व युवा-वृद्ध आदि समय के साथ शैशव अवस्था को पाकर बाल अवस्था और फर कशोरावस्था में प्रवेश करते हैं और उसके बाद युवा हो जाते है। मृत्यु पर्यन्त मनुष्य की शारीरिक अवस्थायें बदलती रहती हैं। हम अनेक मनुष्यों को कभी अच्छे व कभी बुरे कर्म करते हुए देखते हैं तो हमारे व अन्यों के मन में प्रश्न उठता है क सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमान और सभी जीवों के कर्मों का साक्षी ईश्वर इन पाप व बुरे कर्म करने वालों को बुरा काम करने से रोकता क्यों नहीं है? अनेक अल्पज्ञानी मनुष्य तो इसी कारण से नास्तिक बन जाते हैं। वषय कुछ कठिन है परन्तु जीव की स्वतन्त्रता के सद्धान्त के आधार पर इस व ऐसे प्रश्नों का समाधान भी वैदिक ध र्मयों के पास उपलब्ध है। वह समाधान क्या है? इस पर वचार करते हैं।

जीवात्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है और अपने कये हुए कर्म के फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था में परतन्त्र वा पराधीन है। यहां हमें जीव को कर्म करने की स्वतन्त्रता के सद्धान्त को समझना है। यदि यह समझ लया तो समस्या का समाधान हो जायेगा। एक उदाहरण पर वचार करते हैं। हमारे देश में अनेक सरकारी अ धकारी काम करते हैं। उन्हें काम करने के नियम बता दिये जाते हैं और उन्हें उसके अन्तर्गत काम करने की स्वतन्त्रता होती है। भ्रष्टाचार के वरुद्ध नियम बने हुए हैं। भ्रष्टाचार दण्डनीय अपराध होता है। प्रत्येक अ धकारी जानता है क यदि उसने भ्रष्टाचार कया तो वह दण्डित कया जायेगा। इस पर भी वह लोभवश भ्रष्टाचार कर बैठता है। वह सोचता है क कसी को पता नहीं चलेगा, वह धनवान बन जायेगा और सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेगा। वह प्रथम बार छुप कर भ्रष्टाचार करता है और बच जाता है। अब उसे इस अनु चत आचरण का संस्कार पड़ जाता है जो उसे पुनः बुरे कामों को करने की प्रेरणा करता है। वह अब बार बार अनु चत काम वा भ्रष्टाचार करता है। कभी न कभी वह फंस जाता है। उसके भ्रष्टाचार के प्रमाण उपलब्ध हो जाते हैं और उसे न केवल काम से हटा दिया जाता है अ पतु जेल की सजा का दण्ड भी मलता है। यहां हम देखते हैं क भ्रष्टाचार के आरोप में उसे तब दण्ड मलता है जब वह अपराध कर लेता है और जांच के बाद उसका अपराध सद्ध हो जाता है। उसे कर्म करने की स्वतन्त्रता थी इस लये उसे बीच में रोका नहीं गया। दण्ड वधान के डर से वह बुरा काम नहीं करेगा, इसकी उससे अपेक्षा की जाती है। जब उसका अपराध पूरा हो गया और उच्चा धकारियों को

इसकी जानकारी मली तो उसे जांच कराकर उसके अपराध के अनुसार दण्ड दिया गया। दण्ड मलने पर उसको पश्चाताप होता है। जीवात्मा के साथ भी कुछ इसी प्रकार व्यवहार ईश्वर करता है। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है, अतः ईश्वर उसको अपराध न करने की प्रेरणा, उसके मन में भय-शंका-लज्जा आदि उत्पन्न कर, करता तो है परन्तु जीव की स्वतन्त्रता के कारण उसे बलपूर्वक रोकता नहीं है। यदि वह मनुष्य को बुरे काम करने से बलपूर्वक रोके तो फर यह जीव की स्वतन्त्रता में बाधा होगी। हमने कई बार गलती करने, यथा नशा करने व बुरे लोगो की संगति करने आदि मामलों में माता- पता द्वारा अपने बच्चों को डांटे जाने पर बच्चों को यह कहते हुए सुना है क यह जिन्दगी उनकी है, वह जो चाहें सो करें। इस पर कुछ माता- पता तो मौन हो जाते हैं और कुछ उत्तर देते हैं परन्तु फर भी माता- पता की सलाह को मानना व न मानना उनकी सन्तानों के अपने अ धकार व वश में है। यहां माता पता को दण्ड देने का अ धकार नहीं है परन्तु माता- पता जानते हैं क सन्तान के बुरे कर्मों का परिणाम व फल भ वष्य में बुरा ही होना है। यह कर्म-फल सद्धान्त है और बुरे कर्म का यथासमय दुःखरूपी बुरा फल मलना ही ईश्वरी नियम है। अच्छे काम करने से मनुष्य की उन्नति होती है, वह सुखी होता है और अशुभ कर्म करने से अवनति होकर दुःख पाता है। ईश्वर जीवात्मा को बुरे काम न करने की प्रेरणा तो देता है परन्तु बलपूर्वक रोकता नहीं है क्यों क जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है। हां, जीव को भ वष्य में अपने कए हुए बुरे कर्म का दुःख रूपी फल अवश्य मलता है। जीव को बुरे कर्मों को करते समय व कर्म करने से पूर्व ही रोकना व कर्म की समाप्ती पर भी दण्ड न देकर बहुत बाद में दण्ड देना, इसका कारण बहुत लोगों की समझ में नहीं आता और इस अन भज्ञता के कारण कई बार श क्षत व अ श क्षत लोग कर्म संबंधी गलत निर्णय कर बैठते हैं।

यहां एक समस्या यह भी आती है कई लोग बुरे कर्म करते हैं और सुखी देखे जाते हैं और म्त्यु तक भी उनके बुरे कर्मों का फल उनको मलता हुआ नहीं देखा जाता। इसका क्या कारण है? इसका कारण जो समझ में आता है वह यह है क जीव अनादि व अमर है और अनन्त काल तक उसका जन्म व मरण होता रहेगा। एक जन्म के बचे हुए कर्मों को वह आगामी जन्म में व उसके बाद के जन्मों में भी भोग सकता है। हमें यह जो जन्म मला है इसकी जाति, आयु व भोग हमारे प्रारब्ध अर्थात् पूर्व जन्म के कर्मों के अनुसार निर्धारित व निश्चित हुए हैं। इसका प्रमाण योगदर्शन में मह र्ष पतंज ल ने दिया है और बताया है क मनुष्य के पूर्वजन्म के कर्मों वा प्रारब्ध के अनुसार ही जीवात्मा के भावी जन्म के जाति, आयु व भोग निर्धारित होते हैं। मनुष्य वा कसी भी प्राणी पूर्ण आयु को जीवन का भोग काल कह सकते हैं और जिन कर्मों का भोग करना है वह भी पूर्वजन्म के कर्मों पर ही अ धकांशतः आधारित है। इस जन्म के क्रयमाण कर्मों से इतर कर्म अभी पके नहीं, अतः उनके पकने पर ही फल मलेगा। कर्म के पके बिना ही बीच में सभी क्रयमाण व अन्य सं चत होने वाले आदि कर्मो के फल दे देना ईश्वर की न्याय व्यवस्था में सम्मि लत नहीं है। कुछ क्रयमाण कर्मों का फल मलता है और कुछ कर्म सं चत खाते में चले जाते हैं। यदि इस जन्म में सं चत श्रेणी के कर्मों का फल पहले दे दिया जायेगा तो पछले कर्म तो बचे ही रहेंगे। न्याय यही कहता है क पहले पुराना कर्मों का ऋण चुकता हो फर नया चुकता कया जाये। यह बात जहां बुरे कर्मों पर लागू होती है वहीं नये शुभ कर्मों पर भी लागू होती है। हम ईश्वरोपासना, यज्ञादि एवं माता- पता-आचार्यो व पात्रों की सेवा व सत्कार करते हैं। इन कर्मों

का फल हमें साथ-साथ नहीं मलता। इसी तरह से सभी बुरे कर्मों का भी नहीं मलता। जिन व कुछ क्रयमाण कर्मों का फल मल जाता है उनसे अतिरिक्त बचे हुए कर्म सं चत कर्म बन जाते हैं जिनका फल बाद में, परजन्म व जन्मों में मलता है, ऐसा वैदिक साहित्य सहित वचार व चन्तन करने पर ज्ञात होता है और यह उ चत ही है। वेद ने तो मनुष्य को आगाह व सावधान कया ही हुआ है क, हे मनुष्य! तू वेद वहित कर्मों को करते हुए सौ वर्ष व अ धक आयु पर्यन्त सुखपूर्वक जी वत रहने की इच्छा करे। इससे अच्छा अन्य कोई मार्ग नहीं है। अतः निष्कर्ष यही निकलता है क जिस प्रारब्ध व जिन कर्मों के आधार पर हमारा जन्म हुआ, जाति मली, आयु निश्चित हुई व भोग निर्धारित हैं, इस जन्म में पहले उनका ही हमें भोग करना होगा और इस जन्म के कर्मों का फल, क्रयमाण के अतिरिक्त, इस जन्म के बाद परजन्मों में मलेगा। अतः कर्म फल सद्धान्त व ईश्वर के वधान को समझना व वश्वास करना ही सच्ची आस्तिकता व मनुष्य के लए श्रेयस्कर है। बुरा व्यक्ति इस जन्म में अपने पूर्व कर्मों के कारण सुखी है। पाप कर्मों को करके भी उसे सुख मल रहा है परन्तु जब इसका फल ईश्वर देगा तो उसे दुःख की स्थिति से ही गुजरना होगा। यह स्थिति इस जन्म व अगले जन्मों में निश्चित रूप से प्राप्त होगी।

हम समझते हैं क जो लोग बुरा काम करते हैं और उसकी सफलता में प्रसन्न होते हैं वह अज्ञानी ही कहे जायेंगे क्यों क उन्हें यह ज्ञात नहीं है क 'अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं।' अर्थात् मनुष्य को अपने कये हुए सभी कर्मों के सुख-दुःख रूपी फल अवश्यमेव भोगने होंगे। इन्हीं शब्दों के साथ इस चर्चा को वराम देते हैं।

–मनमोहन कुमार आर्य

पताः **196** चुक्खूवाला-**2**

देहरादून-**248001**

फोनः**09412985121**

जिज्ञासा समाधान: आचार्य सोमदेव

JANUARY 2, 2016 LEAVE A COMMENT

जिज्ञासा **2**- मैं मह र्ष दयानन्द जी का एक बहुत छोटा सपाही हूँ, दैनिक यज्ञ एवं दोनों समय सन्ध्या करता हूँ, कन्तु सन्ध्या करते वक्त जब मैं मनसा परिक्रमा मन्त्र का अर्थ भाव के साथ उच्चारण करता हूँ तो निन ल खत शंका घेर लेती है-

(क) मनसा परिक्रमा मन्त्रों में हम दिशाओं, अग्नि, सूर्य, लता आदि जड़ पदार्थों को नमन करते हैं। कृपया, भाव स्पष्ट करें।

(ख) हर जीव अपने पूर्व जन्मों के कर्मों के आधार पर आयु, देश, स्थिति आदि प्राप्त करता है, ले कन बहुत से लोग बेईमानी, छल-कपट के द्वारा भाग्य से अ धक धन अर्जित कर लेते हैं, जो क उसके प्रारध से ज्यादा होता है। कृपया, थोड़ा प्रकाश डाल कर अज्ञान दूर करें।

– सुरेन्द्र कुमार, डल्यू-2-349-बी, नांगल राया, नई दिल्ली-110046

समाधान– 2 (क) मह र्ष ने सन्ध्या करने का वधान मनुष्यों के लए कया है। सन्ध्या में जिन मन्त्रों का वनियोग जिस क्रम से कया है, वह अपने आप में सन्ध्योपासना करने की वैज्ञानिक शैली है। सन्ध्या के प्रारभ से अन्त तक जिस क्रम को मह र्ष ने रखा है, उस क्रम से साधक स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाता चला जाता है।

आर्य जगत् मूर्धन्य दार्शनिक योग्य वद्वान् पण्डित गंगाप्रसाद उपाध्याय जी ने इस वषय पर चन्तन कर सन्ध्या वषय को लेकर 'सन्ध्या क्या, क्यों, कैसे' पुस्तक लखी है। उसके आधार पर यहाँ हम कुछ लखते हैं।

सन्ध्या को चार भागों में वभक्त करके देखें- 1. आचमन मन्त्र से लेकर प्राणायाम मन्त्र पर्यन्त, 2. अघमर्षण मन्त्र, 3. मनसा परिक्रमा मन्त्र और 4. उपस्थान मन्त्र। प्रथम भाग में अपने शरीर= पण्ड में ईश्वर के गुणों का वचार करना। इन्द्रिय स्पर्श, मार्जन एवं प्राणायाम मन्त्र में इसी पर बल दिया गया है, अर्थात् शरीर, प्राण व इन्द्रियों की बलवत्ता पर बल दिया गया है। दूसरा– पण्ड से आगे ब्रह्माण्ड को देखते हुए, ईश्वर का वचार करना, जो अघमर्षण मन्त्रों में हैं। पण्ड केवल मेरा अपना है, कन्तु ब्रह्माण्ड मेरा अपना भी है और सभी प्रा णयों का भी। ब्रह्माण्ड सबके साझे का पण्ड है। तीसरा– स्थूल से सूक्ष्मता की ओर लेकर जाने का है। पण्ड और ब्रह्माण्ड ये स्थूल हैं, इन स्थूल से सूक्ष्म मन है, उस मन को सर्वत्र दौड़ाकर सर्वत्र परमेश्वर का चन्तन करना, अर्थात् सब दिशाओं-उपदिशाओं में परमेश्वर का भान करना। चौथा– मन से भी परे आत्मा को परमात्मा के निकट ले जाना, जो क हम उपस्थान मन्त्रों के द्वारा परमेश्वर के निकट होते हैं। यह स्थिति सन्ध्या में सर्वोत्कृष्ट है। हमें इस स्थिति तक पहुँचना है, अर्थात् परमेश्वर के निकट अपनी आत्मा को ले जाना है।

अब आपकी जिज्ञासा पर वचार करते हैं। मनसा परिक्रमा मन्त्रों में जो कहा गया है क सब दिशाओं में परमात्मा अपनी व भन्न शक्ति स्वरूप से स्वामी है। सबके लए नमस्कार व अपने अन्दर व अन्य के अन्दर स्थित द्वेष को दूर करने की प्रार्थना। आपका कथन है क ''इन दिशाओं, अग्नि, सूर्य, लता आदि को नमन करने का क्या भाव है?'' इन मन्त्रों में जड़ और चेतन दोनों का ही कथन है और दोनों के लए नमस्कार करने को कहा है। इन छः मन्त्रों में अग्नि, इन्द्र, वरुण, सोम, वष्णु और बृहस्पति, ये नाम सब दिशाओं में स्थित परमात्मा के हैं और इसी प्रकार अ सतः स्वजः और श्वित्र, ये नाम भी परमेश्वर के हैं। इन सभी स्वरूप वाले परमेश्वर को नमस्कार करना, अर्थात् उस परमेश्वर का समान करना, उससे यथायोग्य व्यवहार करना, अर्थात् उसकी आज्ञा का पालन करना। मन्त्रों में एक चेतन परमात्मा का वर्णन है, दूसरे चेतन पतर लोग, कीट-पतंग, वषधर प्राणी, वृक्ष-लता-बेल आदि हैं, इनको भी नमस्कार कया गया है। नमस्कार का अर्थ है- झुकना, नमन करना, यथायोग्य व्यवहार करना। इस यथायोग्य व्यवहार को लेकर जब नमस्कार को देखेंगे तो पतर, जो चेतन हैं, उनके लए क्या व्यवहार होगा, वह हमारे सामने आ जायेगा। कीट, पतंग, वषधर प्राणी, लता, बेल, वृक्ष आदि ये हमारे लए कतने उपयोगी हैं, इस प्रकृति के लए कतने उपयोगी हैं, ऐसा

 वचार करना और इनके उपयोग को देखकर वैसा ही इसका उपयोग करना, व्यवहार में लाना, इनके लए नमस्कार होगा और जो जड़ पदार्थ- आदित्य, अन्न, अशनि, वर्षा है, इनको भी नमस्कार अर्थात् इनका यथायोग्य उपयोग लेना, इनसे उपकार लेना, यह इनके लए नमस्कार होगा।

कीट, पतंग, वषधर प्राणी, वृक्ष, लता, वेल, आदित्य, अन्न, अशनि, वर्षा, इषु आदि को नमस्कार करने का अर्थ यह कदा प नहीं है क इनकी जैसे पौरा णक वर्ग पूजा करता है, वैसे नमस्कारादि करना। यह व्यवहार चेतन मनुष्यों व परमेश्वर के लए हो सकता है, अन्य के लए नहीं।

(ख) जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है, वह पाप-पुण्य रूप कर्म दोनों ही कर सकता है। इन्हीं पाप-पुण्य रूप कर्म के आधार पर परमेश्वर जीवों को फल देता है। वर्तमान जीवन में पछले कर्मों के आधार पर व इस जीवन में कये पुरुषार्थ से जीव भोग भोगता है। पछले कर्म श्रेष्ठ थे, उसके आधार पर बहुत अच्छा शरीर, परिवार, समाज आदि मला। ये मलने के बाद भी जीवात्मा इस जीवन में वपरीत कर्म करता हुआ दुःखी हो सकता है। भले ही पछले कर्म अच्छे थे, कन्तु इस जीवन में उसने जघन्य पाप कये, तो वह इस जीवन व अगले जीवन में दुःख भोगेगा।

एक बात और यहाँ कह दें क जो कुछ हम जीवन में सुख-दुःख भोगते हैं, वह सब हमारे कर्मों का फल नहीं होता। हाँ, यह अवश्य है क सुख-दुःख फल हमारे कर्मों का होता है, कन्तु सभी सुख-दुःख हमारे कर्मों का नहीं होता। कसी अन्य व्यक्ति के कारण या प्राकृतिक आपदा के कारण भी सुख-दुःख हो सकता है।

अब आपकी बात- जिस व्यक्ति का कर्माशय सामान्य था और इस आधार पर उसको फल भी सामान्य मलना था, कन्तु वह व्यक्ति छल, कपट, अधर्म कर-करके बहुत धनादि अर्जित कर लेता है। उस अधर्म अर्जित धन वाले व्यक्ति को दूसरे लोग देखकर यह सोचने लग जाते हैं क धर्म करने वाला दुःखी और यह अधर्म करने वाला सुखी है। ऐसा सोचना नासमझी है, क्यों क धर्म का फल सदा ही श्रेष्ठ और अधर्म का फल सदा वपरीत ही होता है।

जिस व्यक्ति ने अधर्म से साधन अर्जित कये हैं, निश्चित रूप से उसको आगे जो फल मलने वाला है, वह घोर दुःख ही होगा। मह र्ष दयानन्द ने इस वषय में मनु का श्लोक देते हुए लखा है-

अधर्मेणैधते तावत्ततो भद्रा ण पश्यति।

ततः सपत्नाञ्जयति समूलस्तु वनश्यति।।

''जब अधर्मात्मा मनुष्य धर्म की मर्यादा छोड़ (जैसे तालाब के बाँध तोड़, जल चारों ओर फैल जाता है वैसे) मथ्याभाषण, कपट, पाखण्ड, अर्थात् रक्षा करने वाले वेदों का खण्डन और वश्वासधातादि कर्मों से पराये पदार्थों को लेकर प्रथम बढ़ता है, पश्चात् धनादि ऐश्वर्य से खान-पान, वस्त्र, आभूषण, यान, स्थान, मान, प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है। अन्याय से शत्रुओं को भी जीतता है, पश्चात् शीघ्र नष्ट हो जाता है। जैसे जड़ से काटा हुआ वृक्ष नष्ट हो जाता है,

वैसे अधर्मी नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है।'' सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 5, इस लए अधर्मी को बढ़ते देख यह कभी न सोचें क इसका जीवन अच्छा है, अ पतु यह वचारें क यह नादान परमेश्वर के न्याय को नहीं देख रहा, यह परमेश्वर के न्याय से कभी नहीं बच सकता। जो इसने छल-कपट से अर्जन कया है, उससे वह वशेष सुख तो नहीं ले पायेगा, अ पतु परमात्मा के न्याय से उसने जो छल-कपट के कर्म कये हैं, उनका वशेष दुःख अवश्य भोगेगा। अस्तु।

– ऋ ष उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

व चत्र शंका समाधानः प्रा राजेन्द्र जिज्ञासु

NOVEMBER 22, 2015 2 COMMENTS

श्री स्वामी ववेकानन्द जी रोजड़ का शंका समाधान पढ़ सुनकर कुछ स्वाध्याय प्रेमी उनके समाधान परी प्रश्न उठाते हैं। उन पर कुछ टिप्पणी करने को कई कारणों से टाल देना उ चत जाना। वह दर्शनों के पण्डित हैं अतः उन्हीं से उनके समाधान पर प्रश्न पूछने का परामर्श देना ठीक लगा। अब बहुत कहा गया तो उनके दो वचारों पर कुछ निवेदन कया जाता है। पाठक तथा वद्वान् इस पर गभीरता से वचारें।

एक प्रश्न के उत्तर में गऊ को कसाई से बचाने के लए असत्य कतई न बोलने और ब्राह्मण, वैश्य और शूद्र को आपने न्यारा-न्यारा उपाय करने का उपदेश दिया है। कसी भी अवस्था में असत्य न बोलने का आपका उपदेश है। गुप्तचर वभाग में कार्यरत व्यक्ति देश की रक्षा करने में लगे रहते हैं। वे झूठ बोलकर क्या पाप करते हैं? पं. रु चराम जी ने श्याम भाई का शव क्या सत्य बोल कर प्राप्त कया। वीर भगत संह ने साण्डर्स को मारा तो पु लस ने पं. भगवद्दत्त जी, पं. रामगोपाल जी वैद्य तथा ठाकुर अमर संह से पूछा, वे गोली चलाकर कधर को भागे? तीनों ने कहा, हमने तो कसी को इधर से भागते देखा ही नहीं। क्रान्तिकारी पु लस के हाथ नहीं आए। क्या ये तीन असत्य बोलने के कारण पापी माने जायें?

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने शाही कला में जाँच करने वालो को कहा, ''मैं भापडोद की पंचायत में आने वाले कसी भी व्यक्ति का नाम नहीं जानता।'' वे जिसका भी नाम बताते सरकार उसे यातनायें देती। स्वामी जी ने झूठ बोलकर इतिहास बनाया। इसे आप पाप मानेंगे क्या?

रोजड़ में छपे एक बड़े ग्रन्थ में व उत्कृष्ट समाधान में मोक्ष प्राप्ति को ही सर्वोत्तम कर्म बताया गया है। जन्म लेने से दुःख भी भोगना पड़ता है सो जन्म लेना कोई बुद् धमत्ता का कर्म नहीं। इस आशय के वाक्य इस लेखक ने कई बार पढ़े हैं। मोक्ष का महत्त्व सब जानते हैं परन्तु यह मत भू लए क ऋ ष के पत्र-व्यवहार में ही समा ध का आनन्द छोड़कर लोकोपकार, वेद-प्रचार के लए सम र्पत होने की चर्चा पढ़ लीजिये। ऋ ष दूसरों के बन्धन काटने के लए बार-बार नरजन्म पाने की घोषणा या कामना करते हैं। ध्यान से ऋ ष जीवन का पाठ कीजिये, मनन कीजिये। रोजड़ के कई महात्मा मोक्ष वषयक एकाङ्गी वचार देते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने प्राणोत्सर्ग से पूर्व धर्म प्रचार जाति रक्षा के लए फर से नर-जन्म पाने की कामना व्यक्त की थी। क्या यह वेद- वरुद्ध माना जावे?

शंका समाधान करते समय ऋ ष के पत्र-व्यवहार तथा जीवन-चरित्र का भी गीार ज्ञान होना चाहिये। वेद के सद्धान्तों को, वैदिक दर्शन को समझने के लए इनका भी उतना ही महत्त्व है जितना अन्य आर्ष ग्रन्थों का है। बुद् ध-भेद पैदा करने से हानि ही होगी। संगति का लगाना बहुत आवश्यक है।

"सत्यार्थ प्रकाश : समीक्षा की समीक्षा का जवाब PART 12"

OCTOBER 29, 2015 LEAVE A COMMENT

इस्लाम, नारी और महिला वकास का अवरोधक बुरका

"ग्यारहवे अध्याय का जवाब पार्ट 1"

सत्यार्थ प्रकाश समीक्षा की समीक्षा पुस्तक में सतीशचंद गुप्ता जी एक अध्याय प्रस्तुत करते हैं "क्या पर्दा नारी के हित में नहीं है ?" अपनी परदे वाली थयोरी को जायज़ (वैध) सद्ध करने के चक्कर में लेखक इतने मशगूल हुए की बिना सद्धांतो के ही कुतर्क और मथ्याभाषण करते हुए, वर्तमान युग में भारतीय नारी का उद्धार करने वाले ऋ ष दयानंद को इस्लाम और मुसलमानो का कटुआलोचकर बना दिया। क्या ये समाज को सच्चाई दिखाने की जगह खुद ही सच्चाई पर पर्दा डालने वाली बात न हुई ? लेखक को चाहिए था की नारी की मनोस्थति को समझते हुए उसकी भावनाओ का सम्मान करते, मगर इस्लामी धारणा से ओतप्रोत हुए लेखक ने सच को नकारते हुए, वशुद्ध रूप से मजहबी कट्टरता का परिचय देकर सम्पूर्ण नारी जाती का अपमान कर दिया। क्या ये आक्षेपकर्ता का मान सक दिवा लयापन नहीं है ?

दे खये, पर्दा प्रथा न तो भारतीय संस्कार हैं, न ही ये शब्द ही भारतीय हिंदी भाषा से सम्बं धत है, "पर्दा" शब्द स्वयं वदेशी है जो फ़ारसी भाषा से है, संपादक "डॉ सैयद असद अली" प्रकाशक राजपाल इन संस, दिल्ली से प्रका शत "व्यवहारिक उर्दू हिंदी शब्दकोष" पृष्ठ संख्या १८८ में शब्द "पसेपर्दा" आता है, जो "फ़ारसी पुल्लिंग" शब्द है। जिसका अर्थ है आड़ में। तो ये बात तो क्लियर है की पर्दा शब्द खुद में ही वदेशी शब्द है, तो इसका मूल भी भारतीय नहीं हो सकता, वैदिक संस्कृति में नारी को सम्मान का सूचक "देवी" कहा गया है, जो कभी भी छुपाने की वस्तु वाले नजरिये से नहीं दे ख गयी। क्यों क "औरत" शब्द अरबी है जो अरबी धातु औराह या आईन-वाव-रा (ayn-waw-ra) से जिसका मतलब है कानापन या एक आंख से देखना से बना है। सीधा सीधा अर्थ है, शायद अरब के लोग नारी को केवल भोग की वस्तु या शारीरिक सम्बन्ध बनाने वाली नजर से ही देखते थे, जिस कारण नारी को "औरत" शब्द यानी छुपाने वाली बना दिया ता क ऐसी दुष्ट और काम वास्नामयी नजरो से बचा सके।

जब क भारतीय पद्धति में महिला को देवी का दर्जा प्राप्त है, जिससे ज्ञात होता है की भारतीय परंपरा और संस्कार नारियो के प्रति कतने उदारशील और संस्कारी थे। अब जो बात है पर्दा की तो कसी भी वैदिक साहित्य में महिला को छुपाने या पर्दा करने का ववरण प्राप्त नहीं होता दे खये :

निरुक्त में पर्दा प्रथा का ववरण कहीं मौजूद नहीं।

निरुक्तानुसार संप त्त संबंधी मामले निपटाने के लए न्यायालयों में स्त्रियों के आने जाने के लए कहीं पर्दा व्यवस्था का ववरण नहीं, बल्कि अ धकार है।

रामायण और महाभारत काल में भी महिलाओ की पर्दा प्रथा नहीं पायी जाती, इसके उल्ट रावण की बहन जब श्री राम और लक्ष्मण के सामने आई तब भी कोई पर्दा न था, जब रावण माता सीता को ले जाकर, अशोक वाटिका में रखा वहा भी कोई पर्दा व्यवस्था नहीं थी। रामायण और महाभारत कालीन इतिहास में स्वयंवर होते थे, तब भी पर्दा व्यवस्था का कोई उल्लेख प्राप्त नहीं होता।

इन सब तथ्यों से ज्ञात हो जाता है की आर्य सभ्यता में पर्दा व्यवस्था थी ही नहीं, क्यों क आर्य जाति सदैव सदाचारी और संयमी रही है, अतः पुरुषो को अपनी इन्द्रियों को वश में करना ही सदाचार है, महिलाओ को ढक कर, छिपा कर पुरुष इन्द्रियों को वश में नहीं कर सकता, खैर ये ढकने और छिपाने जैसी प्रथा से पुरुष की इन्द्रिय संयम में रहती हैं और पुरुष सदाचार की शक्षा प्राप्त करता है, इतना वज्ञानं अरबी सभ्यता में ही था।

अब हम आपको वेद से प्रमाण दिखाते हैं, दे खये :

सुमंगलीरियं वधुरिमा समेत पश्यत
सौभाग्यमस्यै दत्वायाथास्तं व परेतन

ऋग्वेद (10.85.33)

हे ववाह में उपस्थित भद्र स्त्री पुरुषो ! यह वधु शुभा और सौभाग्यशा लनी है। आप लोग आइये, दे खये और इसे सौभाग्य का आशीर्वाद देकर अनन्तर अपने अपने घरो को जाइए।

यहाँ स्पष्ट है की पर्दा प्रथा का कोई औ चत्य भारतीय संस्कृति में महिलाओ के लए निर्धारित नहीं कया गया। बल्कि आश्वलायनगृह्यसूत्र (1/8/7) के अनुसार वधु को अपने घर ले आते समय वर को चाहिए क वह प्रत्येक निवेश स्थान (रुकने के स्थान) पर दर्शकों को ऋग्वेद के उपर्युक्त मंत्र के साथ दिखाए। इससे स्पष्ट है क वैदिक सभ्यता (भारतीय संस्कृति) में वधुओं द्वारा अवगुण्ठन (पर्दा) नहीं धारण कया जाता था, प्रत्युत वे सबके सामने निरावगुण्ठन आती थी। पर्दा प्रथा का उल्लेख सबसे पहले महाकाव्यों में हुआ है पर उस समय यह केवल कुछ राजपरिवारों तक ही सी मत था। (धर्मशास्त्र का इतिहास पृ.336)

अब मूल सवाल यह है की ये पर्दा प्रथा जैसी कुप्रथा हमारे भारतीय समाज में कैसे दा खल हुई ? इसका जवाब हमें हुतात्मा पं डत लेखराम कृत “मह र्ष दयानंद सरस्वती का जीवन चरित्र” नामक पुस्तक में बेहद तर्कपूर्ण आधार पर मलता है, जहाँ मह र्ष ने एक शंकालु की शंका समाधान करते हुए कहा :

“स्त्रियों को परदे में रखना आजन्म कारागार में डालना है। जब उनको वद्या होगी वह स्वयं अपनी वद्या के द्वारा बुद् धमती होकर प्रत्येक प्रकार के दोषो से रहित और प वत्र रह सकती हैं। परदे में रहने से सतीत्व रक्षा नहीं कर सकती और बिना वद्या प्राप्ति के

बुद् धमती नहीं हो सकती हैं और परदे में रखने की प्रथा इस प्रकार प्रच लत हुई की जब इस देश के शासक मुस्लमान हुए तो उन्होंने शासन की शक्ति से जिस कसी की बहु बेटी को अच्छी रूपवती देखा उसको अपने शासना धकार से बलात छीन लया और दासी बना लया। उस समय हिन्दू ववश थे, इस कारण उनमे सामना करने की सामर्थ्य न थी। इस लए अपने सम्मान की रक्षा के लए उन्होंने अपनी स्त्रियों और बहु बेटियो को घर से बाहर जाने का निषेध कर दिया। सो मूर्खो ने उसको पूर्वजो का आचार समझ लया। देखो, मेमो अर्थात अंग्रेज की स्त्रियों को, वे भारत की स्त्रियों की अपेक्षा कतनी साहसी, वद्यावती और सदाचारिणी होती हैं।"

ऋ ष ने जो समझाया उसे न समझकर पूर्वाग्रह से ग्र सत हो आक्षेपकर्ता ने कुछ और ही समझा, स्त्रियों को परदे में रखना आजन्म कारागार है, क्यों क ये महिला की इच्छा वरुद्ध है, अनेको मुस्लिम महिलाये ही बुरखा का वरोध करती हैं, यहाँ तक की अनेको मुस्लिम महिलाओ ने तो नग्न तक होकर वरोध कया है, ऐसी अनेको खबरों से फ्रांस, ब्रिटेन आदि देशो के समाचार पत्र भरे पड़े हैं। हम नग्न्ता का समर्थन तो बिलकुल नहीं करते, वरोध सदैव ही शालीन और मर्यादित होना चाहिए, ले कन शायद उन मुस्लिम महिलाओ को नग्न्ता की राह दिखाने वाला भी बुरखा ही था जिसमे उन्हें घुटन महसूस हो रही थी। खैर हम ऋ ष की दूसरी बात समझते हैं, उन्होंने कहा महिला कभी भी परदे से अपनी सतीत्व रक्षा नहीं कर सकती, ये कटु सत्य है, क्यों क भारत में ही अनेको मुस्लिम परिवारो में मुस्लिम बहु की इज्जत को तार तार करने में उसके ही अपने मुस्लिम ससुर का योगदान था। मुजफ्फरनगर उ० प्र० में इमराना का केस मात्र एक उदहारण है, मुस्लिम पति नूर इलाही की जो पत्नी इमराना थी, उसके ससुर अली मोहम्मद ने बलात्कार कया था, तब इस्लामी कानून अनुसार दारुल उलूम देवबंद ने एक फतवा निकाला जो दुनिया से मानवता शर्मसार करने वाला था, इस कानून में पी ड़त महिला जो ससुर की हैवानियत का शकार हुई थी, उसे उस हैवान की पत्नी बना दिया गया, और जो उसका पति था, जिससे उस महिला को पांच बच्चे थे, उसे बेटा बना दिया, अंततः पी ड़त ने भारतीय सं वधान का दरवाजा खटखटाया और पी ड़ता को इंसाफ मला। अब सवाल ये है, क्या बुरखा यहाँ स्त्री की सतीत्व रक्षा कर पाया ? क्या ये जरुरी नहीं था, की पुरुष अपनी इन्द्रियों को वश में करना सीखे। महिलाओ को श क्षत करने से ही महिलाओ का शोषण रुकेगा, क्यों क महिलाओ को जो अ धकार प्राप्त हैं, वो शरिया कानून नहीं देता, क्यों क इस्लाम में महिलाओ का पढ़ना लखना हराम है, महिलाओ का नौकरी करना हराम है, महिलाओ का पर पुरुषो (ऑ फस सहकर्मी) के साथ बैठना, काम करना, सब हराम है। खैर इस वषय पर हम अगले लेख में वचार करेंगे। आप अभी केवल ये सो चये की यदि महिला श क्षत होकर नौकरी करना चाहे तो क्या वो ऑ फस में बुरखा पहने हुए, बैठ सकती है ? क्या ये एक प्रकार का मान सक अत्याचार नहीं है ? क्या पुरुष को भी बुरखे में रहने की आज्ञा है ? यदि नहीं, तो क्यों एक नारी पर अत्याचार कया जाता है, वो भी मजहब के नाम पर ? फर भी कहते हैं की महिला और पुरुष को इस्लाम में समान अ धकार प्राप्त हैं ? क्या ये एक प्रकार का बेहूदा मजाक नहीं ?

यही बात यहाँ मह र्ष ने बताई, की महिला को श क्षत होना चाहिए, ता क वो अपने अ धकार प्राप्त कर सके, मगर खेद की इस्लाम में महिलाओ का पढ़ना लखना, उनको अ धकार देना इस्लामी शरिया में हराम है, पा कस्तान की मलाला युसूफ ज़ई से ज्यादा इस बात को कोई नहीं समझ सकता।

उपरोक्त तथ्यों से सद्ध है की भारतीय सभ्यता में तो पर्दा का कोई रोल नहीं, ये कुप्रथा वशुद्ध रूप से मुस्लिम शासको के कारण ही भारतीय परिवेश में दा खल हुई। ऋ ष ने जो तर्क दिया था, उसका ही समर्थन करते हुए "भारतरत्न पांडुरंग वामन काणे" ने अपनी पुस्तक हिस्ट्री आफ धर्मशास्त्र (धर्मशास्त्र का इतिहास) में पृष्ठ ३३७ में लखते हैं :

"उत्तरी भारत एवं पूर्वी भारत में पर्दा की प्रथा जो सर्वसाधारण में पाई जाती है, उसका आरंभ मुसलमानों के आगमन से हुआ।

इसके तीन कारण थे-

हिन्दू स्त्रियों को सुरक्षा प्रदान करने की दृष्टि से।

वजेता शासकों की शैली का चाहे-अनचाहे तरीके से अनुसरण।

वपरीत परिस्थितियों के कारण स्त्रियों में बढ़ती अ शक्षा और मुस्लिम शासकों के राज में गरता स्तर।

इतिहास को आप छुपा नहीं सकते, इस वषय पर अनेको लेखको ने स्वतंत्रता से लखते हुए अपनी सहमति दी है, क्यों क मुस्लिम शासक और आक्रांता, इस देश में आक्रमण करते और पुरुषो को मारकर, उनकी स्त्रियों को उठा ले जाते तथा अरब आदि देशो में गुलाम दासी के तौर पर दो दो दिनार में बेच देते थे, ये तो इतिहास था, मगर इतिहास फर दुहरा गया, सीरिया में इस्लामी आतंकी संगठन ने यजीदी महिलाओ को निर्वस्त्र करके गली मोहल्ले में बोली लगाकर १०० डॉलर में बेचा, ये तो अभी हाल की ही खबर है, बिलकुल यही परिस्थिति मुग़ल काल में भी थी राजपुताना में मौजूद अनेको जौहर स्थल इसके साक्षात प्रमाण हैं। इतिहास साक्षी है, की मुस्लिमो की बादशाहत दौरान हिन्दू महिलाओ को अगवा कर बलात्कार कया जाता था, डॉ श्रीवास्तव अपनी पुस्तक अकबर द मुग़ल पृष्ठ ६३ में लखते हैं "when people Deosa and other places on Akbar's route fled away on his approach" अब यहाँ शंका ये है यदि राजा भारमल की पुत्री जोधा का ववाह वधु पक्ष की मर्जी से हुआ था तो अकबर के आने पर जनता भाग क्यों गयी ? जाहिर है, वो ववाह था ही नहीं, ये स्पष्ट है की अकबर ने राजा भारमल की पुत्री की सुंदरता के प्र सद्द कस्से सुने थे, इसी लए उसे पाने को राजा भारमल पर आक्रमण कया, यही हाल सती रानी दुर्गावती की कहानी का भी है, हालां क जौहर करने से दो महिलाये बच गयी थी एक दुर्गावती की बहन कमलावती और दूसरी राजा पुरंगद की बेटी थी जिन्हे अकबर के हरम में पंहुचा दिया गया था (जे एम शेलत, अकबर 1964)

अनेको इतिहा सक दस्तावेजो से ये सद्ध है की उत्तर भारतीय हिन्दू परिवारो में पर्दा प्रथा मौजूद नहीं थी, ये कुप्रथा हिन्दू समाज में मुस्लिम आक्रंताओ से हिन्दू महिलाओ को बचाने के लए अपनाया गया, नवाब वज़ीर लखनऊ का तत्कालीन नवाब सुन्दर हिन्दू महिलाओ को अगवा कर उनको प्रता ड़त कया करता था, और जबरन मुसलमान बनवाता था (इट इज कॉन्टिनुएड, अशोक पंत, पृष्ठ १३०)

औरंगजेब के समय तत्कालीन प्रधान मंत्री का नवासा मर्ज़ा तवाख्खुर ने हिन्दुओ की दुकानो को नष्ट कया और हिन्दू महिलाओ को अगवा कर बलात्कार कया (India & South East Asia to 1800 सांडर्सन बेक)

औरंगजेब के समय तत्कालीन प्रधान मंत्री का नवासा मर्ज़ा तवाख्खुर ने घनश्याम जो नव वाहित वधु को डोली में बैठा कर घर ला रहा था, उसे अपने घर के गेट के सामने ही लूट लया, २ हिन्दू मार दिए गए और घनश्याम की पत्नी को मर्ज़ा तवाख्खुर अपने घर ले गया (Ahkam-i-Alamgiri)

The Afghan ruler Ahmad Shah Abdali attacked India in 1757 AD and made his way to the holy Hindu city of Mathura, the Bethlehem of the Hindus and birthplace ofKrishna.

The atrocities that followed are recorded in the contemporary chronicle called : 'Tarikh-I-Alamgiri' :

"Abdali's soldiers would be paid 5 Rupees (a sizeable amount at the time) for every enemy head brought in. Every horseman had loaded up all his horses with the plundered property, and atop of it rode the girl-captives and the slaves. The severed heads were tied up in rugs like bundles of grain and placed on the heads of the captives…Then the heads were stuck upon lances and taken to the gate of the chief minister for payment.

"It was an extraordinary display! Daily did this manner of slaughter and plundering proceed. And at night the shrieks of the women captives who were being raped, deafened the ears of the people…All those heads that had been cut off were built into pillars, and the captive men upon whose heads those bloody bundles had been brought in, were made to grind corn, and then their heads too were cut off. These things went on all the way to the city of Agra, nor was any part of the country spared."

कतने ही प्रमाण दिए जा सकते हैं, जो सद्ध करते हैं, की हिन्दू महिलाओ पर मुस्लिम आक्रंताओ द्वारा कतना अत्याचार कया गया, की इससे हमारी सभ्यता और संस्कृति में अनेको परिवर्तन आ गए। जिनमे मुख्य रूप से :

पर्दा कुप्रथा का भारतीय महिलाओ द्वारा अपनाना मुख्य है।
बाल ववाह, ता क हिन्दू महिलाओ को शोषण से बचा सके।
सती प्रथा, ये जौहर का परिणाम था जिसे स्वेच्छा से अपनाया जाने लगा ता क मृत हिन्दू पति के बाद हिन्दू महिला की आबरू बच सके।

इसके अतरिक्त सतीशचंद गुप्ता से पूछना चाहेंगे की, जो पर्दा प्रथा हा लया हिन्दू समाज में पायी जाती है, वह केवल घूंघट या सर पर पल्लू रख कर दे ख जाती है, ले कन जो पर्दा प्रथा का समर्थन आक्षेपकर्ता ने कया वो बुरखा है, वो कसी भी लहाज से घूँघट का कार्य तो करता नहीं, फर बुरखा की बराबरी घूँघट से करना मान सक दिवा लयापन ही है। क्यों क हा लया समय में हिन्दू समाज में घूँघट या सर पर पल्लू रखना एक नजरिये से देखे तो आदर सूचक ही लगता है जो बड़े बुजुर्गो के सम्मान हेतु रखते हैं, ले कन बुरखा घूँघट या पर्दा की बराबरी नहीं कर सकता, फर क्यों बराबर जोड़ा गया ?

अब हम इस लेख में ज्यादा तो अब नहीं लख सकते, क्यों क बड़ा हो जाएगा, अतः अब हम अगले लेख में देखेंगे, क :

बुरका प्रथा मुस्लिम समाज में कैसे आया ?

बुरखे की हानिया और आज का आतंकवाद

बुरखे से महिलाओ को होने वाली बीमारियां तथा बुरखे पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण

बुरखे के कारण मुस्लिम महिलाओ की स्थति

महिला वकास में अवरोधक बुरखा

और क्या बुरखा महिलाओ के प्रति छेड़ छाड़ और बलात्कार रोक पाता है ?

अगले लेख में।

आओ लौट चले वेदो की और।

नमस्ते

योगेश्वर श्री कृष्ण और १६ कलाएं तथा जन्माष्टमी

SEPTEMBER 5, 2015 2 COMMENTS

नमस्ते मत्रो,

५००० वर्ष और उससे भी पूर्व अनेको मनुष्य उत्पन्न हुए मगर इतिहास में याद केवल कुछ ही लोगो को कया जाता है, इतिहास में केवल उनके लए जगह होती है जो कुछ अनूठा करते हैं, कुछ लोग अपने द्वारा की गयी बुराई से अपना नाम इतिहास में दर्ज करवाते हैं, और कुछ अपने सदगुणो, सुलक्षणों और महान कर्तव्यों से अपना नाम अमर कर जाते हैं, क्यों क आज कृष्ण जैसा सुलक्षण नाम अपने पुत्र का तो कोई भी रखना चाहेगा, मगर रावण, कंस आदि दुर्गु णयो के नाम कोई भी अपने पुत्र का न रखना चाहेगा, इसी कारण कृष्ण अमर हैं, राम अमर हैं, हनुमान अमर हैं, मगर रावण, कंस आदि मृत हैं।

आर्यावर्त में उत्पन्न हुए अनेको ऐतिहा सक महापुरषो में से एक महापुरुष, ज्ञानी, वेदवेत्ता योगेश्वर श्री कृष्ण का आज ही के दिन जन्म हुआ था, इस दिन को आज जन्माष्टमी कहते हैं, क्यों क आज भाद्रपद मास की अष्टमी ति थ है, इसी दिन कृष्ण महाराज का जन्म हुआ था। इस लए इस दिन को जन्माष्टमी के नाम से जाना जाता है।

हमारे बहुत से बंधू कृष्ण महाराज को पूर्ण अवतारी पुरुष कहते हैं। यहाँ हम अवतार का अर्थ संक्षेप में बताना चाहेंगे, "अवतार का शाब्दिक अर्थ "जो ऊपर से नीचे आया" और "पूर्ण" "पुरुष" इस हेतु कहते हैं पूर्ण कहते हैं जो अधूरा न रहा, और पुरुष शब्द के दो अर्थ हैं :

1. पुरुष शब्द का अर्थ सामान्य जीव को कहते हैं जिसे आत्मा से सम्बोधन करते हैं।

2. पुरुष शब्द का प्रयोग परमात्मा के लए भी कया जाता है जिसने इस सम्पूर्ण ब्राह्मण की रचना, धारण और प्रलय आदि का पुरषार्थ कया और करता है।

हम सभी जीव जो इस धरती पर व अन्य लोको पर वचरण कर रहे वो सभी अवतारी हैं क्यों क हम सब ऊपर से ही नीचे आये क्यों क मरने के बाद हमारी आत्मा यमलोक (यम वायु का नाम है अतः वायुलोक यानी अंतरिक्ष में जाती है) तब नीचे आती है। और हम सभी अपनी आत्मा के उद्देश्य को पूर्ण नहीं कर पाते अर्थात मोक्ष को ग्रहण करने योग्य गुणों को धारण नहीं कर पाते और कुछ ही गुणों को आत्मसात कर पाते हैं। इस लए हम आवागमन के चक्र में फंसे रह जाते हैं। अतः इसी कारण हम अवतार होते हुए भी मृतप्राय रह जाते हैं अमर नहीं हो पाते।

अब हम आते हैं कृष्ण को १६ कलाओ से युक्त पूर्ण अवतारी क्यों कहते हैं यहाँ हमारे कुछ पौरा णक बंधू पहले इस तथ्य को भली भांति समझ लेवे की परमात्मा जो पुरुष है वह अनेको कलाओ और वद्याओ से पूर्ण है, जब क जीव पुरुष अल्पज्ञ होने से कुछ कलाओ में निपुण हो पाता है, यही एक बड़ा कारण है की जीव ईश्वर नहीं हो सकता। क्यों क जीव का दायित्व है की ईश्वर के गुणों को आत्मसात करे इसी लए कृष्ण महाराज ने योग और ध्यान माध्यम से ईश्वर के इन्ही १६ गुणों (कलाओ) को प्राप्त कया था इस कारण उन्हें १६ कला पूर्ण अवतारी पुरुष कहते हैं।

अब आप सोचेंगे ये १६ कलाएं कौन सी हैं, तो आपको बताते हैं, दे खये :

इच्छा, प्राण, श्रद्धा, पृथ्वी, जल अग्नि, वायु, आकाश, दशो इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मन्त्र, लोक और नाम इन सोलह के स्वामी को प्रजापति कहते हैं।

ये प्रश्नोपनिषद में प्रतिपादित है।

(शत० 4.4.5.6)

योगेश्वर कृष्ण ने योग और वद्या के माध्यम से इन १६ कलाओ को आत्मसात कर धर्म और देश की रक्षा की, आर्यवर्त के निवा सयों के लए वे महापुरष बन गए। ठीक वैसे ही जैसे उनसे पहले के अनेको महापुरषो ने देश धर्म और मनुष्य जाति की रक्षा की थी। क्यों क कृष्ण महाराज ने अपने उत्तम कर्मो और योग माध्यम से इन सभी १६ गुणों को आत्मसात कर आत्मा के उद्देश्य को पूर्ण कया इस ल लये उन्हें पूर्ण अवतारी पुरुष की संज्ञा अनेको वद्वानो ने दी, ले कन कालांतर में पौर णको ने इन्हे ईश्वर की ही संज्ञा दे दी जो बहुत ही

अब यहाँ हम सद्ध करते हैं की ईश्वर और जीव अलग अलग हैं दे खये :

यस्मान्न जातः परोअन्योास्ति या ववेश भुवनानि वश्वा।
प्रजापति प्रजया संरराणस्त्रिणी ज्योतीं ष सचते स षोडशी।

(यजुर्वेद अध्याय ८ मन्त्र ३६)

अर्थ : गृहाश्रम की इच्छा करने वाले पुरुषो को चाहिए की जो सर्वत्र व्याप्त, सब लोको का रचने और धारण करने वाला, दाता, न्यायकारी, सनातन अर्थात सदा ऐसा ही बना रहता है, सत, अ वनाशी, चैतन्य और आनंदमय, नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्तस्वभाव और सब पदार्थो से अलग रहने वाला, छोटे से छोटा, बड़े से बड़ा, सर्वशक्तिमान परमात्मा जिससे कोई भी पदार्थ उत्तम व जिसके सामान नहीं है, उसकी उपासना करे।

यहाँ मन्त्र में "सचते स षोडशी" पुरुष के लए आया है, पुरुष जीव और परमात्मा दोनों को ही सम्बोधन है और दोनों में ही १६ गुणों को धारण करने की शक्ति है, मगर ईश्वर में ये १६ गुण के साथ अनेको वद्याए यथा (त्री ण) तीन (ज्योतिषी) ज्योति अर्थात सूर्य, बिजली और अग्नि को (सचते) सब पदार्थो में स्था पत करता है। ये जीव पुरुष का कार्य कभी नहीं हो सकता न ही कभी जीव पुरुष कर सकता क्यों क जीव अल्पज्ञ और एकदेशी है जब क ईश्वर सर्वज्ञ और सर्वव्यापी है, इसी हेतु से जीव पुरुष को जो गृहाश्रम की इच्छा करने वाला हो, ईश्वर ने १६ कलाओ को आत्मसात कर मोक्ष प्राप्ति के लए वेद ज्ञान से प्रेरणा दी है, ता क वो जीव पुरुष उस परम पुरुष की उपासना करता रहे।

ठीक वैसे ही जैसे १६ कला पूर्ण अवतारी पुरुष योगेश्वर कृष्ण उस सत, अ वनाशी, चैतन्य और आनंदमय, नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्तस्वभाव और सब पदार्थो से अलग रहने वाला, छोटे से छोटा, बड़े से बड़ा, सर्वशक्तिमान, परम पुरुष परमात्मा की उपासना करते रहे।

आइये हम भी इन गुणों को अपना कर कृष्ण के सामान अपने को अमर कर जाए। हम १६ कला न भी अपना पाये तो भी वेद पाठी होकर कुछ उन्नति कर पाये।

आइये सत्य को अपनाये और असत्य त्याग कर कृष्ण के जन्मदिवस जन्माष्टमी का त्यौहार मनाये। आप सभी मत्रो, बंधुओ को योगेश्वर कृष्ण के जन्मदिवस जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनाये।

लौटिए वेदो की और।

नमस्ते।

नोट : अब स्वयं सो चये जो पुरुष (जीव) इन १६ कलाओ (गुणों) को योग माध्यम से प्राप्त कया क्या वो :

कभी रास रचा सकता है ?

क्या कभी गो पकाओं के साथ अश्लील कार्य कर सकता है ?

क्या कभी कुब्जा के साथ समागम कर सकता है ?

क्या अपनी पत्नी के अतिरिक्त कसी अन्य महिला से सम्बन्ध बना सकता है ?

क्या कभी अश्लीलता पूर्ण कार्य कर सकता है ?

नहीं, कभी नहीं, क्यों क जो इन कलाओ (गुणों) को आत्मसात कर ले तभी वो पूर्ण कहलायेगा और जो इन सोलह कलाओ को अपनाने के बाद भी ऐसे कार्य करे तो उसे निर्लज्ज पुरुष कहते हैं, पूर्ण अवतारी पुरुष नहीं।

इस लए कृष्ण का सच्चा स्वरुप देखे और अपने बच्चो को कृष्ण के जैसा वैदिक धर्मी बनाये।

योगेश्वर महाराज कृष्ण की जय।

धन्यवाद

रक्षाबंधन – स्वाध्याय द्वारा जीव और प्रकृति का रक्षण।

AUGUST 31, 2015 LEAVE A COMMENT

रक्षा बंधन, ये शब्द सुनते ही भाई और बहन का वो प वत्र रिश्ता आँखों के दिखना शुरू हो जाता है जो एक धागे से बंधा होता है।

इस दिन श्रावण मास की पूर्णमासी को ये धागा एक बहिन द्वारा अपने भाई की कलाई में बाँध कर भाई से अपनी रक्षा का वचन लेना बहन का कर्तव्य और भाई का अपनी बहन की रक्षा करने का वचन देना करने से ही पूर्ण हो जाता है ऐसा समझा जाता है, और इस कार्य की इतिश्री करके धागा बंधने से पूर्ण कर दिया जाता है। मगर क्या यही सनातन संस्कृति है ?

ऐसे अनेको प्रमाण मलते हैं की इस प्रकार का रक्षा बंधन सनातन संस्कृति नहीं है बल्कि ये एक ऐतिहा सक तथ्यों पर आधारित कार्य है। इसके पीछे जो ऐतिहा सक तथ्य है उनमे पौरा णक बंधू इन्हे प्रमुखता देते हैं :

1. द्रौपदी का कृष्ण की आकस्मिक अंगुली कटने पर साडी व दुपट्टा का टुकड़ा बाँध देना।

2. कुंती का अपने पौत्र अ भमन्यु को महाभारत युद्ध में कलाई पर रक्षा कवच बाँध देना।

3. पौरा णक दानी दैत्य राजा ब ल का रक्षा बंधन से रक्षा होना।

इन प्रमुख कारणों पर यदि ध्यान से देखा जाए तो भी ये रक्षा बंधन यानी बहन का भाई की कलाई पर राखी बांधना और रक्षा का वचन लेना सनातन संस्कृति सद्ध नहीं होती। क्यों क ये सभी ऐतिहा सक तथ्य हैं और ऐतिहा सक तथ्य कभी सनातन नहीं हो सकते हैं।

आ खर क्या कारण है की एक दिन के लए ही भाई अपनी बहन की रक्षा का वचन देता है ? क्या पुरे साल उसे याद दिलाते रहने के लए ?

मुझे तो नहीं लगता, ले कन यदि कुछ सालो पीछे जाये तो याद आएगा की हमारे देश में मुगलो का राज था जिसमे महिलाओ की अस्मत और आबरू खतरे में थी, मुझे ऐसा लगता है

की ये त्यौहार भाई बहन के लए उस समय ज्यादा प्रचलन में आया ता क सामाजिक तौर पर प्रत्येक हिन्दू जाती की महिला को सुरक्षा का भाव मले। केवल अपने भाई से ही नहीं वरन सभी पुरुषो से।

अब सवाल उठेगा की फर ये श्रावण मास की पू र्णमा को रक्षाबंधन क्यों मनाते हैं ? इसका जवाब हमें अपने भारतीय जनजीवन और भौगो लक परिस्थियों अनुरूप मलता है। दे खये हमारा देश कृ ष प्रधान राष्ट्र है, और कृ ष प्रधान राष्ट्र होने के नाते हमारे देश में कृषक समुदाय अ धक हैं या वो लोग जो कृ ष से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हैं। इस लए यदि आप ध्यान देवे तो आप पाएंगे की हमारे देश में आषाढ से लेकर सावन तक फ़सल की बुआई सम्पन्न हो जाती है। ये क्रम आज भी वैसा ही है जैसे पूर्व काल में होता था मगर बदला है आज का साधु समाज क्यों क वैदिक काल में ऋ ष-मुनि अरण्य में वर्षा की अ धकता के कारण गांव के निकट आकर रहने लगते थे। जो गाँव वालो को वेद धर्म की शक्षा देते थे। क्यों क इस समय कृषक समाज अपनी खेती आदि कार्यो से फारिग हो जाता था इस लए इस धा र्मक कृत्य में प्रमुखता से जुड़ता था जिससे देश और धर्म दोनों का ही कल्याण होता था। इसमें पारस्कर गृह सूत्र का प्रमाण है :

अथातोऽध्यायोपाकर्म। औष धनां प्रादुर्भावे श्रावण्यां पौर्णमासस्यम् “ (2/10/2-2)

इसके पीछे जो रहस्य है वो ऊपर बताने और समझाने का प्रयास कया है।

वर्षा ऋतु में वेद के पारायण का वशेष आयोजन इस लए भी कया जाता था क्यों क वर्षा के दौरान बीमारिया फ़ैलाने वाले जीवाणु अ धक उतपन्न होते हैं इस लए इनके निवारण हेतु यज्ञ अ धकमात्रा में होते थे जिसमे वशेष साम ग्रयाँ डाली जाती थी।

यही रक्षाबंधन था उस यज्ञ का और जीव का जिससे प्रकृति की रक्षा होती थी और इसी स्वाध्याय के आधार पर यज्ञ होते थे जिससे वर्षा ऋतु में उत्पन्न हुए अनेको वषाणुओं का जो गंभीर बीमारियां उत्पन्न करते थे उनसे यज्ञ द्वारा जीव और प्रकृति की रक्षा होती थी, स्वाध्याय करते हुए नित नए औष ध युक्त साम ग्रयों का निर्माण करना और यज्ञ करते हुए प्रकृति, कृ ष और जीव इनकी रक्षा करना यही बंधन को ऋ ष समझते थे, ज्ञान देते थे।

आज भी अनेको गुरुकुलों में पू र्णमा को गुरुकुलों में वद्या र्थयों का प्रवेश हुआ करता है। इस दिन को वशेष रुप से वद्यारंभ दिवस के रुप में मनाया जाता है। बटूकों का यज्ञोपवीत संस्कार भी कया जाता है। श्रावणी पू र्णमा को पुराने यज्ञोपवीत को धारण करके नए यज्ञोपवीत को धारण करने की परम्परा भी रही है।

भले ही इस प वत्र परंपरा को आज लोग भूल गए क्यों क वो वेदो से वमुख होकर अनार्ष ग्रंथो के अध्यन में रत हुए मगर ये भी सत्य है की पूरी तरह से सद्धांतो को न बदल पाये, मुगल काल में महिलाओ की रक्षा हेतु रक्षाबंधन का वचन देकर अपनी बहनो माताओ की रक्षण करना, यज्ञोपवीत धारण करना आदि अनेको भ्रान्तिया भी चली मगर सत्य सनातन वैदिक मत यही है की हम वेद और वज्ञानं आधारित बातो को माने क्यों क सत्य वही है।

केवल भाई बहन तक सीमित न रहकर, इस पवित्र त्यौहार को पुरे विश्व बंधुत्व की और ले जाए, अग्रसर हो इस पवित्र त्यौहार को वैदिक रीति से मनाने के लिए, क्योंकि ये केवल भाई बहन तक सीमित नहीं रखा जा सकता।

आइये लौटियो उसी सनातन संस्कृति की और, लौटिए उस विज्ञानं की और जो ऋषियों ने वेदो के द्रष्टा बनकर हमें दिया। आइये लौटियो वेदो की और।

नमस्ते।

आर्य और ईस्वी महीनो की तुलना – आर्य महीनो का वैज्ञानिक दृष्टिकोण

AUGUST 26, 2015 1 COMMENT

पाठकगण ! इस लेख द्वारा हम यूरोपीय (ईसाई) तथा पंचांगों की तुलना करना चाहते हैं और यह दिखाना चाहते हैं की आर्य पंचांग में विशेषता और गुण क्या हैं।

ये जानना आज इसलिए भी आवश्यक है की हमारे देश में एक ऐसी प्रजाति भी विकसित हो रही है जो ईसाइयो के अवैज्ञानिक और पाखंडरुपी चुंगल में फंसकर अपनी वैदिक संस्कृति जो पूर्ण वैज्ञानिक आधार पर है उसे नकार कर अन्धविश्वास में लिप्त होकर देश व धर्म का अहित करते जा रहे हैं।

देखिये जो हमारे आर्य महीनो के वैदिक आधार पर पंचांगानुसार नाम हैं वो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कितना उन्नत और व्यवस्थित रूप है जबकि ईसाइयो के महीनो का कच्चा चिटठा हम इस पोस्ट के माध्यम से रखेंगे। आशा है आप सत्य को जान असत्य को त्याग देंगे।

ईसाई महीनो के नाम :

जनवरी (January) : यह वर्ष का प्रथम मास (Astronomy) ज्योतिष है जिसे रोमननिवासियो ने एक देवता जेनस को समर्पित किया और उसके नाम पर महीने का नाम रखा। उनका विश्वास था की इस देवता के दो शीश (सर) थे, इसलिए यह दोनों और (आगे, पीछे) देख सकता था। यह देव आरम्भ देव था जिसको प्रत्येक काम के आरम्भ में मनाया जाता था। चूँकि जनवरी वर्ष का प्रथम मास है इसलिए इसका नाम जेनसदेव के नाम पर रखा गया।

फ़रवरी – प्रायश्चित का महीना।

मार्च – लड़ाई के देवता "मार्स" के नाम पर रखा गया।

अप्रैल – यह महीना जब पृथ्वी से नए नए पत्ते, कलियाँ और फल फूल उत्पन्न होते हैं। यह नाम उस महीने की ऋतु का द्योतक है।

मई – यह महीना प्रारंभक भाग। भावार्थ यह है की इस मास में ऋतु ऐसी शोभायमान होती है जैसे नवयुवक और नवयुववतिया।

जून – छठा महीना जो आरम्भ में केवल २६ दिन का होता था इसके नाम का शब्दार्थ छोटा महीना है। महाराज जू लयस सीज़र के समय से इस महीने की अव ध ३० दिन की मानने लगे हैं।

जुलाई : जू लयस सीज़र के नाम पर, जो इस महीने मैं पैदा हुआ था यह नाम रखा गया।

अगस्त : महाराज अगस्टस सीज़र के नाम पर यह नाम रखा गया। चूं क जू लयस सीज़र के नाम पर रखा जाने वाला जुलाई का महीना ३१ दिन का होता था और है, इस लए अगस्टस सीज़र ने अगस्त का महीना भी उतने ही अर्थात ३१ दिन का रखा। और यह महीना तब से ३१ दिन का चला आता है।

सतम्बर : शब्दार्थ सातवां महीना क्यों क रोमनिवासी अपना वर्ष मार्च से प्रारम्भ करते थे।

अक्तूबर : शब्दार्थ आठवां महीना। रोमनिवासीयो के अनुसार आठवां महीना।

नवम्बर : शब्दार्थ नवां महीना। रोमनिवासीयो के अनुसार नवां महीना।

दिसम्बर : शब्दार्थ दसवां महीना। रोमनिवा सयो के अनुसार दसवां महीना।

तो मेरे मत्रो ऊपर दिए शब्दार्थो से आपको वदित होगा की अंग्रेजी महीनो के कुछ के नाम देवताओ के नाम पर, कुछ के ऋतु के अनुसार, कुछ के महाराजाओ के नाम पर और शेष के क्रम के अनुसार नाम रखे गए हैं। यानी कोई वैज्ञानिक आधार इस अंग्रेजी वर्ष और उसके दिए महीनो में नहीं निकलता।

अब हम आपको आर्य महीनो के नाम जो वैदिक पंचाग व्यवस्थानुसार सम्पूर्ण वैज्ञानिक रीति पर आधारित हैं उनसे परिचय करवाते हैं।

इन आर्य महीनो के नामो के शब्दार्थ समझने से पहले हमें कुछ ज्योतिष सद्धांत समझ लेने चाहिए तभी इन महीनो का वैज्ञानिक आधार और नामो का शब्दार्थ पूर्ण रूप से समझ आएगा। पोस्ट बड़ी न हो इस लए थोड़ा ही समझाया जा रहा है।

1. आर्य ज्योतिष के अनुसार पृथ्वी सूर्य के चारो और एक अंडाकार वृत्त में ३६५-२४ दिन में घूमती है। यह अंडाकार मार्ग बारह भागो में वभाजित है और उन १२ भागो के नाम मेष, वृष, मथुन, कर्क, संह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन हैं। इन १२ भागो नाम भी १२ रा शयों के नाम से वख्यात हैं। इसी ज्योतिष गणना को यदि वस्तार से बतलाओ तो लेख बहुत लम्बा हो जाएगा इसके बारे में कसी अन्य पोस्ट पर वस्तार से बताया जाएगा।

जिस प्रकार पृथ्वी सूर्य के चारो और एक अंडाकार वृत्त में घूमती है। इसी प्रकार चन्द्रमा भी पृथ्वी के चारो और एक अंडाकार वृत्त में २७ दिन ८ घंटे में घूम आता है। इसका मार्ग २७

भागो में वभाजित है और प्रत्येक भाग को नक्षत्र कहते हैं। २७ नक्षत्रो के नाम इस प्रकार हैं :

1. अश्विनी 2. भरणी 3. कृ त्तका 4. रोहिणी 5. मृग शरा 6. आर्द्रा 7. पुनर्वसु 8. पुष्य ९. अश्लेषा 10. मघा 11. पूर्वाफाल्गुनी 12. उत्तराफाल्गुनी 13. हस्त 14. चत्रा 15. स्वाती 16. वशाखा 17. अनुराधा 18. ज्येष्ठा 19. मुल 20. पुर्वाषाढा 21. उत्तरषाढा 22. श्रवण 23. धनिष्ठा 24. शत भषा 25. पूर्वभाद्रपद 26. उत्तरभाद्रपद 27. रेवती

आज पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र है इसका अ भप्राय है की आज चन्द्रमा पृथ्वी के चारो और के मार्ग के पूर्वाषाढ़ा नामक भाग में है।

हम पृथ्वी पर रहने वाले हैं पृथ्वी के साथ साथ घुमते हैं। इस कारण हमको पृथ्वी स्थिर प्रतीत होती है और सूर्य तथा चन्द्रमा दोनों घुमते दिखते हैं।

जब सूर्य और चन्द्रमा के बीच में पृथ्वी होती है तो चन्द्रमा का वह अर्थ भाग जिस पर सूर्य का प्रकाश पड़ता है पृथ्वी की और होता है। इसी कारण ऐसी अवस्था में चन्द्रमा सम्पूर्ण प्रकाशवान दीखता है अतः पूर्णमासी को जब चन्द्रमा पूर्ण प्रका शत होता है, चन्द्रमा और सूर्य पृथ्वी के दोनों और उलटी दिशा में होते हैं।

आर्य महीनो के नाम नक्षत्रो के नाम पर रखे गए हैं। पूर्णमासी को जैसा नक्षत्र होता है उस महीने का नाम उसी नक्षत्र पर रखा गया है, क्यों क पू र्णमा को सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी के दोनों और उलटी दिशा में होते हैं।*

महीनो के नाम नक्षत्रानुसार इस प्रकार हैं :

1. चैत्र – चत्रा

2. वैशाख – वशाखा

3. ज्येष्ठ – ज्येष्ठा

4. आषाढ़ – पूर्वाषाढ़

5. श्रावण – श्रवण

6. भाद्रपद – पूर्वाभाद्रपद

7. आश्विन – अश्विनी

8. का र्तक – कृ त्तका

9. मार्ग शर – मृग शरा

१० पौष – पुष्य

11. माघ – मघा

12. फाल्गुन – उत्तरा फाल्गुन

इसी आधार पर हमें अंतरिक्ष में सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी आदि सभी ग्रहो की चाल, और अभी वो कस जगह स्थित हैं ये पूर्ण जानकारी इसी वज्ञानं के आधार पर मलती जाती है।

सर डब्ल्यू जोंस की यह भी सम्मति है की आर्यो के महीनो के नाम इत्यादि से पूरा पता लगता है की आर्य ज्योतिष अत्यंत पुरानी है। आर्यो में प्राचीन काल में वर्ष पौष मास से आरम्भ होता था जब दिन अत्यंत छोटा और रात अत्यंत बड़ी होती है। इसी कारण मार्ग शर मास का द्‌ वतीय नाम अग्रह्न्य था, जिसका अर्थ यह है की वह महीना जो वर्ष आरम्भ होने से पहले हो।

मेरे सभी हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई भाइयो से निवेदन है की वो इस अंग्रेजी महीने जो देवता, महाराज ऋतु इत्यादि के नाम पर रखे गए हैं त्याग देवे और अपने पूर्ण वज्ञानी रीति से जो आर्य महीने हैं उनकी प्रतिष्ठा को जान लेवे।

प्राचीन आर्य पुरुष ज्योतिष में अवश्य वशेष ज्ञान प्राप्त कर चुके थे और उनके ज्ञान के टूटे फूटे चन्ह ही आज तक आर्य समाज में पाये जाते हैं। क्या अच्छा हो यदि हम प्राचीन आर्य सभ्यता का मान करे और उसके बचे बचाये चन्हो से नयी नयी खोज कर समाज के सामने रखे जिससे देश व धर्म का कल्याण हो।

ये केवल संक्षेप में बताया गया फर भी इतनी बड़ी पोस्ट हो गयी, ले कन इसे नजरअंदाज न करे और वेद धर्म का प्रचार करे ता क हमारे अन्य हिन्दू भाई ईसाइयो के अन्ध वश्वास में न पड़े।

आओ लौटो वेदो की और

नमस्ते।

* इसमें सूर्य सद्धांत प्रमाण है :

भचक्रं भ्रमणं नित्यं नाक्षत्रं दिनमुच्यते।
नक्षत्र नाम्ना मासास्तु क्षेयाः पर्वान्त योगतः।

अर्थात दैनिक भचक्र का भ्रमण करना ही नाक्षत्रिक दिन है।

पू र्णमानता धष्ठित नक्षत्र के नाम से मास का नाम जानना चाहिए।

क्या ईश्वर सब कुछ कर सकता है? क्यों क उसे सर्वशक्तिमान् कहा गया है- आचार्य सोमदेव जी

AUGUST 26, 2015 LEAVE A COMMENT

ईश्वर के सर्वशक्तिमान् होने का अर्थ यह नहीं क वह कुछ भी करे वा सब कुछ करे तात्पर्य यह है क ईश्वर सब कुछ नहीं कर सकता। वह इस लए क्यों क वह शुद्ध प वत्र है। सर्वज्ञ है, सदा अपने नियमों का पालन करने वाला है।

इस वषय में मह र्ष दयानन्द प्रश्नोत्तर रूप से लखते हैं-

''प्रश्न- ईश्वर सर्वशक्तिमान् है वा नहीं? उत्तर– है, परन्तु जैसा तुम 'सर्वशक्तिमान्' शद का अर्थ जानते हो वैसा नहीं, कन्तु सर्वशक्तिमान् शद का यही अर्थ है क ईश्वर अपने काम अर्थात् उत्प त्त, पालन, प्रलय आदि और सब जीवों के पुण्य-पाप की यथायोग्य व्यवस्था करने में कं चत्ाी कसी की सहायता नहीं लेता अर्थात् अपने अनन्त सामर्थ्य से ही अपना सब काम पूर्ण कर लेता है।''

प्रश्न– हम तो ऐसा मानते हैं क ईश्वर जो चाहे सो करे, क्यों क उसके ऊपर दूसरा कोई नहीं?

उत्तर– वह क्या चाहता है? जो तुम कहो क सब कुछ चाहता और कर सकता है, तो हम तुमसे पूछते हैं क परमेश्वर अपने को मार, अनेक ईश्वर बना, स्वयं अ वद्वान् हो चोरी, व्या भचारादि पाप कर्म कर और दुःखी भी हो सकता है? जैसे ये काम ईश्वर के गुण कर्म-स्वभाव के वरुद्ध हैं, तो जो तुहारा कहना है क 'वह सब कुछ कर सकता है' यह कभी नही घट सकता, इस लए सर्वशक्तिमान् का अर्थ जो हमने कहा, वहीं ठीक है।

यहाँ पर मह र्ष की इन बातों से स्पष्ट है क ईश्वर अपने गुण-कर्म-स्वभाव के वरुद्ध काी कुछ नहीं करता, नहीं कर सकता।

अवैदिक मान्यता वाले पौरा णक अथवा कुरान, बाईबल वाले ईश्वर के सर्वशक्तिमान् होने का अर्थ वह करे न करे कुछ भी करे ऐसा मानते हैं। जब ईसाई, मुसलमान ईसामसीह या मुहमद साहब पर अपना इमान लाने की बात करते हैं तो उनका तात्पर्य यह होता है क पैगबर की सफारिश करने पर खुदा ईमानवालों के गुनाह माफ कर देता है, क्यों क वह जो चाहे कर कता है, वह गुनहगारों को माफ भी कर सकता है और बेगुनाहों को सजा भी दे सकता है इनकी मान्यता है क जब हम मामूली इंसान कसी की गलती को माफ कर सकते हैं तो हम से बड़ाादा क्यों नहीं कर सकता? वे यह नहीं समझते क ईश्वर का बड़प्पन कानून=सृष्टि के नियमों को तोड़नें में नहीं अ पतु स्वयं उनका पालन करने और अन्यों से कराने में है। यदि नियामक ही नियमों का उल्लंघन करने लगे तो वह नियामक ही कहाँ रहा?

इस लए परमेश्वर ने जो सृष्टि के आदि में सं वधान बना दिया, उसका उल्लंघन न स्वयं करता, कर सकता और न उसकी प्रजा करती, कर सकती । सृष्टि वपरीत परमात्मा कुछ भी नहीं करता, कर सकता। इस लए यह कहना सर्वथा असंगत है क ''ईश्वर सब कुछ कर सकता है क्यों क वह सर्वशक्तिमान् है।''

क्या ईश्वर संसार में कसी स्थान वशेष में, कसी काल वशेष में रहता है? क्या ईश्वर कसी जीव

वशेष को कसी समुदाय वशेष के कल्याण के लए और दुष्टों का नाश करने के लए भेजता है? – आचार्य सोमदेव जी

AUGUST 26, 2015 LEAVE A COMMENT

क्या ईश्वर संसार में कसी स्थान वशेष में, कसी काल वशेष में रहता है? क्या ईश्वर कसी जीव वशेष को कसी समुदाय वशेष के कल्याण के लए और दुष्टों का नाश करने के लए भेजता है?

ईश्वर इस संसार के स्थान वशेष वा काल वशेष में नहीं रहता परमेश्वर संसार के प्रत्येक स्थान में वद्यमान है। जो परमात्मा को एक स्थान वशेष पर मानते हैं वे बाल बुद्ध लोग हैं। वेद ने परमेश्वर को सर्वव्यापक कहा है। वेदानुकुल सभी शास्त्रों में परमात्मा को सर्वव्यापक कहा है। एक स्थान वशेष पर परमेश्वर को कोई सद्ध नहीं कर सकता , न ही शद प्रमाण और न ही युक्ति तर्क से। हाँ ईश्वर शद प्रमाण और युक्ति तर्क से वभु= सर्वत्र व्यापक तो सद्ध हो रहा है, हो सकता है। वेद में कहा-

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।

पादोऽस्य वश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दि व।।

– प. 31.3

इस पुरुष की इतनी महिमा है क यह सारा ब्रह्माण्ड परमेश्वर के एक अंश में है अर्थात् वह ईश्वर इस समस्त ब्रह्माण्ड में समाया हुआ अनन्त है, यह समस्त जगत् परमात्मा के एक भाग में है अन्य तीन भाग तो परमात्मा के अपने स्वरूप में प्रका शत हैं अर्थात् परमात्मा अनन्त है अर्थात् सर्वत्र वद्यमान है उसको कसी एक स्थान पर नहीं कह सकते।

नहि त्वा रोदसी उभे ऋघायमाण मन्वतः।

जेषः स्वर्वतीरपः सं गा अस्मयं धूनुहि।।

– ऋ. 1.10.8

इस मन्त्र के भावार्थ में मह र्ष लाते हैं – ''जब कोई पूछे क ईश्वर कतना बड़ा है तो उत्तर यह है क जिसको सब आकाश आदि बड़े-बड़े पदार्थ भी घेर में नहीं ला सकते, क्यों क वह अनन्त है। इससे सब मनुष्यों को उ चत है क उसी परमात्मा को सेवन उत्तम उत्तम कर्म करने और श्रेष्ठ पदार्थों की प्राप्ति के लए उसी से प्रार्थना करते रहें। जब जिसके गुण और कर्मों की गणना कोई नहीं कर सकता, तो कोई अंत पाने को समर्थ कैसे हो सकता है। और भी -''

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्ना वंर शुद्धमपापा वद्धम्।

क वर्मनीषी परिभूः स्वयभूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीश्यः समायः।।

– य. 40.8

इस मन्त्र में परमेश्वर को सब में व्याप्त कहा है, इस व्याप्ति से ज्ञात हो रहा है क परमात्मा कसी एक स्थान वशेष पर नहीं अ पतु सर्वत्र है। इस प्रकार परमेश्वर के सर्वत्र व्यापक स्वरूप को सद्ध करने के लए शास्त्र के हजारों प्रमाण दिये जा सकते हैं। कोईाी प्रमाण ऐसा उपलध नहीं होता जो परमात्मा को एकदेशीय सद्ध करता हो।

युक्ति से भी कोई परमात्मा को कसी स्थान वशेष पर सद्ध नहीं कर सकता। आज वज्ञान का युग है, वैज्ञानिकों ने समस्त पृ थवी, समुद्र, आकाश आदि को देख डाला है। जिन कन्हीं का भगवान् समुद्र, पहाड़ आकाश आदि में होता तो अब तक वह भगवान् वैज्ञानिकों के हाथ में होता। जो लोग ईश्वर को ऊपर सातवें वा चौथे आसमान अथवा इससे कहीं और ऊपर मानते हैं वे यह सद्ध नहीं कर सकते क कौनसा ऊपर, कौनसा आसमान। क्यों क प्रमाण सद्ध यह पृ थवी गोल है। इस गोल पृ थवी के लगभग चारों और मानव आदि प्राणी रहते हैं।

जो मनुष्य भारत में रहते हैं अर्थात् पृ थवी के ऊपरी भाग पर रहते हैं उनका आसमान उनके शर के ऊपर और जो मनुष्य अमेरिका आदि देशों में है अर्थात् पृ थवी के निचलााग में रहते हैं उनका आकाश (आसमान) भारत आदि देश में रहने वालों की अपेक्षा वपरीत होगा अर्थात् भारत वालों को पैरों में आकाश होगा ऐसा ही पृ थवी के अन्य स्थानों पर रहने वाले मनुष्य का आकाश जाने । पृ थवी के चारों ओर आकाश है, आसमान है, पृ थवी पर रहने वाले मनुष्यों के शर जिस ओर होंगे उनका आसमान उसी ओर होगा। ऐसा वचार करने पर जो परमात्मा को आसमान में मानते हैं वे भी एक स्थान वशेष पर सद्ध नहीं कर सकते। इस वचार से भी परमात्मा सर्वत्र ही सद्ध होगा। इस लए परमात्मा सब स्थानों पर वद्यमान है न क कसी एक स्थान वशेष पर।

स्थान वशेष की कल्पना ब्रह्माकुमारी मत वालों की भी है। उनका कहना है क यदि ईश्वर को सर्वव्यापक मानते हैं तो ईश्वर गन्दगी में शौच आदि मेंाी होगा। यदि ऐसा होगा तो ईश्वराी गन्दा हो जायेगा। इन ब्रह्माकुमारी बाल बुद् ध वालों ने ईश्वर को कतना कमजोर बना दिया क जो ईश्वर सदा प वत्र रहने वाला है, इन ब्रह्माकुमारी वालों का ईश्वर गन्दगी से गन्दा हो जाता है। इनको यह नहीं पता क यह गन्दगी भौतिक है और ईश्वर अभौतिक। परमेश्वर के अभौतिक ओर सदा प वत्र होने से परमेश्वर के ऊपर इस गंदगी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। हमारे ऊपर भी जो प्रभाव पड़ता है वह इस लये क्यों क हमारे पास भौतिक शरीर इन्द्रियाँ आदि हैं, इनसे रहित होने पर हम जीवात्माओं पर भी उस गंदगी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ईश्वर तो सर्वथा इनसे रहित है तो ईश्वर पर इस गंदगी का प्रभाव कैसे पड़ेगा। इस लए म लनता से बचाने के लए ईश्वर को एक स्थान वशेष पर मानना मूर्खता ही है।

इसी प्रकार ईश्वर कसी काल वशेष में होता हो ऐसा नहीं है, परमेश्वर तो सदा सभी कालों में वर्तमान रहता है। काल वशेष में होने की कल्पना अवतारवादी कर सकते हैं, जो क उनकी यह मान्यता सर्वथा असंगत है। वर्तमान, भूत, भ वष्यत काल की आवश्यकता हम जीवों की

अपेक्षा से है। परमेश्वर के लए तो सदा वर्तमान रहता है, भूत भ वष्य परमात्मा के लए नहीं है। परमात्मा सदा एक रस रहता है।

परमात्मा कसी जीव वशेष को कसी समुदाय वशेष की रक्षा वा दुष्टों के नाश के लए भेजता हो ऐसा नहीं है। यह कल्पना भी अवतारवादियों की है। परमात्मा तो जीवों के कर्मानुसार उनको जन्म देता है। जो जीव वशेष संस्कार युक्त होता हैं वे जगत् के कल्याण और दुष्टों के नाश में प्रवृत्त होते हैं। ऐसा करने पर परमात्मा उनको आनन्द उत्साह आदि प्रदान करता है। कन्तु ऐसा कदा प नहीं है क परमात्मा ने कसी जीव वशेष को इस कार्य में लगााया है यदि ऐसा मानेंगे तो जीव की स्वतन्त्रता न रहेगी। ऐसा मानने पर सद्धान्त की हानि होगी। कर्म फल व्यवस्था की सद् ध ठीक से न हो पायेगी। कसी समुदाय की रक्षा करे तो दोष का भागी हो जायेगा क्यों क ऐसा कदा प नहीं हो सकता क पूरे समुदाय में सभी लोग एक जैसे धर्मात्मा हों, उस समुदाय में उलटे लोग भी हो सकते हैं। समुदाय में होने से उनकी भी रक्षा करनी पड़ेगी तो न्याय न हो सकेगा। जब क परमेश्वर न्याय कारी है उसके द्वारा भेजी गई आत्मा को भी न्याय करना चाहिए जो क वह कर न सकेगी।

अ धकतर लोगों की मान्यता है क परमेश्वर कसी आत्मा को न भेजकर स्वयं अवतार लेते हैं । ऐसा करके परमात्मा सज्जनों की रक्षा और दुर्जनों का नाश करते हैं। इस प्रकार की यह मान्यता भी ईश्वर के स्वरूप से वपरीत तथा वेद-शास्त्र के प्रतिकूल है। क्यों क ईश्वर वभु है, अनन्त है, वह अनन्त प्रभु एक छोटे से शान्त शरीर में कैसे आ सकता है? परमेश्वर जन्म मरण से परे है फर शरीर में आकर जन्म-मृत्यु को कैसे प्राप्त कर सकता है? परमेश्वर का अवतार मानने पर इस प्रकार की अनेक दोषयुक्त बातों को मानाना पड़ेगा।

अवतारवादियों का अवतार मानने का मुय आधार ये दो श्लोक हैं-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अयुत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजायहम्।।

परित्राणाय साधूनां वनाशाय च दुष्कृताम्।

धर्मसंस्थापनार्थाय संभवा म युगे युगे।।

इन श्लोकों में अवतार लेने का कारण क जब-जब धर्म की हानि होगी तब-तब धर्म के उत्थान और अर्धा के नाश के लए तथा श्रेष्ठों के परित्राण =रक्षा और दुष्टों के नाश के लए अवतार लेता है। अब यहाँ वचारणीय यह है क जिस परमात्मा ने बिना शरीर के इस सब ब्रह्माण्ड को रच डाला, हम सब प्रा णयों के शरीरों की रचना की है, उस परमात्मा को कुछ क्षुद्र, दुष्ट व्यक्तियों को मारने के लए शरीर धारण करना पड़े यह बात बुद् धग्राह्य नहीं है। इससे तो ईश्वर का ईश्वरत्व न रहकर ईश्वर का बहुत लघुत्व सद्ध हो रहा है। यदि परमात्मा को यही करना है तो वह इस प्रकार के कार्य बिना शरीर के भी कर सकता है क्यों क वह पूर्ण समर्थ है। अस्तु

इन उपरोक्त गीता के श्लोकों में अवतार का कारण हमने देखा अब देवी भागवत पुराण में अवतार लेने का कारण दे खये कया लखा –

शपा म त्वां दुराचारं कमन्यत् प्रकरो मते।

वध्ुारोहं कृतः पाप त्वयाऽहं शापकारणात्।।

अवतारा मृत्युलोके सन्तु मच्छापसंभवाः।

प्रापो गर्भभवं दुःख भुक्ष्व पापाज्जनार्दन।।

इन देवी भागवत के श्लोकों में अवतार का कारण धर्म की रक्षा वा अधर्म के नाश करने के लए नहीं कहा अपितु भृगु का शाप कहा है। अर्थात् मह ष भृगु ने वष्णु को उसके दुराचार कर्म के कारण शाप दिया उनके शाप के प्राव से वष्णु का मृत्य ुलोक में अवतार हुआ। गीता के और देवी भागवत पुराण में अवतार के कारणों में परस्पर वरोध है। और दे खये-

बौद्धरूपस्त्वयं जातः कलौ प्राप्ते भयानके।

वेदधर्मपरायन् वप्रान् मोहयामास वीर्यवान्।

निर्वेदा कर्मरहितास्त्रवर्णा तामासान्तरे ।।

यहाँ गीता से सर्वथा वपरीत अवतार का कारण कहा है। गीता धर्म की रक्षा कारण कहती है और यहाँ तो धर्म के नाश के लए अतवार ले लया, अर्थात् भागवत पुराण कहता है- भगवान ने बुद्ध का अवतार लेकर, सबको वरुद्ध उपदेश देकर नास्तिक बनाया तथा वेद मार्ग का नाश कया। यहाँ ये अवतारवादियों के ग्रन्थ परस्पर वरुद्ध कथन कर रहे हैं।

यथार्थ में तो ईश्वर के कसी भी रूप में जन्म धारण करने की कल्पना ही युक्ति व शास्त्र वरुद्ध है। क्यों क ईश्वर को कसी भी प्रकार के सहारे की आवश्यकता नहीं, चाहे वह सहारा कसी शरीर का हो अथवा कसी अन्य प्राणी का। परमेश्वर अपने सब कार्य करने में समर्थ है, उसको कोई अवतार लेने की आवश्यकता नहीं है।

वेद में ईश्वर को ''अकायमव्रणमस्ना वरम्'' कहा है। वह परमात्मा सूक्ष्म और स्थूल शरीर के बन्धन से रहित है अर्थात् इन बन्धन में नहीं पड़ता। श्वेताश्वतर उपनिषद् मेंॠ ष ने कहा-

वेदाहमेतमजरं पुराणं सर्वात्मानं सर्वगतं वभुत्वात्।

जन्मनिरोधं प्रवदन्ति यस्य ब्रह्मवादिनो हिप्रवदन्ति नित्यम्।।

– 4.21

अर्थात् वह परमात्मा अजर है, पुरातन (सनातन) है, सर्वान्तर्यामी है, वा ु और नित्य है। ब्रह्मवादी सदा उसका बखान करते हैं वह कभी जन्म नहीं लेता।

उपरोक्त सभी प्रमाणों से सद्ध हो रहा है क परमात्मा जीव के कर्मानुसार उसके भोग के लए शरीर स्थान, समुदाय आदि देता है न क अपनी इच्छा से कसी का नाश वा रक्षा के लए उसको भेजता है और ऐसे ही स्वयं भी अवतार लेकर कुछ नहीं करता अर्थात् स्वयं शरीर धारण करके कसी की रक्षा वा नाश नहीं करता।

इतिहास प्रदूषक वदु ष ले खका बहन फरहाना ताज "पार्ट – २"

AUGUST 10, 2015 6 COMMENTS

अं गरा ऋ ष के वषय में मत्स्य पुराण, भागवत, वायु पुराण महाभारत और भारतवर्षीय प्राचीन ऐतिहा सक कोष में वर्णन कया गया है।

मत्स्य पुराण में अं गरा ऋ ष की उत्प त्त अग्नि से कही गई है।

भागवत का कथन है क अं गरा जी ब्रह्मा के मुख से यज्ञ हेतु उत्पन्न हुए।

महाभारत अनु पर्व अध्याय 83 में कहा गया है क अग्नि से महा यशस्वी अं गरा भृगु आदि प्रजापति ब्रह्मदेव है।

भार्गववंश की मान्यतानुसार मह र्ष भृगु का जन्म प्रचेता ब्रह्मा की पत्नी वीरणी के गर्भ से हुआ था। अपनी माता से सहोदर ये दो भाई थे। इनके बडे भाई का नाम
अं गरा था।

ब्रह्मपुराण अध्याय – ३४ मे ऋ ष अं गरा को वषमबुद् ध से पढ़ाने वाला गुरु अर्थात शष्यो मे भेदभाव कर पढ़ाने वाला बताया है

इसके अतिरिक्त अं गरा ऋ ष को शवपुराण मे लोभी लालची आदि बताया है

आप सोच रहे होगे मै ये सब क्यो बता रहा हूं ?

इस लए बता रहा हूं क आर्यो के ऋ ष सद्धांतो को बदलने की गहरी साजिश चल रही है वेदो मे इतिहास सद्ध करने का षडयंत्र रचा जा रहा है यकीन नही ?

फरहाना ताज जी जैसी वदु ष ले खका का पोस्ट पढ़े वो ये साबित करने की फराक मे नजर आती है क कैलाश के राजा शंकर और हृदय मे वेद ज्ञान प्रकाश पाने वाले ऋ षयो मे एक ऋ ष अं गरा एक ही है

इनकी लेखनी यही नही रुकी इसके आगे इन्होने और लखते हुए जोर डाला क शव की पूजा करनी है मतलब सच्चे शव की तो अं गरा ऋ ष को पूजो यही नही हमारी बहन फरहाना ताज जी लखती है :
"अरे भोले लोगो देवो के देव आदि महादेव की ही पूजा करनी है तो अं गरा की पूजा

करो, शवपुराण में भी शव का आदि नाम अंगरा ही है और अंगरा के मुख से परमात्मा की वाणी अथर्ववेद प्रकट हुआ, इस लए वेद पढ़ो।"

मतलब समझ आया ?

हम देवो के देव महादेव यानी ईश्वर की बात करते है क्यो क महादेव ईश्वर को ही संबोधन है हम उन्ही की उपासना करते है मगर हमारी बहन शायद हमारे सद्धांतो पर चोट करके उन्हे बदल कर हमे ईश्वर के स्थान पर मनुष्य की पूजा करवाना सखाना चाह रही है ले कन भूल गई हिन्दू समाज मे भी मुर्दापूजा निकृष्ट है आप उन्हे सच्चाई बताने की जगह एक मुर्दापूजा से निकाल दूसरी मुर्दापूजा मे दा खला दिलवा रही हो जैसे आर्य समाज मे अंगरा ऋ ष को शव घो षत कर वेदो मे इतिहास साबित करना चाहती हो

ऋ ष अंगरा और शव को एक बताने से पहले शवपुराण पर ही सही से दृष्टि डाल ली होती है, क्यों क शवपुराण में ही शव की शादी के चक्कर में अंगरा ऋ ष को लालची और लोभी बताया है,

क्या आप लोभी और लालची व्यक्ति को शव या अंगरा मान सकती हो ? ऊपर और भी प्रमाण दिए हैं की पुराणो में ऋ ष अंगरा का चरित्र कैसा दिखाया है – यदि आपने पुराण ही मानने हैं तो कृपया ऋ ष सद्धांतो पर चलने वाली स्वयं की उदघोषणा न करे क्यों क ऋ ष ने महापुरषो के चरित्र पर दाग लगाने वाले पुराणो को त्याज्य बताया है और यहाँ ऋ ष अंगरा के चरित्र पर भी पुराण आक्षेप लगा रहे हैं, बेहतर है आप अपने लेख को ठीक करे।

मेरी बहन आर्य समाज सद्धांत पर आधारित है कृपया अप्रमा णक तथ्यहीन और मनगढंत बात लखने से पूर्व एक बार ऋ ष के सद्धांत और उनके महान कर्मो पर दृष्टि जरूर डाले

हो सके तो सत्य को स्वीकार कर असत्य को त्याग दे

नमस्ते

इतिहास प्रदूषक "फरहाना ताज"

AUGUST 7, 2015 37 COMMENTS

आर्य समाज में प्र क्षप्त और झूठी बातो का प्रचार असहनीय है
…………………………………………………………………………………………………
…..

फरहाना ताज जी की बहुत सी पोस्ट देखी – बहुत से मत्र बंधू इन पोस्ट्स को व्हाट्सप्प पर प्रसारित भी करते हैं – कुछ चीज़े वैदिक संप त्त पुस्तक से उद्धृत हैं और कुछ इनके अपने दिमाग की उपज है –

जो वैदिक संप त्त से उद्धृत है वो ठीक लगता है मगर जो इनके अपने दिमाग की उपज (व्याख्या) है वो गड़बड़ झाला है – आर्य समाज को बदनाम न करे – आपकी बहुत सी पोस्ट

पर कमेंट कया पर आपने आजतक जवाब नहीं दिया – ये बहुत ही खेद का वषय है – कृपया समझे –

1. आपकी पुस्तक "घर वापसी" में आपने अपने पति को आर्य समाजी बताया – मगर वही आर्य समाजी बंधू एक्सीडेंट के बाद पौरा णक बन जाता है ? ऐसा क्यों ?

क्या आप इसे मानती हैं ? यदि हाँ तो आप अंध वश्वास और चमत्कार वाली झूठी बातो का समर्थन करती हैं जो आर्य समाज के सद्धांत वरुद्ध है। कृपया स्पष्टीकरण देवे।

2. हनुमान जी – एक ऐसा वीर, धर्मात्मा, श्रेष्ठ पुरुष जिसका रामायण में बहुत उत्तम चरित्र है जो रामायण में पूर्ण ब्रह्मचारी पुरुष है। मह र्ष दयानंद भी हनुमान जी के ब्रह्मचर्य से पूर्ण सहमत थे। फर आपने ऐसे महावीर हनुमान को गृहस्थ घो षत कर दिया वो भी बिना कोई प्रमाण ?

केवल द क्षण के मंदिरो को देखकर ही आपको लग गया की हनुमान जी ब्रह्मचारी नहीं गृहस्थ थे ? ऐसा मंदिर तो दिल्ली के भैरो मंदिर में भी देख लेती वहां भी हनुमान जी के चरित्र को दू षत कया गया है जैसे आप द क्षण के मंदिरो को प्रमाण मान कर एक पूर्ण ब्रह्मचारी को गृहस्थ घो षत करकर ? यदि वहां के मंदिरो को देखकर ही आपको सद्ध हो गया की हनुमान जी गृहस्थ ही हैं तो वहां के मंदिरो में तो हनुमान जी बन्दर स्वरुप भी दर्शाया गया होगा तब उन्हें क्यों नहीं मान लेती ?

3. आपने अपनी एक पोस्ट में कहीं लखा था की ऋ ष अं गरा ही शव थे – जो कैलाश के राजा हुए – तो मेरी बहन मैं आप से कुछ पूछना चाहता हु –

यदि ऋ ष अं गरा ही शव थे जो कैलाश के राजा हुए तो इसका मतलब बाकी के बचे तीन ऋ ष भी कुछ न कुछ होंगे ? मतलब वो भी कहीं के राजा हुए होंगे ? यानी वो वेद ज्ञान प्राप्त कर राजा हो गये ? फर उन्होंने वो ज्ञान अन्य मनुष्यो को कैसे सुनाया होगा ? क्यों क ये वेद श्रुति हैं।

यदि फर भी मानो तो एक बात बताओ – हमारा इतिहास यही बताता है की इस धरती का पहला राजा "स्वयाय्मभव मनु" महाराज थे – और इसी बात को मह र्ष दयानंद भी बता गए। अब मुझे आप बताओ यदि "स्वयाय्मभव मनु" पहले राजा थे तो अं गरा ऋ ष इनसे पहले हुए होंगे क्यों क उन्हें वेद ज्ञान प्रका शत हुआ – तो वो आप शव कल्पना कर कैलाश का राजा बना दिया – तो "स्वयाय्मभव मनु" पहले राजा कैसे हुए ?

कृपया अभी इन ३ के जवाब ही दे देवे – बाकी की आपकी अनेको पोस्ट्स पर जो आप त्त है उनका भी निराकरण आपसे अवश्य मांगेंगे।

नोट : आपसे निवेदन है कृपया आर्य समाज के सद्धांतो और नियमो को भली प्रकार समझ कर तब सत्य और असत्य निष्कर्ष निकालकर पोस्ट लखा करे। हिन्दू समाज वैसे ही बहुत से अंध वश्वासों में डूबा है – अब आर्य समाज को भी अन्ध वश्वास की दलदल न बनाये।

नमस्ते।

क्या ध्यान बोद्धो की देन है वैदिक धर्म की

AUGUST 1, 2015 LEAVE A COMMENT

नव्बोद्ध अक्सर ये प्रचार करते है क ध्यान नामक पद्धति बोद्धो ने वैदिक ध र्मयों को दी थी |ओर बोद्धो से ध्यान सनातन मत में गया |
ले कन ये लोग यह बात भूल जाते है क सद्धार्थ गौतम की ही जीवनी में उन्होने सनातनी गुरुओ से ही ओर सन्या सयों से वन में योग वद्या सीखी थी ओर जंगल में जा कर सद्धार्थ ने ध्यान कया यह बात सभी मानते है यदि वो स्वयम ही आ वष्कारक होता तो उसे पूर्व निश्चय केसे हुआ की जंगल में ध्यान करने जाऊँगा ?इससे स्पष्ट है क ध्यान सद्धार्थ से पूर्व था इस लए उसने पहले ही ध्यान करने का निश्चय ही कया था |अब आते है पतंजली ने क्या बोद्धो से योग वद्या सीखी ?
इस भ्रम का कारण है क ये लोग योग सूत्रकार पतंजली ओर महाभाष्यकार पतंजली को एक ही समझ बेठे है जब क महाभाष्यकार पतंजली शंकु कालीन थे ओर योगसूत्र कार महाभारत के समय के या इसके पूर्व के है |यदि महाभाष्यकार ओर योग सूत्रकार को एक मानने पर निम्न समस्या आती है जिसका समाधान कोई भी नवबोद्ध नही कर सकते है वो यह की पतंजली योगसूत्र पर बादरायण व्यास का भाष्य है |ओर बादरायण व्यास महाभारत वाले व्यास कृष्णद्वेपायान है |यदि पतंजली को शंकु वंश वाला पतंजली माना जाए तो यह कैसे सम्भव है क महाभारत काल का व्यक्ति शंकु काल में भाष्य लख जाए |इससे स्पष्ट है क पतंजली व्यास से भी पूर्व के है |ओर व्यास बुद्ध से पूर्व इस प्रमाण से सद्ध है की सनातन धर्म में ध्यान –योग बोद्ध मत से भी पूर्व था |
ये बात योग दर्शन की हुई ले कन वेद , उपनिषद , ओर सांख्य ,न्याय दर्शन बोद्ध दर्शन ओर बुद्ध से पूर्व के है ओर न्याय दर्शन सांख्य दर्शन बुद्ध से पुराना है इसे कई बोद्ध वद्वान ओर डाक्टर अम्बेडकर भी मानते है उनकी पुस्तक बुद्धा एंड हिज धम्म के बुद्ध ओर उनके पूर्वज नामक अध्याय में देख सकते है |
अब कुछ प्रमाण उपरोक्त ग्रंथो से जिनसे सद्ध होगा की ध्यान आदि बोद्धो से पूर्व हमारे दर्शनों में था –
देखे न्याय दर्शन –
" तदर्थ यमनियमाभ्यामात्मसंस्कारों योगाच्चाध्यात्म वध्युपाये: ||४६||"
उस मोक्ष प्राप्ति के लए यम नियम योग (ध्यान आदि) तथा अध्यात्मशास्त्र के उपायों से आत्मा का संस्कार करना चाहिय|- न्याय दर्शन ४/२/४६
देखे सांख्य दर्शन से –
"भावनोपचयाच्छुध्दस्य सर्व प्रक्रतिवत्" ||२९ ||
शुद्धांत करण योगी समा ध भावना की अत्युकृष्ट योगज शक्ति के कारण वह सब कुछ कर सकता है जो प्रक्रति नियम अनुकूल हो |
" रागोंपहतिर्ध्यानम "||३०||
संसार में आसक्ति इन्द्रिय भोगो में प्रवृति का नाम राग है |इस राग की निवति ध्यान है ,मन का स्थिर होना है |
धारणासनस्वकर्मणा तत्सिद् ध: ||३१||"
वृतियो के निरोध से ध्यान की सद् ध होती है |
सांख्य के इतने प्रमाण ही देना ठीक है अन्यथा ३/२३-३६ तक सूत्र ध्यान पर ही प्रकाश डालते

है |
अब उपनिषद से दे खये –
“श्वेताश्वतर उपनिषद में योग के लाभ बताते हुए लखा है –
पहले शारीरिक उपलब्धी लखी है –
“लघुत्वमारोग्य .... प्रथमा वदन्ति ‖२/१३ ‖”
योग में प्रवृति का पहला फल यह है क योगी का शरीर हल्का हो जाता है |निरोगी हो जाता है | वषयों की लालसा मट जाती है ,कान्ति बढ़ जाती है ,स्वर मधुर हो जाता है |शरीर से सुगंध निकलता है ,मल मूत्र अल्प हो जाता है अर्थात भोजन ठीक से पचता है |
फर आत्मिक उपलब्धि बताते है –
“यथैव बिम्ब ....वीतशोकः ‖२/१४ ‖”
जैसे मटटी से लत पत स्वर्ण पंड खूब धोने पर तेजोमय होकर चमकने लगता है , इसी प्रकार देह योगी भीतर प्रकाशमान आत्म तत्व को देख लेता है ओर इस संसार में कृतार्थ ओरन वीत शोक हो जाता है |
इस उपनिषद में योग प्राणायाम की व ध है जिसे इसी २ अध्याय में पढ़ा जा सकता है अन्य उपनिषद जेसे छान्दोग्य आदि में उपासना आदि वषयों में प्रणव का ध्यान है |
अब वेदों में योग वद्या के मन्त्र भी लखते है –
उपहरे गरीणा संगथे च नदीनाम |
धया वप्रो अजायत ‖- ऋग्वेद ८/६/२८ ‖
पहाडो की गुफाओं में ओर नदियों के संगम पर ध्यान करने से वप्र बनते है |
योगे योगे तवस्तर वाजे हवामहे |
सखाय इंद्रमूतये ‖ यजु ११/१४ ‖
बार बार योगाभ्यास करते ओर मान सक शारीरिक बल बढाते समय हम सब परस्पर मत्रभाव से युक्त होकर अपनी रक्षा के लए अनन्त बलवान ऐश्वर्यशाली ईश्वर का ध्यान करते है |
ध्यान की परम्परा या इनका आ धप्रवर्तक सनातन धर्म में मह्रिषी ब्रह्मा ओर मह्रिषी हिरण्यगर्भ माने जाते है इन्होने वेदों से योग का प्रचार कया था महाभारत में आता है –
सांख्यस्य वक्ता क पलः परमऋ ष स उच्यते |
हिरण्यगर्भो योगस्य वेत्ता नान्यः पुरातनः ‖- मा. भा. शा. २४९/६५
इसी तरह हिरण्यगर्भ ऋ ष का नाम योगी याज्ञवल्क्य स्मृति में भी है –
हिरण्यगर्भो योगस्य वक्ता नान्यः पुरातनः| – यो. याज्ञ. १२/५
इन सब प्रमाणों से स्पष्ट है क बुद्ध से पूर्व सनातन धर्म में था |बोद्धो से सनातन में योग नही गया था बल्कि असल में बुद्ध ने जेसे आज के नये नये पोंगे पोप , व भन्न सम्प्रदायों के पाखंडी अपने अनुसार वैदिक ध्यान पद्धति से हट कर व भन्न तरह की ध्यान पद्धति बना लेते है वेसे ही बुद्ध ने बनाई |हालकी गौतम बुद्ध ने भी ये वपसना (आन अपानस्याति) स्वयम की नही बताया बल्कि अपने पूर्ववर्ती बौद्ध भगवान दीपांकर की बताया है |सम्भवतय इस पद्धति का आ वष्कार केसे हुआ यह खोज का वषय है ले कन ये ध्यान की सही पद्धति नही है न ही ये योग है योग में प्राणयाम नामक एक अंग प्राणयाम का भी अल्प भाग है या उसके समान है |जिसमे बस श्वासों पर ही नियन्त्रण कया जाता है |जहा तक मेरा वचार है बुद्ध ने योग को केवल श्वासों का नियन्त्रण ही समझा होगा ओर ये पद्धति दी क्यूं क जब कोई ईश्वर के ध्यान में मग्न होता है तब स्वतः ही उसकी श्वास ऐसी हो जाती है क मानो वह श्वास न ले रहा है न छोड़ रहा है |जिसे व्यान भी कहते है

यह स्थति ध्यान के वक्त बन जाती है जेसा छान्दोग्योपनिषद् में कहा है – " अतो ……………हेतोवर्यानमेंवोद्गीथमुपासते ॥१/३/५॥
इसमें उद्गीत उपासना में श्वास – प्रश्वास का नियन्त्रण हो कर व्यान अवस्था का उलेख है | व्यान की स्थति में ओमकार का ध्यान (उपासना) का वर्णन है |
ध्यान की इस स्थति को देख बुद्ध ने मात्र श्वास प्रश्वास के नियन्त्रण के लए श्वासों पर ध्यान रख ऐसी स्थति लाने की व ध बताई जहा श्वास ओर वचारों से आदमी शून्य हो जाये |क्यू क बुद्ध की नजर में ध्यान शून्य होना ही है |एक तरह से व्यक्ति को जड जेसा बनाना है जब क इसके वपरीत योगदर्शन में व्यक्ति को ज्ञान ,मोक्ष कराना वैदिक ध्यान पद्धति का उद्देश्य है | वपसना पद्धति की असफलता के बारे में जान्ने के लए हमारी पछली पोस्ट वपसना पद्धति पर आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक के प्रश्न अवश्य देखे |
यहा हम कह सकते है क योग ध्यान भारतीय ऋ षयों में बुद्ध से पूर्व प्रच लत था बुद्ध ने तो बस एक वपसना पद्धति की ही खोज की थी |योग को बोद्धो से वैदिक धर्म में प्रवेश बताना मात्र नवबोद्धो(वामसेफ) की जलन ओर सनातन धर्म के प्रति कुंठित मान सकता का कारण है |
संध र्भत ग्रन्थ एवम पुस्तके –
(१) योगदर्शन – व्याख्याकार उदयवीर शास्त्री जी
(२)योगदर्शन व्यास भाष्य सहित – व्याख्याकार सत्यपति जी
(३) एकादशोपनिषद – सत्यव्रत सद्धन्तलन्कार
(४) वेद रहस्य – नारायण स्वामी
(५) षडदर्शन – स्वामी जगदीश्वरानंद

रामायण में व र्णत लक्ष्मण रेखा का मथक – सुलक्षण रेखा की सच्चाई

AUGUST 1, 2015 2 COMMENTS

हमारे महान भारत में पहले अनेको ऋ ष, मह र्ष, ज्ञानी, वद्वतजन होते थे जो धर्म, ग्रन्थ और इतिहास का अतिसूक्ष्म निरिक्षण करकर सत्य असत्य से जनता को सदैव परि चत करवाते रहते थे। कालांतर में ये पद्धति मृतप्राय हो गयी और अनेको मूर्खो, लालची, लोभी, कुसं गयो द्वारा धर्म और इतिहास वषयक सामग्री में मलावट की जाने लगी। जहाँ मलावट संभव नहीं हो सकती थी वहां मलावट के स्थान पर लोकोक्ति के माध्यम से मथ्या जाल प्रपंच रचा गया।

इस आर्यावर्त में दुर्भाग्य से वद्वानो की कमी होने के कारण सत्य असत्य का निर्धारण करने के ठेका ढोंगी, कपटी, चालाक, तथाक थत स्वयंभू धर्म के ठेकेदारो ने ले लया। फर तो मौज बन आई। महापुरषो को बदनाम कया जाने लगा। सत्य इतिहास को बदनाम कया गया। द्रौपदी का चीरहरण, हनुमान जी बन्दर स्वरुप, ब्रह्मा जी के ४ सर आदि अनेको मथ्या कपोलकल्पित कथाये प्रचारित की जाने लगी। भारतीय जनमानस अपने ही इतिहास से रुष्ट होकर ईसाई, मुसलमान आदि पथभ्रष्ट होना स्वेच्छा से स्वीकार करने लगे। क्यों क वो अपनी बुद् ध से ऐसे इतिहास को अपनाना नहीं चाहते थे। ऐसे ही एक कथा रामायण में जोड़ी गयी :

लक्ष्मण रेखा

जो महानुभाव लक्ष्मण ने सीता माता की रक्षा हेतु खेंची थी। ले कन ये पौरा णक मथ्या ज्ञान बांटने वाले कभी ये नहीं बताते की यदि ये रेखा वाकई लक्ष्मण जी ने खेंची थी तो फर सीता माता का अपहरण कैसे हो गया ?

आइये एक नजर वाल्मी क रामायण पर डालते हैं और इस मथ्या कपोलकल्पित लोकोक्ति का सत्य जानते हैं :

रामायण जैसा महाकाव्य ऋ ष वाल्मी क ने लखा है। ये महाकाव्य इतना अनूठा है की आने वाले समय के अनेको क वयों ने भी इस महाकाव्य पर अपनी अपनी पुस्तके लखी। ले कन हमें ये ध्यान रखना चाहिए की रामायण वषय पर प्रमा णकता केवल वाल्मी क ऋ ष द्वारा र चत वाल्मी क रामायण की ही होती है। दे खये ऋ ष वाल्मी क क्या लखते हैं :

श्री राम जब मृग रूप में मारीच को पकड़ने जाते हैं और मृग (मारीच) श्री लक्ष्मण को श्री राम की आवाज़ में पुकारता है तब माता सीता द्वारा मा र्मक वचन कहे जाने पर श्री लक्ष्मण अपशकुन उपस्थित देखकर माता सीता को सम्बो धत करते हुए कहते हैं –

"रक्षन्तु त्वाम…पुनरागतः "
[श्लोक-३४,अरण्य काण्ड , पञ्च चत्वा वंशः]

अर्थात - वशाललोचने ! वन के सम्पूर्ण देवता आपकी रक्षा करें क्यों क इस समय मेरे सामने बड़े भयंकर अपशकुन प्रकट हो रहे हैं उन्होंने मुझे संशय में डाल दिया है . क्या मैं श्री रामचंद्र जी के साथ लौटकर पुनः आपको कुशल देख सकूंगा ?"

माता सीता लक्ष्मण जी के ऐसे वचन सुनकर व्य थत हो जाती हैं और प्रतिज्ञा करती हैं क श्रीराम से बिछड़ जाने पर वे नदी में डूबकर ,गले में फांसी लगाकर ,पर्वत- शखर से कूदकर या तीव्र वष पान कर ,अग्नि में प्रवेश कर प्राणान्त कर लेंगी पर 'पर-पुरुष' का स्पर्श नहीं करेंगी .
[श्लोक-३६-३७ ,उपरोक्त]

माता सीता की प्रतिज्ञा सुन व् उन्हें आर्त होकर रोती देख लक्ष्मण जी ने मन ही मन उन्हें सांत्वना दी और झुककर प्रणाम कर बारम्बार उन्हें देखते श्रीरामचंद्र जी के पास चल दिए .[श्लोक-39-40] .

स्पष्ट है इस पुरे प्रकरण में कहीं भी लक्ष्मण जी ने कोई रेखा नहीं खींची। यहाँ तर्क दृष्टि से देखा जाये तो भी "लक्ष्मण रेखा" से सम्बन्ध प्रतीत नहीं होता क्यों क यदि एक लक्ष्मण रेखा से ही माता सीता की सुरक्षा हो सकती थी तो प्रभु राम लक्ष्मण को साथ क्यों नहीं ले गए ?

या फर दूसरा तर्क ये है जो श्री राम ने लक्ष्मण जी को निर्देश दिया :

"प्रद क्षणेनाती ….शङ् कतः '
[श्लोक-५१ ,अरण्य काण्ड ,त्रिचत्वा रिनशः] –

"लक्ष्मण ! बुद् धमान गृद्धराज जटायु बड़े ही बलवान और सामर्थ्यशाली हैं .उनके साथ ही यहाँ सदा सावधान रहना . म थलेशकुमारी को अपने संरक्षण में लेकर प्रतिक्षण सब दिशाओं में रहने वाले राक्षसों की और चैकन्ने रहना ."

यहाँ भी श्रीराम लक्ष्मण जी को यह निर्देश नहीं देते क यदि कसी परिस्थिति में तुम सीता की रक्षा में अक्षम हो जाओ तो रेखा खींचकर सीता की सुरक्षा सुनिश्चित कर देना.

तीसरा तर्क भी देखे : यदि कोई रेखा खींचकर माता सीता की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती थी तो लक्षमण माता सीता को मा र्मक वचन बोलने हेतु ववश ही क्यों करते .वे श्री राम पर संकट आया देख-सुन रेखा खेंचकर तुरंत श्री राम के समीप चले जाते।

अतः वाल्मी क रामायण में तो लक्ष्मण रेखा का कोई औ चत्य नहीं बनता। आइये अब जो अन्य रामायण के संस्करण मलते हैं उन्हें देखे :

श्री वेदव्यास जी द्वारा र चत "अध्यात्म रामायण' में भी 'सीता-हरण' प्रसंग के अंतर्गत लक्ष्मण जी द्वारा कसी रेखा के खींचे जाने का कोई वर्णन नहीं है .माता सीता द्वारा लक्ष्मण जी को जब कठोर वचन कहे जाते हैं तब लक्ष्मण जी दुखी हो जाते हैं –

'इत्युक्त्वा .... भक्षुवेषधृक् "

[श्लोक-३५-३७,पृष्ठ -१२७]

"ऐसा कहकर वे (सीता जी) अपनी भुजाओं से छाती पीटती हुई रोने लगी .उनके ऐसे कठोर शब्द सुनकर लक्ष्मण अति दु खत हो अपने दोनों कान मूँद लए और कहा -'हे चंडी ! तुम्हे धक्कार है ,तुम मुझे ऐसी बातें कह रही हो .इससे तुम नष्ट हो जाओगी ." ऐसा कह लक्ष्मण जी सीता को वनदे वयों को सौपकर दुःख से अत्यंत खन्न हो धीरे-धीरे राम के पास चले .इसी समय मौका समझकर रावण भक्षु का वेश बना दंड-कमण्डलु के सहित सीता के पास आया ." यहाँ कहीं भी लक्ष्मण जी न तो रेखा खींचते हैं और न ही माता सीता को उसे न लांघने की चेतावनी देते हैं .

हालां क ये प्रामा णक ग्रन्थ मैं नहीं मानता। और नाही लक्षमण जी ऐसे आर्य थे जो ऐसे वचन सीता जी को बोलते न ही सीता जी ने ऐसे लक्षण दिखाए होंगे। फर भी यहाँ लक्ष्मण रेखा का सद्धांत नहीं पाया जाता न ही कसी लक्ष्मण रेखा से सीता जी की सुरक्षा संभव थी क्यों क इस रामायण में लक्ष्मण जी सीता माता को वनदे वयो को सौंपकर चले जाते हैं।

अब अन्य रामायण से जुडे ग्रंथो पर वचार करते हैं। एक मान्य ग्रन्थ आज हिन्दू समाज में वाल्मी क रामायण से भी ज्यादा प्रच लत है वो है तुलसीदास जी कृत रामचरितमानस। ले कन खेद की इस ग्रन्थ में भी लक्षमण रेखा का ववरण प्राप्त न हो सका।

अरण्य-काण्ड में सीता -हरण के प्रसंग में सीता जी द्वारा लक्ष्मण जी को मर्म-वचन कहे जाने पर लक्ष्मण जी उन्हें वन और दिशाओं आदि को सौपकर वहाँ से चले जाते हैं –

"मरम वचन जब सीता बोला , हरी प्रेरित लछिमन मन डोला !
बन दि स देव सौपी सब काहू ,चले जहाँ रावण स स राहु !"

[पृष्ठ-५८७ अरण्य काण्ड]

लक्ष्मण जी द्वारा कोई रेखा खीचे जाने और उसे न लांघने का कोई निर्देश यहाँ उल्लि खत नहीं है।

अब जब कहीं भी लक्ष्मण रेखा का उल्लेख कसी मान्य ग्रन्थ में नहीं तब क्यों और कैसे ये लक्ष्मण रेखा रामायण से जुड़ कर प्रच लत हुई ?

आइये एक वचार इसपर भी रखते हैं :

लक्ष्मण -रेखा का अर्थ कोई पंचवटी में कुटिया के द्वार पर खींची गयी रेखा नहीं बल्कि प्रत्येक नर-नारी के लए ऋ षयों द्वारा बनाये नियम और निर्धारित आदर्श लक्षणों से प्रतीत होता है। यह नारी-मात्र के लए ही नहीं वरन सम्पूर्ण मानव जाति के लए आवश्यक है क वप त्त-काल में वह धैर्य बनाये रखे कन्तु माता सीता श्रीराम के प्रति अगाध प्रेम के कारण मारीच द्वारा बनायीं गयी श्रीराम की आवाज से भ्र मत हो गयी। माता सीता ने न केवल श्री राम द्वारा लक्ष्मण जी को दी गयी आज्ञा के उल्लंघन हेतु लक्ष्मण को ववश कया बल्कि पुत्र भाव से माता सीता की रक्षा कर रहे लक्ष्मण जी को मर्म वचन भी बोले। माता सीता ने उस क्षण अपने स्वाभा वक व् शास्त्र सम्मत लक्षणों, धैर्य, वनम्रता के वपरीत सच्चरित्र व् श्री राम आज्ञा का पालन करने में तत्पर देवर श्री लक्ष्मण को जो क्रोध में मा र्मक वचन कहे उसे ही माता सीता द्वारा सुलक्षण की रेखा का उल्लंघन कहा जाये तो उ चत होगा। माता सीता स्वयं स्वीकार करती हैं –

"हा लक्ष्मण तुम्हार नहीं दोसा ,सो फलु पायउँ कीन्हेउँ रोसा !" [पृष्ठ-५८८ ,अरण्य काण्ड]

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं क लक्ष्मण रेखा को सीता-हरण के सन्दर्भ में उल्लि खत कर स्त्री के मर्यादित आचरण-मात्र से न जोड़कर देखा जाये। यह समस्त मानव-जाति के लए निर्धारित सुलक्षणों की एक सीमा है जिसको पार करने पर मानव-मात्र को दण्डित होना ही पड़ता है।

तुलसीदास जी के शब्दों में –
"मोह मूल मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ "

इस आर्यावर्त में एक ऋ ष ने सत्य का ज्ञान सूर्य उदय कया। ऋ ष ने सभी झूठे तथ्यों और आधारहीन घटनाओ को सरे से ख़ारिज कया। आज आर्य समाज इसी ऋ ष कार्य के सद्धांत को आगे बढ़ा रहा है। हमें चाहिए हम सत्य को जानकार असत्य को दूर फेक देवे।

आओ लौटो सत्य की और – लौटो न्याय और ज्ञान की और

आओ लौटो वेदो की और

नमस्ते।

वेदो का वज्ञानं मानवमात्र के लए

JULY 28, 2015 1 COMMENT

।। ओ३म ।।

अयं त इध्म आत्मा जातवेदः।

“हे अग्ने ! तेरे लए सबसे पहला ईंधन “अयं आत्मा” – अर्थात यह यजमान – स्वयं है।”

वेदो का वज्ञानं मानवमात्र के लए :

क्षयरोग (TB – Tuberculosis) से बचाव और उपचार करता है यज्ञ।

सूर्य का प्रकाश मनुष्य के लए वैसे भी लाभदायक है। इससे शरीर में वटा मन डी बनता है, जिससे हड् डयां पुष्ट होती हैं। उदय और अस्त होने वाले सूर्य की करणे तो और भी अ धक गुणकारी होती हैं।

उद्यन्नादित्यः क्र महन्तु निम्रोचन्हन्तु रश्मि भः।
ये अन्तः क्रमयो ग व।।

(अथर्ववेद २।३२।१)

“उदय होता हुआ और अस्त होने वाला सूर्य अपनी करणों से भू म और शरीर में रहने वाले रोगजनक कीटो का नाश करता है।”

सूर्य का प्रकाश कृ मनाशक है। रोबर्ट काउच ने सन १८९० में अनेको प्रयोगो द्वारा यह सद्ध कया की क्षयरोग (फेफड़ो के क्षयरोग को छोड़कर) के कीटाणु इस प्रकाश में दस मनट से अ धक समय तक जी वत जी वत नहीं रह सकते। इस लए क्षयरोग से ग्रस्त व्यक्ति को धुप सेकनी चाहिए।

संभवतः जनसाधारण में इसको यह कहकर मान्यता प्रदान की जाती है की अँधेरे में क्षयरोग फूलता फलता है तथा प्रकाश में यह दम दबाकर भाग जाता है।

अतः यज्ञ के लए सूर्योदय के पश्चात तथा सूर्यास्त से पूर्व का समय ही ठीक है।

आधुनिक वज्ञानं के अनुसार सूर्य की धुप क्षयरोग के लए बचाव और उपचार दोनों है

http://www.dailymail.co.uk/…/Sunshine-vitamin-helps-treat-p…

अब इस समय पर यज्ञ करना लाभदायक ही होगा क्यों क यज्ञ में प्रयुक्त होने वाली सामग्री में मुख्य रूप से गौघृत, खांड अथवा शक्कर, मुनक्का, कश मश आदि सूखे फल जिनमे शक्कर अ धक होती है, चावल, केसर और कपूर आदि के संतु लत मश्रण से बनी होती है।

अब इस वषय पर कुछ वैज्ञानिको के वचार :

१. फ्रांस के वज्ञानवेत्ता ट्रिलवर्ट कहते हैं : जलती हुई शक्कर में वायु – शुद्ध करने की बहुत बड़ी शक्ति होती है। इससे क्षय, चेचक, हैजा आदि रोग तुरंत नष्ट हो जाते हैं।

२. डॉक्टर एम टैल्ट्र ने मुनक्का, कश मश आदि सूखे फलो को जलाकर देखा है। वे इस निर्णय पर पहुंचे हैं की इनके धुंए में टायफाइड ज्वर के रोगकीट केवल तीस मनट तथा दूसरी व्या धयों के रोगाणु घंटे – दो घंटे में मर जाते हैं।

३. प्लेग के दिनों में अब भी गंधक जलाई जाती है, क्यों क इसमें रोगकीट नष्ट होते हैं। अंग्रेजी शासनकाल में डाकटर करनल कंग, आई एम एस, मद्रास के सेनेटरी क मश्नर थे। उनके समय में वहां प्लेग फ़ैल गया। तब १५ मार्च १८९८ को मद्रास वश्व वद्यालय के वद्या र्थयों के समक्ष भाषण देते हुए उन्होंने कहा था – "घी और चावल में केसर मलकर अग्नि में जलाने से प्लेग से बचा जा सकता है।" इस भाषण का सार श्री हैफ कन ने "ब्यूबॉनिक प्लेग" नामक पुस्तक मे देते हुए लखा है, "हवन करना लाभदायक और बुद् धमत्ता की बात है।"

मह र्ष दयानंद ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लखा है :

"जब तक इस होम करने का प्रचार रहा ये तब तक ये आर्यवर्त देश रोगो से रहित और सुखो से पूरित था अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाए।"

(स. प्र. तृतीय समुल्लास)

यहाँ ऋ ष इसी वज्ञानं को समझाने की को शश कर रहे हैं जो आज का आधुनिक वज्ञानं मानता है।

कृपया यज्ञ करे – राष्ट्र और पर्यावण को सुखी बनाये

आओ लौटो वेदो की और।

नमस्ते

नोट : इस पोस्ट की कुछ सामग्री "यज्ञ वमर्श" पुस्तक से उद्धृत है।

क व और कबीर का भेद – रामपाल के पाखंड का खंडन।

JULY 28, 2015 4 COMMENTS

।। ओ३म ।।

अग्निनाग्निः स मध्यते क वर्गृहपतिर्युवा।
हव्यवावाड्जुह्वास्यः।।

(ऋग्वेद 1.12.6)

प्रथमाश्रम में अपने में ज्ञान को स मद्ध करते हुए हम द् वतीयाश्रम में उत्तम गृहपति बने। वानप्रस्थ बनकर यज्ञो का वहन करते हुए तुरियाश्रम में ज्ञान का प्रसार करने वाले बने।

नमस्ते मत्रो – आज का वषय

क व और कबीर का भेद – रामपाल के पाखंड का खंडन।

वेदो में प्रयुक्त क व शब्द एक अलंकार है – कसी प्राणी का नाम नहीं, क्यों क वद्याओ के सूक्ष्म तत्वों के दृष्टा, को क व कहते हैं – इस कारण ये अलंकार ऋ षयों के लए भी प्रयुक्त होता है और समस्त वद्या (वेदो का ज्ञान) देने वाला ईश्वर भी अलंकार रूप से क व नाम पुकारा जा सकता है।

क्यों क ये एक अलंकार है इससे कसी व्यक्ति प्राणी का नाम समझना एक भूल है – वसंगति है – मगर बहुत से रामपा लये चेले चपाटे अपनी मूर्खता में ये काम करने से भी बाज़ नहीं आते उन्हें कुछ शास्त्रोक्त प्रमाण दिए जाते हैं –

क व शब्द की व्युत्प त्त : क वः शब्द 'कु-शब्दे' (अदादि) धातु से 'अच इः' (उणादि 4.139) सूत्र से 'इः' प्रत्यय लगने से बनता है। इसकी निरुक्ति है :

'क्रांतदर्शनाः क्रांतप्रज्ञा वा वद्वांसः (ऋ० द० ऋ० भू०)

"क वः क्रांतदर्शनो भवति" (निरुक्त 12.13)

इस प्रकार वद्याओ के सूक्ष्म तत्वों का दृष्टा, बहुश्रुत ऋ ष व्यक्ति क व होता है।

इसे "अनुचान" भी इस प्रसंग में कहा है [2.129] ब्राह्मणो में भी क व के इस अर्थ पर प्रकाश डाला है –

"ये वा अनूचानास्ते कवयः" (ऐ० 2.2)

"एते वै काव्यो यदृश्यः" (श० 1.4.2.8)

"ये वद्वांसस्ते कवयः" (7.2.2.4)

शुश्रुवांसो वै कवयः (तै० 3.2.2.3)

अतः इन प्रमाणों से सद्ध हुआ की वेदो में प्रयुक्त "क व" शब्द एक अलंकार है – जहाँ जहाँ भी जिस जिस वेद मन्त्र में क व शब्द प्रयुक्त हुआ है उसका अर्थ अलंकार से ही लेना उ चत

होगा, बाकी मूढ लोगो को बुद्‌ध तो खुद "कबीर" भी ना दे पाये दे खये कबीर ने अपने ग्रंथो में क्या लखा है :

कबीर जी परमात्मा को सर्वव्यापक मानते हैं। कबीर जी के कुछ वचन देखे :

स्वयं संत कबीर दास जी ने भी ईश्वर को सर्वव्यापक माना है। (गुरु ग्रन्थ पृष्ठ 855)

कहु कबीर मेरे माधवा तू सरब बिआपी ॥
सरब बिआपी = सर्वव्यापी
कबीर जी कह रहे हैं की हे मेरे परमात्मा तू सर्वव्यापी है।

तुम समसरि नाही दइआलु मोहि समसरि पापी॥

तुम्हारे सामान कोई दयालु नहीं है, और मेरे सामान कोई पापी नहीं है।

कबीर जी ब्रह्म का अर्थ परमात्मा लेते है काल नहीं
कबीरा मनु सीतलु भइआ पाइआ ब्रहम गआनु ॥ (गुरु ग्रन्थ पृष्ठ 1373)

ब्रहम बिंदु ते सभ उतपाती ॥१॥

सभी की उत्प त्त ब्रह्म अर्थात ईश्वर से होती है। (गुरु ग्रन्थ पृष्ठ 324)

अब जब कबीर जी भी ईश्वर अर्थात ब्रह्म से सभी की उत्प त्त मानते हैं ऐसा लखते भी हैं तब ये रामपाल और उसके चेले कबीर जैसे संत की वाणी को झूठा क्यों सद्‌ध करते फरते हैं की कबीर परमात्मा हैं ?

क्या ये धूर्तता और ढोंग पाखंड नहीं ?

क्या कबीर जैसे संत की वाणी को दू षत करना और संत कबीर को ईश्वर कहना क्या संत कबीर के शब्दों और दोहो का अपमान नहीं ?

आशा है सभ्य समाज इस लेख के माध्यम से रामपा लये और उसके चेलो के पाखंड का वरोध करेंगे और बुद्‌धमान व्यक्ति इस पोस्ट के माध्यम से अपने वचार रखेंगे।

लौटो वेदो की और।

नमस्ते

अनवर जमाल साहब की पुस्तक "दयानंद जी ने क्या खोया क्या पाया" के प्रतिउत्तर में :

JULY 28, 2015 11 COMMENTS

।। ओ३म ।।जनाब अनवर जमाल साहब ऋ ष के ज्ञान और वेद के वज्ञानं पर शंका उत्पन्न करते हुए लखते हैं :

यदि दयानन्द जी की अ वद्या रूपी गांठ ही नहीं कट पायी थी और वह परमेश्वर के सामीप्य से वं चत ही रहकर चल बसे थे तो वह परमेश्वर की वाणी `वेद´ को भी सही ढंग से न समझ पाये होंगे? उदाहरणार्थ, दयानन्दजी एक वेदमन्त्र का अर्थ समझाते हुए कहते हैं-
`इसी लए ईश्वर ने नक्षत्रलोकों के समीप चन्द्रमा को स्था पत कया।´ (ऋग्वेदादि0, पृष्ठ 107)
(17) परमेश्वर ने चन्द्रमा को पृथ्वी के पास और नक्षत्रलोकों से बहुत दूर स्था पत कया है, यह बात परमेश्वर भी जानता है और आधुनिक मनुष्य भी। फर परमेश्वर वेद में ऐसी सत्य वरूद्ध बात क्यों कहेगा?
इससे यह सद्ध होता है क या तो वेद ईश्वरीय वचन नहीं है या फर इस वेदमन्त्र का अर्थ कुछ और रहा होगा और स्वामीजी ने अपनी कल्पना के अनुसार इसका यह अर्थ निकाल लया । इसकी पुष्टि एक दूसरे प्रमाण से भी होती है, जहाँ दयानन्दजी ने यह तक कल्पना कर डाली क सूर्य, चन्द्र और नक्षत्रादि सब पर मनुष्यदि गुज़र बसर कर रहे हैं और वहाँ भी वेदों का पठन-पाठन और यज्ञ हवन, सब कुछ कया जा रहा है और अपनी कल्पना की पुष्टि में ऋग्वेद (मं0 10, सू0 190) का प्रमाण भी दिया है-
`जब पृ थवी के समान सूर्य, चन्द्र और नक्षत्र वसु हैं पश्चात उनमें इसी प्रकार प्रजा के होने में क्या सन्देह? और जैसे परमेश्वर का यह छोटा सा लोक मनुश्यादि सृष्टि से भरा हुआ है तो क्या ये सब लोक शून्य होंगे? (सत्यार्थ., अश्टम. पृ. 156)
(18) क्या यह मानना सही है क ईश्वरोक्त वेद व सब वद्याओं को यथावत जानने वाले ऋ ष द्वारा र चत साहित्य के अनुसार सूर्य व चन्द्रमा आदि पर मनुष्य आबाद हैं और वो घर-दुकान और खेत ख लहान में अपने-अपने काम धंधे अंजाम दे रहे हैं?

समीक्षा : अब हमारे जनाब अनवर जमाल साहब कुरान के इल्म से बाहर निकले तो कुछ ज्ञान वज्ञानं को समझे पर क्या करे अल्लाह मया ने क़ुरान में ऐसा ज्ञान नाज़िल कया की जमाल साहब उसे पढ़कर ही खुद आ लम हो गए। दे खये जमाल साहब ऋ ष ने क्या कहा और उसका अर्थ क्या निकलता है :

ऋ ष ने लखा :

`इसी लए ईश्वर ने नक्षत्रलोकों के समीप चन्द्रमा को स्था पत कया।´ (ऋग्वेदादि0, पृष्ठ 107)

अब इसका फलसफा और वज्ञानं देखो – ऋ ष को वेदो से जो ज्ञान और वज्ञानं मला वो इन जमाल साहब को नजर नहीं आएगा –

आकाश में तारा-समूह को नक्षत्र कहते हैं। साधारणतः यह चन्द्रमा के पथ से जुडे हैं, पर वास्तव में कसी भी तारा-समूह को नक्षत्र कहना उ चत है।

ऋ ष का अर्थ है क्यों क चन्द्रमा नक्षत्रो के पथ से जुड़ा है इस लए अलंकार रूप में वहां लखा है की नक्षत्रलोको के समीप चन्द्रमा को स्था पत कया –

अब इसका वैज्ञानिक प्रभाव देखो :

तारे हमारे सौर जगत् के भीतर नहीं है। ये सूर्य से बहुत दूर हैं और सूर्य की परिक्रमा न करने के कारण स्थिर जान पड़ते हैं—अर्थात् एक तारा दूसरे तारे से जिस ओर और जितनी दूर आज देखा जायगा उसी ओर और उतनी ही दूर पर सदा देखा जायगा। इस प्रकार ऐसे दो चार पास-पास रहनेवाले तारों की परस्पर स्थिति का ध्यान एक बार कर लेने से हम उन सबको दूसरी बार देखने से पहचान सकते हैं। पहचान के लये यदि हम उन सब तारों के मलने से जो आकार बने उसे निर्दिष्ट करके समूचे तारकपुंज का कोई नाम रख लें तो और भी सुभीता होगा। नक्षत्रों का वभाग इसी लये और इसी प्रकार कया गया है।

चंद्रमा २७-२८ दिनों में पृथ्वी के चारों ओर घूम आता है। खगोल में यह भ्रमणपथ इन्हीं तारों के बीच से होकर गया हुआ जान पड़ता है। इसी पथ में पड़नेवाले तारों के अलग अलग दल बाँधकर एक एक तारकपुंज का नाम नक्षत्र रखा गया है। इस रीति से सारा पथ इन २७ नक्षत्रों में वभक्त होकर 'नक्षत्र चक्र' कहलाता है। नीचे तारों की संख्या और आकृति सहित २७ नक्षत्रों के नाम दिए जाते हैं।

इन्हीं नक्षत्रों के नाम पर महीनों के नाम रखे गए हैं। महीने की पू र्णमा को चंद्रमा जिस नक्षत्र पर रहेगा उस महीने का नाम उसी नक्षत्र के अनुसार होगा, जैसे कार्तिक की पू र्णमा को चंद्रमा कृ त्तका वा रोहिणी नक्षत्र पर रहेगा, अग्रहायण की पू र्णमा को मृग शरा वा आर्दा पर; इसी प्रकार और सम झए।

ये ज्ञान और वज्ञानं वेदो में ही दिखता है क़ुरान में नहीं जमाल साहब।

क़ुरान का वज्ञानं हम दिखाते हैं जरा गौर से दे खये :

1. अल्लाह मयां तो क़ुरान में चाँद को टेढ़ी टहनी ही बनाना जानता है :

और रहा चन्द्रमा, तो उसकी नियति हमने मंज़िलों के क्रम में रखी, यहाँ तक क वह फर खजूर की पूरानी टेढ़ी टहनी के सदृश हो जाता है
(क़ुरआन सूरह या-सीन ३६ आयत ३९)

क्या चाँद कभी अपने गोलाकार स्वरुप को छोड़ता है ? क्या अल्लाह मयां नहीं जानते की ये केवल परिक्रमा के कारण होता है ?

2. सूरज चाँद के मुकाबले तारे अ धक नजदीक हैं :

और (चाँद सूरज तारे के) तुलूउ व (ग़ुरूब) के मक़ामात का भी मा लक है हम ही ने नीचे वाले आसमान को तारों की आरइश (जगमगाहट) से आरास्ता कया।
(सूरह अस्साफ़्फ़ात ३७ आयत ६)

क्या अल्लाह मया भूल गए की सूरज से लाखो करोडो प्रकाश वर्ष की दूरी पर तारे स्थित हैं ?

3. क़ुरान के मुताबिक सात ग्रह :

ख़ुदा ही तो है जिसने सात आसमान पैदा कए और उन्हीं के बराबर ज़मीन को भी उनमें ख़ुदा का हुक्म नाज़िल होता रहता है – ता क तुम लोग जान लो क ख़ुदा हर चीज़ पर कादिर है और बेशक ख़ुदा अपने इल्म से हर चीज़ पर हावी है।

(सूरह अत तलाक़ ६५ आयत १२)

क्या सात आसमान और उन्ही के बराबर सात ही ग्रह हैं ? क्या खुदा को अस्ट्रोनॉमर जितना ज्ञान भी नहीं की आठ ग्रह और पांच ड्वार्फ प्लेनेट होते हैं।

4. शैतान को मारने के लए तारो को शूटिंग मसाइल बनाना भी अल्लाह मया की ही करामात है।

और हमने नीचे वाले (पहले) आसमान को (तारों के) चराग़ों से ज़ीनत दी है और हमने उनको शैतानों के मारने का आला बनाया और हमने उनके लए दहकती हुई आग का अज़ाब तैयार कर रखा है।

(सूरह अल-मुल्क ६७ आयत ५)

मगर जो (शैतान शाज़ व नादिर फरिश्तों की) कोई बात उचक ले भागता है तो आग का दहकता हुआ तीर उसका पीछा करता है

(सूरह सूरह अस्साफ़्फ़ात ३७ आयत १०)

क्या अल्लाह को तारो और उल्का पंडो में अंतर नहीं पता जो तारो को शूटिंग मसाइल बना दिया ता क शैतान मारे जावे ? और उल्का पंड जो है वो धरती के वायुमंडल में घुसने वाली कोई भी वस्तु को घर्षण से ध्वस्त कर देती है जो जल्दी हुई गरती है ये सामान्य व्यक्ति भी जानते हैं इसको शैतान को मारने वाले मसाइल बनाने का वज्ञानं खुद अल्लाह मयां तक ही सी मत रहा गया।

रही बात सूर्यादि ग्रह पर प्रजा की बात तो आज वज्ञानं स्वयं सद्ध करता है की सूर्य पर भी फायर बेस्ड लाइफ मौजूद है। ज्यादा जानकारी के लए लंक दे खये :

http://www.theonion.com/article/scientists-theorize-sun-could-support-fire-based-l-34559

अब कसको ज्ञान ज्यादा रहा जमाल साहब ?

आपके क़ुरान नाज़िल करने वाले अल्लाह मया को ?

या वेद को पढ़कर पूर्ण ज्ञानी ऋ ष की उपा ध प्राप्त करने वाले मह र्ष दयानंद को।

लखने को तो और भी बहुत कुछ लखा जा सकता है मगर आपकी इस शंका पर इतने से ही पाठकगण समझ जाएंगे इस लए अपनी लेखनी को वराम देता हु – बाकी और भी जो आक्षेप आपकी पुस्तक में ऋ ष और सत्यार्थ प्रकाश पर उठाये हैं यथासंभव जवाब देने की को शश रहेगी

खुद पढ़े आगे बढे

लौटो वेदो की और

नमस्ते

सोम का वास्त वक अर्थ और सोमरस का पाखंड

JULY 8, 2015 1 COMMENT

अ हं दां गृणते पूर्व्यं वस्वहं ब्रह्म कृणवं मह्यं वर्धनम् ।

अ हं भुवं यजमानस्य चोदिताऽयज्वनः सा क्ष वश्वस्मिन्भरे ।।

– ऋ० मं० १०। सू० ४९। मं० १।।

हे मनुष्यो! मैं सत्यभाषणरूप स्तुति करनेवाले मनुष्य को सनातन ज्ञानादि धन को देता हूं। मैं ब्रह्म अर्थात् वेद का प्रकाश करनेहारा और मुझ को वह वेद यथावत् कहता उस से सब के ज्ञान को मैं बढ़ाता; मैं सत्पुरुष का प्रेरक यज्ञ करनेहारे को फलप्रदाता और इस वश्व में जो कुछ है उस सब कार्य्य का बनाने और धारण करनेवाला हूं। इस लये तुम लोग मुझ को छोड़ कसी दूसरे को मेरे स्थान में मत पूजो, मत मानो और मत जानो।

नमस्ते मत्रो,

जैसा की आप सभी जानते हों हमारे देश में अनेको वद्वान और गुरुजन होते चले आये हैं और होते भी रहेंगे क्यों क ये देश ही वद्वान उत्पन्न करने वाला है, इसी लए इस देश आर्यावर्त को वश्वगुरु कहा जाता है, मगर ये भी एक कटु सत्य है की इसी देश में अनेको ऐसे भी तथाक थत और स्वघो षत वद्वान होते आये हैं जिनका उद्देश्य ही धर्म अर्थात वेद और वेदज्ञान का उपहास करना रहा है, ऐसे ही एक तथाक थत वद्वान हुए थे जिनका नाम था नारायण भवानराव पावगी इन्होने कुछ पुस्तके लखी थी जिनमे कुछ हैं

1. आर्यावर्तच आर्यांची जन्मभू म व उत्तर ध्रुवाकडील त्यांच्या वसाहती (इ.स. १९२०)

2. ऋग्वेदातील सप्त संधुंचा प्रांत अथवा आर्यावर्तातील आर्यांची जन्मभू म आ ण उत्तर ध्रुवाकडील त्यांच्या वसाहती (इ.स. १९२१)

3. सोमरस-सुरा नव्हे (इ.स. १९२२)

इन पुस्तको में लेखक ने वेदो, वैदिक ज्ञान और ऋ षयों पर अनेक लांछन लगाये जिनमे प्रमुखता से ये सद्ध करने की को शश की गयी की वैदिक काल में ऋ ष और सामान्य मानव भी होम के दौरान सोमरस का पान देवताओ को करवाते थे और अपनी इच्छित मनोकामनाओ की पूर्ति हेतु यज्ञ में पशु वध, नरमेध भी करते थे। अब इन आधारहीन तथ्यों के आधार पर अनेको वधर्मी और महामानव आदि अपनी वेबसाइट और लेखो के माध्यम से

हिन्दुओ के मन में वेदज्ञान के प्रति जहर भरने का कार्य करते हैं, उनमे मुख्यत जो आरोप लगाया जाता है वो है :

वेदो और वैदिक ज्ञान के अनुसार ऋ ष आदि अपनी मनोकामनाए पूरी करने हेतु अनेको देवताओ को सोमरस (शराब) की भेंट करते थे।

सोमरस बनाने की व ध वेद में व र्णत है ऐसा भी इनका खोखला दावा है।

आइये एक एक आक्षेप को देखकर उसका समु चत जवाब देने की को शश करते हैं।

आक्षेप 1. वेदों में व र्णत सोमरस का पौधा जिसे सोम कहते हैं अफ़ग़ानिस्तान की पहा ड़यों पर ही पाया जाता है। यह बिना प त्तयों का गहरे बादामी रंग का पौधा है। जिसे यदि उबाल कर इसका पानी पीया जाय तो इससे थोड़ा नशा भी होता है। कहते हैं यह पौरुष वर्धक औष ध के रूप में भी प्रयोग होता है।
सोम वसुवर्ग के देवताओं में हैं ।
मत्स्य पुराण (5-21) में आठ वसुओं में सोम की गणना इस प्रकार है-
आपो ध्रुवश्च सोमश्च धरश्चैवानिलोज्नलः ।
प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवोज्ष्टौ प्रकीर्तिताः ॥

समाधान : सोमलता की उत्प त्त जो बिना पत्ती का पौधा है ऐसा इनका वचार है जो अफगानिस्तान की पहा ड़यों में पैदा होता है ऐसा इनका दावा है उसके लए ये ऋग्वेद 10.34.1 का मन्त्र "सोमस्येव मौजवतस्य भक्षः" उद्धृत करते हैं। मौजवत पर्वत को आजके हिन्दुकुश अर्थात अफगानिस्तान से निरर्थक ही जोड़ने का प्रयास करते हैं जब क सच्चाई इसके वपरीत है।

निरुक्त में "मूजवान पर्वतः" पाठ है मगर वेद का मौजवत और निरुक्त का मूजवान एक ही है, इसमें संदेह होता है, क्यों क सुश्रुत में "मुञ्जवान" सोम का पर्याय लखा है अतः मौजवत, मूजवान और मुञ्जवान पृथक पृथक हैं ज्ञात होता है। वेद में एक पदार्थ का वर्णन जो सोम नाम से आता है वह पृथ्वी के वृक्षों की जान है। पृथ्वी की वनस्पति का पोषक है, वनस्पति में सौम्यभाव लाने वाला औ ष धराज है और वनस्पतिमात्र का स्वामी है। वह जिस स्थान में रहता है उसको मौजवत कहते हैं। मेरी पछली पोस्ट में गौओ के निवास को व्रज कहते हैं ये सद्ध कया था उसी प्रकार सोम के स्थान को मौजवत कहा गया है। यह स्थान पृथ्वी पर नहीं कन्तु आकाश में है। क्यों क वनस्पति की जीवनशक्ति चन्द्रमा के आधीन है इस लए उसका नाम सोम है वह औष ध राज है। अलंकारूप से वह लतारूप है क्यों क जो भी व्यक्ति शुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष को समझते हैं जानते हैं उन्हें पता है की चन्द्रमा पंद्रह दिन तक बढ़ता और पंद्रह दिन तक घटता है, इसे न समझकर व्यर्थ की कोरी कल्पना कर ली गयी की शुक्लपक्ष में इस सोमलता के पत्ते होते हैं और कृष्णपक्ष में गर जाते हैं।

सोम वसुवर्ग के देवताओ में हैं ये भी मथ्या कल्पना इनके घर की है क्यों क जो वसु का अर्थ भली प्रकार जानते तो ऐसे दोष और मथ्या बाते प्रचारित ही न करते, आठ वसु में सोम भी शा मल है उसके लए उप र्ल खत पुराण का श्लोक उद्धृत करते हैं

मत्स्य पुराण (5-21) में आठ वसुओं में सोम की गणना इस प्रकार है-
आपो ध्रुवश्च सोमश्च धरश्चैवानिलोज्नलः ।
प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवोज्ष्टौ प्रकीर्तिताः ॥

भागवत पुराण के अनुसार- द्रोण, प्राण, ध्रुव, अर्क, अग्नि, दोष, वसु और वभावसु। महाभारत में आप (अप्) के स्थान में 'अहः' और शवपुराण में 'अयज' नाम दिया है।

अब यदि इनसे पूछा जाए की – आठ वसुओं में सोम हैं मत्स्य पुराण के अनुसार जिसका अर्थ है मादक द्रव्य यानी शराब – तो भगवत पुराण में आठ वसुओं में सोम क्यों नहीं लखा ?

दे खये ऋ ष दयानंद अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में वसु का अर्थ कस प्रकार करते हैं :

पृ थवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, चन्द्रमा, सूर्य्य और नक्षत्र सब सृष्टि के निवास स्थान होने से आठ वसु। (स. प्र. सप्तम समुल्लास)

ऋ ष ने बहुत ही सरल शब्दों में वसु का अर्थ कर दिया। अब अन्य आर्ष ग्रन्थ से आठ वसुओं का प्रमाण देते हैं :

शाकल्य-'आठ वसु कौन से है?'
याज्ञ.-'अग्नि, पृथ्वी, वायु, अन्तरिक्ष, आदित्य, द्युलोक, चन्द्र और नक्षत्र। जगत के सम्पूर्ण पदार्थ इनमें समाये हुए हैं। अतः ये वसुगण हैं।

(बृहदारण्यकोपनिषद, अध्याय तीन)

इन प्रमाणों से सद्ध है की आठ वसुओं में सोम नामक कोई नाम नहीं। हाँ यदि सोम का अर्थ चन्द्र से करते हो जैसा की इस लेख से सद्ध भी होता है तो आपकी सोमलता और सोमरस का सद्धांत ही खं डत हो जाता है।

आक्षेप 2. सोम की उत्प त्त के दो स्थान है- (1) स्वर्ग और (2) पा र्थव पर्वत । अग्नि की भाँति सोम भी स्वर्ग से पृथ्वी पर आया । ऋग्वेद ऋग्वेद 1.93.6 में कथन है : 'मातरिश्वा ने तुम में से एक को स्वर्ग से पृथ्वी पर उतारा; गरुत्मान ने दूसरे को मेघ शलाओं से।' इसी प्रकार ऋग्वेद 9.61.10 में कहा गया है: हे सोम, तुम्हारा जन्म उच्च स्थानीय है; तुम स्वर्ग में रहते हो, यद्य प पृथ्वी तुम्हारा स्वागत करती है । सोम की उत्प त्त का पा र्थव स्थान मूजवन्त पर्वत (गान्धार-कम्बोज प्रदेश) है'। ऋग्वेद 10.34.1

समाधान : यहाँ भी "आँख के अंधे और गाँठ के पुरे" वाली कहावत चरितार्थ होती है दे खये :

अप्सु में सोमो अब्रवीदंत वर्श्वानी भेषजा।
अग्निं च वश्वशम्भुवमापश्च वश्वभेषजीः।। (ऋग्वेद 1.23.20)

यहाँ सोम समस्त औष धयों के अंदर व्याप्त बतलाया गया है। इस सोम को ऐतरेयब्राह्मण 7.2.10 में स्पष्ट कह दिया है की "एतद्वै देव सोमं यच्चन्द्रमाः" अर्थात यही देवताओ का सोम

है जो चन्द्रमा है। इस सोम को गरुड़ और श्येन स्वर्ग से लाते हैं। गरुड़ और श्येन भी सूर्य की करणे ही हैं। सोम का सौम्य गुण औषधयों पर पड़ता है, यदि स्वर्ग से गरुड़ और श्येन द्वारा उसका लाना है।

ऐसे वैदिक रीति से कये अर्थो को ना जानकार व्यर्थ ही वेद और सत्य ज्ञान पर आक्षेप लगाना जो सम्पूर्ण वज्ञानं सम्मत है निरर्थक कार्य है, क्यों क आज वज्ञानं भी प्रमा णत करता है की चन्द्रमा की रौशनी अपनी खुद की नहीं सूर्य की रौशनी ही है यही बात इस मन्त्र में यथार्थ रूप से प्रकट होती है और दूसरा सबसे बड़ा वज्ञानं ये है की चन्द्रमा जो रात को प्रकाश देता है उससे औषधयों का बल बढ़ता है।

आशा है इस लेख के माध्यम से सोमरस, सोमलता आदि जो मथ्या बाते फैलाई जा रही हैं उनपर ज्ञानीजन वचार करेंगे। ईश्वर कृपा से इसी वषय पर जो और आक्षेप लगाये हैं उनका भी समाधान प्रस्तुत होता रहेगा

लौटो वेदो की और

नमस्ते

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का जन्मकाल – वेटिकन चाटुकार अज्ञानी पाश्चात्य इतिहासकारों का खंडन

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

नमस्ते मत्रो,

हमारे भारतवर्ष में अनेको अनेक महापुरुष, ज्ञानी, वद्वान, पराकर्मी राजा महाराजा उत्पन्न होते आये हैं, ये मटटी कभी वीरो से खाली नहीं रही, कालांतर में भी पृथ्वी राज चौहान, महाराणा प्रताप, भगत संह, चंद्रशेखर आजाद सरीखे वीर योद्धा इसी पावन प वत्र मटटी की गोद से उत्पन्न हुए हैं।

जहाँ तक समझता हु कालांतर में उत्पन्न हुए ये वीर और इनके माता- पता ने भी कसी न कसी महापुरुष को आदर्श मानकर – इन वीरो में उस महापुरष के संस्कार भरे होंगे। और इस देश भारत के लए अनेको महापुरषो के आदर्श उपस्थित रहे हैं, सभी महापुरषो के समय पर व चत्र परिस्थितिया रही जिनको उन्होंने उ चत रीति से हल कया। जैसे महाभारत काल में योगेश्वर कृष्ण ने शांति बहाल करने की पूर्ण को शश की मगर जब धर्म की हानि होते दे ख तो युद्ध में पांडवो को वजय दिलवाई। महाराणा प्रताप ने चत्तोड़ की आन बान शान के लए पूरी जिंदगी संघर्ष कया। ऋ ष दयानंद ने देखा देश की हालत बहुत वकट है, आर्य जाती अधम और पाखंड में फंस चुकी थी, भारत गुलामी से त्रस्त था ऐसे में ऋ ष ने "स्वराज्य" का बिगुल बजाया। भगत संह, आजाद, बिस्मिल अशफ़ाक़ुल्ला खान सरीखे अनेको वीर इस स्वतंत्रता रुपी यज्ञ में अपनी आहुति देने आये।

आ खर ऐसा क्या था जो इन सभी महापुरषो को एक प्रेरणा देता था ?

वो था हमारे इतिहास में उत्पन्न हुए गौरवशाली आदर्श मानव जिन्होंने हमारे भ वष्य के लए अपना वर्तमान दांव पर लगाया। वो आज हमारे आदर्श हैं।

ऐसे ही एक महापुरुष के जन्मकाल के समय पर जो लाखो वर्षो से भारतीय जनमानस ही नहीं अ पतु दुनिया के सभी मनुष्यो के लए एक आदर्श रहा है, एक ऐसा मनुष्य जो पुत्र, पति, भाई, मत्र यहाँ तक की एक शत्रु के लए भी आदर्श बन गया। आज हम ऐसे आदर्श श्री राम के जन्म काल गणना पर वचार करेंगे।

हमारे मर्यादापुरुषोत्तम श्री राम। इनके जन्म काल के वषय में अनेक भ्रांतियां हैं।
कुछ अंग्रेजी इतिहासकार हमारे सच्चे इतिहास को अपनी वेटिकन चाटुकारिता हेतु नकारते हैं, झूठे तथ्य और बेबुनियाद आधार पर हमारी आस्था पर चोट करते हैं, वामपंथी भी ऐसी ही वकृत मान सकता से युक्त हैं, वो भी नहीं चाहते की यहाँ का हिन्दू समाज (आर्य जाती) अपने सच्चे इतिहास को जाने, इसी लए मनमाने और झूठे कुतर्को से झूठ का प्रचार कर हिन्दुओ के मन में भ्रांतियां उत्पन्न करते हैं, नतीजा हिन्दू समाज अपने सत्य इतिहास से दूर होता जाता है।
आज हम इसी वषय पर कुछ ववेचना करेंगे –

दे खये हमारे पास हमारे इतिहास से जुड़े अनेक तथ्य और ऐतिहा सक ग्रन्थ मौजूद हैं, जो हमारी इतिहास की धरोहर है, कुछ अपवाद जैसे प्रक्षेप हिस्से को छोड़ देवे, तो जो सत्य सद्धांत हो वो मानने योग्य है चाहे कसी भी पुस्तक में मौजूद हो – जब श्री राम का जन्म काल जानने का प्रयत्न करते हैं तो सबसे पहले हम वाल्मी क रामायण को प्रमाण मानते हैं आइये देखे वहां क्या लखा है –

ततो यज्ञे समाप्ते तु ऋतुनां षठ समत्ययुः।
ततश्च द्वादशे मासे चैत्रं नाव मके तिथौ।।
नक्षत्रोऽदितिदैवत्ये स्वोच्चसंस्थेषु पंच्चसु।
ग्रहेषु कर्कट लग्ने वाक्पता वन्दुना सह।।
कौशल्याजनमद् रामं दिव्य लक्षणं संयुतम्।
लोहिताक्षं महाबाहु रक्तोष्ठम् दुन्दु भस्वनम्।।
प्रोद्यमाने जगन्न्ाथं सर्व लोक नमस्कृतम।
(वा. रा. – बालकाण्ड, सर्ग ७, श्लोक १-३)

यज्ञ की समाप्ति के पश्चात् 6 ऋतुएं बीत गईं, तब बारहवें मास चैत्र के शुक्ल पक्ष की नवमी ति थ को पुनर्वसु नक्षत्र एवं कर्क लग्न में कौशल्या देवी ने दिव्य लक्षणों से युक्त श्रीराम को जन्म दिया। उस समय पांच ग्रह अपने-अपने उच्च स्थानों पर वद्यमान थे।

ऋ ष वाल्मी क ने अपनी रामायण में इस प्रकार की ग्रह स्थिति में श्री राम के जन्म का उल्लेख कया है –

सूर्य, मंगल, शनि, बृहस्पति, शुक्र ग्रह मेष मकर तुला कर्क मीन में थे। चैत्र के शुक्ल पक्ष की नवमी ति थ श्री राम की जन्मति थ होने से अब रामनवमी के नाम से प्र सद्ध है।

महाभारत से प्रमाण :

महाभारत के अनुसार त्रेता और द्वापर के संधकाल में श्री राम का जन्म हुआ था।

संध्येश समनुप्राप्ते त्रेतायां द्वापरस्य च।
अहं दशरथी रामो भ वष्या म जगत्पतिः।।
(महाभारत शान्तिपव-339/85)

ये श्लोक मलावटी लगता है ले कन इतना जरूर है की जो यहाँ त्रेता और द्वापर के संध काल की बात हो रही है – उसमे सत्यता जरूर प्रतीत होती है क्यों क इसी संध का ऐसा ही समय आंकलन वायु महापुराण 98/72) (हरिवंश पुराण 4/41 ब्रह्मांड महापुराण 104/11) में भी दिखाई देता है।

चतु र्वशयुगं चा प वश्वा मत्रपुरः सरः।
रामो दशरथस्याथ पुत्रःपदमायतेक्षणः।।

क्यों क यहाँ 24 व चतुर्युगी की बात हो रही है जो इस वैवस्वत मनु के काल में आती है – वो मुझे युक्तियुक्त नहीं लगता अतः हम इसी 28 व चतुर्युगी के आधार पर काल गणना करते हैं –

दे खये इस समय वैवस्वत मनु की 28 व चतुर्युगी का कलयुग 5116वा साल यानी वक्रम का 2072 संवत है – यदि यहाँ से गणना की जाए तो –

इस कलयुग के – 5116 वर्ष

बीत चुके द्वापर के – 8,64,000 वर्ष

बीत चुके त्रेता के – 12,96,000

श्री राम त्रेता और द्वापर के संध काल में हुए – तो

8,64,000 + 12,96,000 = 21,60,000 वर्ष

इनका संध काल =

21,60,000 / 2 = 10,80,000 वर्ष

अब इसमें संध्याओं का योग करते हैं –

86,400 + 1,29,600 = 2,16,000 / 2 = 1,08,000

(ये युग का दशवा हिसा है जो एक युग से दूसरे युग का संध काल होता है अतः इसका आधा पूर्व और आधा पश्चात का लेना होगा)

संध काल + संध्याओ का योग

10,80,000 + 1,08,000 = 11,88,000 वर्ष

अब इसमें कलयुग के 5116 वर्ष और जोड़ते हैं

11,88,000 + 5116 = 11,96,116 (11 लाख, 96 हजार, 116 वर्ष) श्री राम
को उत्पन्न हुए हो गए हैं।

ये काल गणना वैवस्वत मनु की 28 व चतुर्युगी के आधार पर है। अतः इतना तो सद्ध है, ग्यारह लाख, छियानवे हजार एक सौ सौलह वर्ष तो श्री राम के जन्म हुए कम से कम हो ही चुके हैं।

यदि 24 व चतुर्युगी के आधार पर करे तो – ये गणना करोडो वर्ष पूर्व बैठेगी जो तर्कसंगत नहीं होगा क्यों क अभी हाल में ही अमेरिका के एक खोजी उपग्रह ने श्री रामेश्वरम से श्री लंका तक श्रीराम द्वारा बनाए गए त्रेतायुग के पुल को 17.5 लाख वर्ष पुराना माना है। जो इस 28 व चतुर्युगी के आधार पर निकाले गए श्री राम की जन्म काल गणना से मेल खाता है।

अतः हमें जानना चाहिए की हमारा इतिहास कोई काल्पनिक नहीं – युगो की गणना यदि और सटीक तरीके तथा अनेक ऐतिहा सक ग्रंथो का यदि और अ धक अनुसन्धान और वश्लेषण कया जाए तो हम प्रभु श्री राम के जन्म गणना का और अ धक वश्लेषण करके – मॉडर्न वज्ञानं के आधार पर मेल करवा सकते हैं।

धन्यवाद

आओ लौट चले वेदो की और

यज्ञ में पशु-वध वैदिक काल में नहीं था

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

महाभारत काल में भी इसकी पुष्टि मलती है – क्यों क महाभारत में वृतांत आता है –

“यज्ञ में हिंसा की निंदा और अहिंसा की प्रशंसा”

ये वृतांत महाभारत में शांतिपर्व के अंतर्गत अध्याय २७२ में आता है – केवल इतना ही नहीं – यहाँ ये भी बताया गया है की यदि कोई यज्ञ में पशु वध करता है – तो निश्चय ही उसका सब तप नष्ट हो गया।

तस्य तेनानुभावेन मृगहिसात्मनस्तदा।

तपो महत समुच्छिन्नं, तस्माद्धहिंसा न य ज्ञया।।

अहिंसा सकलो धर्मोहिंसा धर्मस्तथा वधः।

सत्यंतेहं प्रवक्ष्या म, यो धर्मः सत्यवादिनाम्।।

इस प्रकरण में महाराज यु धष्ठर ने भीष्म पतामह से पूछा है की धर्म तथा सुख के लए यज्ञ कैसा करना चाहिए ? उसके उत्तर में पतामह ने एक तपस्वी ब्राह्मण -ब्राह्मणी दंप त का वृतांत देते हुए बतलाया है की कसप्रकार उस तपस्वी ब्राह्मण का महान तप, यज्ञ में पशुब ल देने के लए एक वन्य मृग को मारने की इच्छा मात्र से वनष्ट हो गया। इस लए यज्ञ में कभी हिंसा न करनी चाहिए। अहिंसा सार्वत्रिक और सारका लक नित्य धर्म है।

इस प्रमाण से ज्ञात होता है की न तो महाभारत काल में यज्ञ में पशु हिंसा का वधान था – न ही उससे पहले के काल में क्यों क अथर्ववेद 11.7.7 में लखा है –

राजसूयं वाजपेयमग्निष्टोमस्तदध्वरः।
अकार्श्वमेधावुच्छिष्टे जीव बर्हिममन्दितमः।।

राजसूय, वाजपेय, अग्निष्टोम, अर्कमेध, अश्वमेध आदि सब अध्वर अर्थात हिंसा रहित यज्ञ हैं, जो क प्रा णमात्र की बुद् ध करने वाला और सुख शांति देने वाला है। एवं इस मन्त्र में राजसूय आदि सभी यज्ञो को "अघ्वर" कहा गया है जिसका
एकमात्र सर्वसम्मत अर्थ "हिंसा रहित यज्ञ है"

जो क निषेधार्थक नञ पूर्वक 'ध्वर' हिंसायां धातु से बनता है। घ्वरो हिंसा तदभावोत्र सोध्वरः।

अतः स्पष्ट है की वेदने कसी भी यज्ञ में पशुवध की आज्ञा नहीं दी, उल्टा पशुवध करने पर उसे यज्ञ ही नहीं माना। इस लए वेद के नाम पर यज्ञो में पशुवध करना अपने को धोखा देना है, दुसरो को उल्टा रास्ता बतलाना, अथवा अपनी अज्ञानता प्रकट करना है। फर यह भी दे खये की पशु वध करने पर प्रा णमात्र की क्या वृद् ध हुई और उसे क्या सुख शांति मली, उल्टा प्राणी की हत्या करते समय उसे घोर यातना दी जाती है और उसका जीवन तक समाप्त कर दिया जाता है, तब वह कर्म "बर्हिममन्दितमः" कैसे रहा ?

उपरोक्त तथ्यों से प्रमा णत है की न तो इतिहास में यज्ञो में पशु ब ल का समर्थन मलता है – ना ही वेद में – ब्रह्माण्ड ग्रंथो में भी ऐसा कुछ पाया नहीं जाता –
ले कन फर भी कुछ मूढ या ज्ञक (पौरा णक) लोग "वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति" का ढोल पीटते हुए यज्ञ में पशुवध को अहिंसा बताते हुए स्वर्ग का मार्ग तक सद्ध करने की को शश करते हैं –

ऐसा मालूम होता है इन लोगो की बुद् ध कहीं घास चरने चली गयी है, अन्यथा वे ऐसा कभी न कहते क्यों क दे खये मनु महाराज ने "वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति" का क्या अर्थ दिया है –

या वेद वहिता हिंसा, नियतास्मिंश्चराचरे।
अहिंसामेव तां वद्याद्, वेदाद धर्मो हि निर्बभौ।।
योहिंसकानि भूतानि, हिनस्त्यात्मसुखेच्छया।
स जीवंश्च मृत्श्चैव, न कश्चित् सुखमेधते।।
(५.४४-४५)

अर्थात, जो वश्व संसार में दुष्टो – अत्याचारियो – क्रूरो – पा पयो को जो दंड – दान रूप हिंसा वेद वहित होने से नियत है, उसे अहिंसा ही समझना चाहिए, क्यों क वेद से ही यथार्थ धर्म का प्रकाश होता है। परन्तु इसके वपरीत जो निहत्थे, निरपराध अहिंसक प्रा णयों को अपने सुख की इच्छा से मारता है, वह जीता हुआ और मरा हुआ, दोनों अवस्थाओ में कहीं भी सुख को नहीं पाता।

दुष्टो को दंड देना हिंसा नहीं प्रत्युत अहिंसा होने से पुण्य है, अतएव मनु ने (8.351) में लखा है –

गुरुं वा बालवृद्धौ वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुतम्।
आततायिनमायान्तं हन्यादेवा वचारयन।।
नाततायिवधे दोषो हन्तुर्भवती कश्चन।
प्रकाशं वाप्रकाशं वा मन्युस्तं मन्युमृच्छति।।

अर्थात, चाहे गुरु हो, चाहे पुत्र आदि बालक हो, चाहे पता आदि वृद्ध हो, और चाहे बड़ा भरी शास्त्री ब्राह्मण भी क्यों न हो, परन्तु यदि वह आततायी हो और घात-पात के लए आता हो, तो उसे बिना वचार तत्क्षण मार डालना चाहिए। क्यों क प्रत्यक्षरूप में सामने होकर व अप्रत्यक्षरूप में लुक-छिप कर आततायी को मारने में, मारने वाले का कोई दोष नहीं होता क्यों क क्रोध को क्रोध से मारना मानो क्रोध की क्रोध से लड़ाई है।

उपरोक्त मनु स्मृति के प्रमाण से भी स्पष्ट है की यज्ञ में पशु वध का निषेध है।
वेद प्रमाणों से स्पष्ट है की वेदो में पशु वध निषेध है – जब क वेदो में पशुओ को पालने का स्पष्ट निर्देश है – यहाँ तक की – गाय, घोड़ा आदि पशुओ की हत्या करने वालो को "प्राणदंड" तक का वधान है –

मनु स्मृति भी इस बात की पुष्टि करती है – ब्राह्मण ग्रन्थ भी यही कहते हैं = महाभारत भी यही कहती है – तो इससे सद्ध है – न तो वैदिक काल में यज्ञ में पशु वध होता था – ना ही महाभारत काल में – ये सब महाभारत युद्ध के ५००-१००० वर्ष बाद की उपज ही सद्ध होती है –

अतः सत्य सनातन वैदिक स्वरुप को पहचानिये –

सभी महानुभावो से वनम्र निवेदन है कृपया सत्य को समझे – और माने –

वेदो की और लौटिए –

सत्य और न्याय की और लौटिए।

नमस्ते

नोट : ये मनुस्मृति का श्लोक – श्री राम ने – बाली के वध के समय – बाली को सुनाया भी था – ता क बाली को पता हो की उसने जो वेद वरुद्ध कृत्य कया था – उसका दंड उसे वेद सम्मत और न्यायकारी प्र क्रया के अधीन ही दिया जा रहा है।

बाइबिल के यहोवा का भयंकर वज्ञान

JULY 2, 2015 2 COMMENTS

जी हाँ इतना वज्ञानं आप सुनकर चौंक जायेंगे –

वैसे तो कसी भी पशु का मांस नहीं खाना चाहिए – क्यों क ये मनुष्यता नहीं –
फर भी यहोवा को कुछ अकल आई और उसने कुछ पशुओ को अशुद्ध ठहरा दिया – उन पशुओ में सूअर, शापान आदि के साथ साथ एक जानवर आपने देखा होगा – "खरगोश" – इसके मांस को – यहोवा ने अशुद्ध बताया है –

आइये एक नजर डा लये – की इन पशुओ में क्या ऐसा है जो इनको अशुद्ध बनाता है – और अन्य पशुओ को शुद्ध –

1 फर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,

2 इस्त्राए लयों से कहो, क जितने पशु पृथ्वी पर हैं उन सभों में से तुम इन जीवधारियों का मांस खा सकते हो।

3 पशुओं में से जितने चरे वा फटे खुर के होते हैं और पागुर करते हैं उन्हें खा सकते हो।

4 परन्तु पागुर करने वाले वा फटे खुर वालों में से इन पशुओं को न खाना, अर्थात ऊंट, जो पागुर तो करता है परन्तु चरे खुर का नहीं होता, इस लये वह तुम्हारे लये अशुद्ध ठहरा है।

5 और शापान, जो पागुर तो करता है परन्तु चरे खुर का नहीं होता, वह भी तुम्हारे लये अशुद्ध है।

6 और खरहा, जो पागुर तो करता है परन्तु चरे खुर का नहीं होता, इस लये वह भी तुम्हारे लये अशुद्ध है।

7 और सूअर, जो चरे अर्थात फटे खुर का होता तो है परन्तु पागुर नहीं करता, इस लये वह तुम्हारे लये अशुद्ध है।

8 इनके मांस में से कुछ न खाना, और इनकी लोथ को छूना भी नहीं; ये तो तुम्हारे लये अशुद्ध है॥
(लैव्यव्यवस्था, अध्याय ११)

तो देखा आपने – शुद्ध और अशुद्ध का निराकरण करना – वो भी बाइबिल के यहोवा का तर्कसम्मत वज्ञानं ?

क्या कोई जीव – ईश्वर की नजर में अशुद्ध है ?

फर बनाया क्यों ?

अब क्या ऐसे को जो अपनी ही बनाई सृष्टि में कुछ पक्षपात करता डोलता है – शुद्ध अशुद्ध का भेद करके – उसे ईश्वर कह सकते हैं –

च लए इस वषय पर फर कभी चर्चा करेंगे अभी तो ऊपर की आयत में यहोवा का भयंकर वज्ञानं पढ़िए – हंसी आएगी = की बाइबिल का यहोवा – इतना मुर्ख ?

3 पशुओं में से जितने चरे वा फटे खुर के होते हैं और पागुर करते हैं उन्हें खा सकते हो।

यानी जो पशु जुगाली करते हो और उनके खुर फटे हो – यानी खुर (hoof) में फटाव हो – अथवा बंटे हो – ये दोनों स्थति होनी चाहिए =

अब दे खये – यहोवा का मंदबुद् ध वज्ञान

6 और खरहा, जो पागुर तो करता है परन्तु चरे खुर का नहीं होता, इस लये वह भी तुम्हारे लये अशुद्ध है।

यहाँ खरगोश को अशुद्ध बताया है – यानी खरगोश जुगाली तो करता है मगर उसके खुर फटे नहीं होते –

 कसी भाई ने खरगोश को जुगाली करते देखा ?

खरगोश के खुर फटे होते हैं –

क्या ये नार्मल सी बाते भी बाइबिल के यहोवा को नहीं मालूम ?

हाँ केवल आदम हव्वा से दुनिया के अनेक मनुष्य बनाता है – इतना ही अक्ल है –

वाह जी वाह – क्या वज्ञानं है यहोवा का ?

इतने पर भी मेरे ईसाई मत्र कहते हैं –

बाइबिल में वज्ञानं है –

भाई ऐसे वज्ञानं को आप ही पढ़ो और आप ही बांटो –

हम से न होगा –

हंसो मत भाई – यहोवा को बुरा लग गया – तो क़यामत भेज देगा –

बताओ इतना मंदबुद् ध और कम अक्ल वाला बाइबिल का यहोवा अपने को सर्वज्ञ और ईश्वर कहलवाता है –

मेरे ईसाई मत्रो – इस वज्ञानं पर कुछ बोलना है ?

ज्ञान और वज्ञानं वेद में है – उसे अपनाओ

इस ढोंग को छोडो – धर्म से नाता जोड़ो –

लौटो वेदो की और

नमस्ते

हिन्दुस्तान कस तरह मुसलमान हुआ ?

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

मौलवी जकाउल्ला प्रोफेसर फरमाते है । यह असली मुसलमान कुल मुसलमानों से जो इस मुल्क में आबाद है आधे होंगे। वाकी आधे ऐसे ही मुसलमान है जो हिन्दुओं से मुसलमान हुए है । सरकारी मर्दुमशुमारी से मालूम होता है क हिन्दुस्तान में ४ करोड़ १० लाख मुसलमान रहते हैं । उनमें से जियादह मुसलमान जो हिन्दुओं से मुसलमान हुए हैं । गो इस्लाम

ने उनके सद्धान्तो को बदल दिया मगर उनके रस्म रिवाज को न बदल सका । गो क वह आपस में मलकर खाने पीने लगे मगर शादी व्याह में अब तक गोत्र बचाते है जैसे हिन्दू- गरज इस्लाम का असर हिन्दुओं पर ऐसा नहीं हुआ जैसा क हिन्दुओं का असर इस्लाम पर हुआ ।
(देखो तारीख हिन्द हिस्सा अव्वल फस्ल दौम सफा 6)

अब हम बतलाते हैं क इतने जो मुसलमान है । ये कस तरह मुसलमान हुए हैं और कब से हुए हैं और सब से पहिला मुसलमान इस मुल्क में कौन हुआ है ।

मुल्क हिन्दुस्तान में सबसे अव्वल मुसलमान वापा राजपूत चत्तोड़ के मा लक ने सन् 812 ई० में खमात्त के हा कस सलीम की लड़की से शादी कर सी और मुसलमान हुआ मगर मुसलमान हॉकर लज्जित हॉकर खुरासान चला गया … फर न आया उसका हिन्दू बेट गद्दी पर बैठा । (देखो आईन तारीख नुमा सफा सन् 1881 ई० ।)

सन् 812 ई॰ से खलीफा मामू रसीद ने बडी फोज के साथ हिन्दुस्तान पर चढाई की । वापा का पोता उस वक्त चतौड़ का हा कम था … नाम उसका राजा कहमान था । उससे ओर मामूं से जो बीस लडाहयां हुई ले कन आ खरकार मामूं श कस्त खाकर हिन्दूस्तान से भाग गया । (सफा 6 आईना तारीख नुमा सन् 1881 ई० और देखो मफ्ताहुद तवारीख सफा (7 सन् 1883 तवये सा लस हिस्सा अव्वल)

हिन्दुस्तान का दूसरा मुसलमान राजा सुखपाल नाम महमूद के हाथ राज्य के लालच में मुसलमान हुआ । मगर लखा है जब महमूद बलख की तरफ़ गया तो उसने फर हिन्दू बनकर उसकी तावेदारी की । महमूद ने सन् 1006 ई॰ में उसे पकड़कर जन्म भर के लये कैद कर दिया (सफा 16 आईने त्तारीख नुमा सन् 1881 ई० और मुखताहुद तवारीख सफा 9 सन् 1883 ई० हिस्सा अव्वल)

अरब कस तरह मुसलमान हुआ ?

JULY 2, 2015 1 COMMENT

खुद हजरत मुहम्मद के जमाने में अरब वालो से मुफ्फसल जैल मशहूर लडाई हुई है । जिनमें हजारों लाखों आदमी तलवार से क़त्ल हुए। सैंकडों स्त्रियाँ लौंडया बनाई गई। और हजारों ऊंट बकरी लूटे गये । हजारों के घर तबाह हुए और जब लूट से काफी पूंजी जमा हो गई तो फर इनाम इकराम मलने लगे । माल मुफ्त दिले बे रहम पर अमल दरामद कया गया – जो साथ शरीक होजाता वह गरीब चरबाहों के हक में गोया भेडया होजाता था । हम इस मौके पर मुफ्फसल हालात लख़ने से पहिले अरब के एक मशहूर और मारूफ़ आदमी अबूसुफयान के मुसलमान होने का हाल दर्ज करते हैं ।

जब मुहम्मद ने मक्के की फतह करने पर फौजे तय्यार की तो अव्वाल और अबूसुफयान जो निष्पक्ष थे घूमते हुए आपस से मले । अब्बास ने अबूसुफयान से कहा क अब क्या मारे जाओगे उसने मारे जाने के बचने का उपाय पूछा । अव्वाल उसको इस्लाम से लाने के बहाने निर्भय कर देने का वादा करके मुहम्मद के पास लेगया । हजरत उमर मारने के वास्ते दौड़े । रात को उसको हवालात में रखा सुबह को हाजिर लाया । मुहम्मद साहब ने कहा क अबतक वह समय नहीं आया क तू कहे क खुदा एक है और उसका कोई साक्षी नहीं और उसके सवाय कोई पूजित नहीं । और मैं सच्चा नबी (पैगम्बर) हूँ अबूसुफयान ने कहा क मेरे माँ बाप आप के भक्त हैं । सब बडाई और बुजुर्गी आपही की है । उन गुस्ताखयों और बेअदबियों के बदले जो मुझसे हुई आप की यह कृपा मुझ पर है । वास्तव में एक खुदा के सवाय कोई पूजित नहीं। परन्तु पैगम्बर की सत्यता पर मौन धारण कया अब्बास ने कहा की पैगम्बर की सत्यता पर भाषण कर नहीं तो खैर नहीं। अबूसुफ़यान ने मजबूर होकर पैगम्बर की सच्चाई मानी और इस्लाम ग्रहण कया। तब अब्बास ने नबी की सेवा में अर्ज कया की हे अल्लाह के पैगम्बर अबूसुफ़यान पद और मान को अच्छा समझता है। उसको कोई पदाधकार दीजिये ताक उसका मान हो। मुहम्मद ने उसको इस आज्ञा से से मान दिया की जो कोई अबूसुफ़यान के घर में दाखल हो उसकी जान बख्शी जावे। निदान वह छुट्टी लेकर मक्के को गया – अब्बास उचत अवसर पाकर पैगम्बर की सम्मति से अबूसुफयसान के पीछे गया, वह डरा अब्बासने कहा डरमत । सारांश यह क अब्बास ने अबूसुफयान को रास्ते के कनारे पर खड़ा कया ताक सब लश्कर इसलाम को देखले और उस पर रोब होजावे ताक वह फर इस्लाम से न फरे । जब क इस्लाम की फौज अबूसुफयान के सामने से निकल गई लोगों ने कहा जल्द जा और कुरैश को डर दिलाकर ओर समझाकर इस्लाम को घेरे में ला ताक जीवन मोत से निर्भय होजावे अबूसुफयान जल्द उनकी जान मारे जाने से बचा सके, (देखो तारीख अम्बिया सफा ३५४ व ३५५ सन् १२८१ हिजरी और ऐसा ही जिक्र कताब सीरतुल रुस्ल व तफसीर हुसैनी जिल्द १ सूरे तोबा सफा ३६० में है)

जिस कदर खूंरेजी और लूटमार से अरब के लोग मुसलमान हुए है अगर उनकी मुफ्फसल फहरिस्त लखी जावे तो एक दफ्तर बनजावे । हालत पर लक्ष करते हुए संक्षेप से वर्णन करते हैं ।

(1) गज़वा (लडाई) वदां।

(2) गजबये बवात ।

(3) गजवतुल अशरह

(4) गजबये बदर ऊला ।

(5) जंगे बदर ।

(6) गजब तुल कदर

(7) गजय तुल अन्सार

(8) गज़वा वाजान

(9) गज़वा सौवक

(10) गज़वा अहृद

(11) गज़वा हृमराउल असद

(12) गजबा जातुर्रिका

(13) गज़वा बदरुल मुअद

(14) गज़वा दौमतुल जन्दल

(15) गज़्वावनी मुस्त लक

(16) गज़वा बनी नजीर

(17) गज़वा खन्दक

(18) गज़वा बनू तिबियान

(19) गजबाजूकुरहृ

(20) गज़वा फतहृ मक्का

(21) गज़वा हृबाजन

(22) गज़वा औतास

(23) गज़वा ताइफ़

(24) गज़वा बनीकीका

(25) गज़वा बनिनुफैर

(26) गज़वा वनी करैता

(27) ग़ज़वे तलूक ।

इन ले 27 मशहूर ग़ज़वाता (लड़ाइयों) के सवाय और बहुत से हमले और जंग हुए हैं जिनकी कुल तादाद 81 के करीब पहुंचती है इस कस्म के सैकडों मुकाबिले और लड़ाइयो के बाद जान के लाले पड़ जाने के डरसे डरपोक देहाती मुसलमान बन गये और जोर वाले बहादुर शेर दिल देहाती जैसे अब्दुल हुकम ईश्वरीय कृपापात्र वगेरह शहीद डोगये । हिसारे की कोम सकी जंग में लखा है क हजरत अली ने मुहम्मद से पूछा क कब तक कत्ल से हाथ न उठाऊं मुहम्मद ने कहा जब तक यह न कहे क अल्लाह एक है और मुहम्मद उसका पैगम्बर है तकतक क़त्ल कर (देखो तारीख अम्बिया सफा ३४६ सतर १५ या १६ सन् १८८१ हिजरी)

गजबा वनी कुरेता की बाबत लखा है क साद वन मआज ने पैगम्बर को कहा क इस बदजात कोम यहूदी का कस्सा तमाम करो गर्ज क लड़ने लायक आदमी मारे गये और बाकी कैद गये चुनांचे कई सौ आदमी कुरैती मदीने से लाकर क़त्ल कये गये । (देखो मौलवी नूरुद्दीन साहब की फसलुल खताब सफा १५९)

सुलह फुदक की बावत लखा है क नुहेफा वन मसऊद खुदा की हिदायत के बमूजिब सुलह फुदक तशरीफ ले गये और उस कौम को इस्लाम फेंलाने का पैगाम देकर जहाद का पैगाम दिया – मगर उन्होंने न सुलह का पैगाम दिया और न लड़ने को बाहर मैदान में निकले । (देखो तारीख अम्बिया सफा ३४७ सन् १२८१ हिजरी)

मुहम्मद साहब के मरने के बाद जो बहस हजरत अबू बकर की खलाफत से पहिले साद वन उवादा बडे आद मयों में से था) सैंकडों मुसलमानों के सामने की है। उससे सारा हाल अरब के इस्लाम में लाने का जाहिर होता है । जैसा क लखा है सादबिन उबादा ने क्रोधातुर होकर कहा क है अन्सार का गरोह तुम सब कपटी हो क तुमको इस्लाम के सब गरोहों पर मान है। क्यों क मुहम्मदी अपनी कौम बाद दश वर्ष के जियादा रहा । और सबसे मदद चाहीं और दीन को जाहिर करता रहा – मगर सवाय चन्द आद मयों के कसी ने ध्यान नहीं दिया और कोई उस मुसीबत के समय साथी न हुआ – मगर थोडे दिन मदीने से रहने से और हमारे कष्ट उठाने से खुदा को यह कृपा हुई क दीन इस्लाम को वह तरवकी हुई जो तुम देखते हो ।

पस खुलासा बात यह है क तुम्हारे कष्ट से सवाय इस के और क्या नतीजा होगा क अब बड़े-बड़े रईस इस्लाम मुहम्मद में दा खल हैं । खलाफत के काम ओर रियासत तुम्हारे कब्जे में रहनी चाहिये । सब अंसार ने कहा क हे साद सच है जो तुमने कहा तेरे सवाय अंसार में कोई बडा नहीं । हमने तुझको अपना सर्दार बनाया और तुमसे बरैयत (प्रतिक्षा) करते है तुझसे जियादा अच्छा खलाफ़त का काम बजाने वाना कोई नहीं है अगर मुहाजिर (पुजारी) इस बारे से कुछ वरोध करेंगे तो हम उनसे कहैगे क अच्छा अमीरी तुम्हारे ही खान्दान में सही और हमारे खान्दान में भी सही । (देखो तारीख अम्बिया सका ३७४ सन् १२९१ हिजरी)

मुहम्मद साहब ने लोगों से वादा कया था क कैंसर और कसरा के खजाने बजरिये गनीमत तुम्हारे हिस्से में आवेंगे मुसलमान होजाओ । पस लोग इसी नियत से मुसलमान हुए थे जैसा क अक्सर मर्तवा उस समय के मुसलमान इन्कार करते और परेशान होते रहे (देखो मुफ्फ सल तारीख अम्बिया सफा ३२४ सन् १२८१ हिजरी ।)

गजवये बदर कुब्रा में साद वगेरह मुसलमानों ने मुहम्मद साहिब को यह रायह दी क तेरे लये एक सुर क्षत तख्त की जगह अलग मुकर्रर कर ओर जरूरी असबाब उसमें रखदे ओर फर काम में लगें । अगर हम जीते तो पहिली सूरत में अपनी जगह सवार होकर मदीने में जावें । हजरतने साद की राय पसंद की और भलाई की दुआ दी और नकबख्त आद मयों की राय के मुताबिक त्तींबवार अमन करने में लग गये और आनन फानन में त्तींब की नींव डाली (देखो तारीख अम्बिया सफा ३०५ सन् १२८१ हिजरी देहली)

गनीमत के माल बांटते पर हमेशा झगड़ेही रहते थे ओर इसी लूट के माल की खातिर पहिले लोग मुसलमान हुए थे और इसी की तर्गीब से मुत लफ वक्तो से मुसलमान होते रहे । (देखो सफा ३१० तारीख अम्बिया ।)

हिजरी की दोम साल में निरपराधो यहूदियों का माल व असबाब लूटा और उनको मदीने से निकाल दिया । चुनाँ च लखा है क तमाम माल व असबाब बुरे काम करने बालों का मुसलमानो के हाथ जाया और पांचवा हिस्सा कायदे के बमूजिब निकाल कर बा क बट गया (देखो सका ३१२ तारीख अम्बिया ।)

साल सोयम हिजरी से कावबिन अशरफ सब उत्तम शायर को सर्फ कुरेश का शायर होने के कारण हजरत मुहम्मद साहब ने एक हीला सोचकर अयुवनामला मुसल्लिमा वगेरह के हाथों से क़त्ल करवा दिया और पैगम्बर पर जान न्योछावर करने बालों ने अयवूराफे वन अ वल हकीक को बेगुनाह क़त्ल कर डाला । देखो सफा २१३ तारीख अम्बिया सन् १२८१ हिजरी ।)

जंग अहद के जिक्र में लखा है क जनाब पैगम्बर की निगाह व हिफाजत में महाजिर (पुजारी) इन्सार ने बडी को शश की इस लडाई में कुरै शयों ने इ त्तफाक कया था इसमें अक्सर पैगम्बर के साथी व चार महाजिर (पुजारी) और ६६ अंसार लडाई के मैदान से मारे गये मुहम्मद साहिब गड्ढे में गर पड़े । पांव से चोट आयी – कम्प जारी हो गया – बडी कठिनता से तलहाने गड्ढे से नीचे उतर कर कंधे पर चढाया और अली ने आहिस्ता आहिस्ता हाथ पकड़ कर बाहर को खींचा और जिस बक्त मुहम्मद बाहर निकले तो दु खत देखा । दांत टूटे हुए पाये जख्मो से खून जारी था आम खबर फ़ैल गई थी क मुहम्मद साहब मारे गये ... अमीर हमजा वगेरह मारे गये कुरैश की औरतों ने उनके नाक कान काट लये – सफा ३१६ व ३१७ तारीख अम्बिया सन् १२८१ हिजरी में

अगर खुदा करता क यह जरासीं और हिम्मत कर जाती तो मुहम्मदी इस्लाम का नाम व निशान न रहता। मगर अफ़सोस क सुस्ती की-बुद् धमानों ने सच कहा है "कार इमरोज़ व फर्द मफगन" (आज का काम कल पर मत छोडो)। हजरत के मरने पर बडा वरोध और ईर्ष्या व झगडा सब अरब में फ़ैल गया हर एक गरोह रियासत चाहता था और दूसरे का वरोधी (देखो तारीख अम्बिया सफा ३७१ से ३७४ तक)

रिसाले मुअजजात में लखा है क हज़रन के मरने के बाद अरब के बहुत से कबीले फर गये ।

सूरे मायदा :- ‘ ‘या अय्योहल्लजीना आमनूं मई यरतद्दा मन्कम अन्दोनही फसोफा यातिल्लाहो बिकौ मन युहिब्बहुम बयोहिब्बूनहू अजिल्लतुम अलल मो मना अइज्जतुन अलल का फरीना व उजाहिदूना की सवी लल्लाह !”

अर्थ :- हे मुसलमानों जो तुम अपने दीन से फर गये एक कोम अल्लाह की तरफ से क़रीब आवेगी क तुम उनको दोस्त रक्खोगे ओर बह का फरों पर जहाद करेंगे अल्लाह के लये ।

ओर अबूउबैदा सही कताबों में लखता है क जिस वक़्त मोहम्मद के मौत की खबर मक्के में पहुंची अक्सर मक्का के लोगों ने चाहा क मुहम्मदी इस्लाम से अलग होजावें चुनाँ च मक्का के अमलाबाले कई दिनों तक डर के मारे घर से बाहर नहीं निकले – मुहम्मद के मरने पर जो लोग इस्लाम से फर गये वह भी तलवार से जीते गये। अन्त से फसाद बढ़ते बढ़ते यहाँ तक नौबत पहुंची क अली खलीफा के वक़्त में तल्लाह ओर जुबैर और आयशा मुहम्मद साहिब की बीबी और मा वया का शाम के मुल्क की तरफ हजरत अली और दूसरे मुसलमानों के साथ लडाई हुई बीबी आइशा ने तलहा के बढावे की सलाह ओर मुहब्बत से लडाई की । शाम के सब मुसलमान अली के मारने पर तय्यार थे जिसमें हजरत अली मय एक लाख साठ हजार फ़ौज के और हजरत माबिया वगैरह भी मय बहुत सी फौज के फरात नदी के कनारे पर लडाई लड़ने आये ६ माह लडाई होती रही ७००० आदमी अली के तरफ़ के और १२००० माबिया की तरफ़ से मुसलमान हताहत हुए। माबिया ने सुलह (सन्धि) का पैगाम भेजा – अलीने अस्वीकार कया लडाई हुई इसमें ३६००० और भी मारे गये अन्त में २२६००० मुसलमानों के मारे जाने के बाद सुलह हुई । इब्न मुलहम मश्र के रहने वाले मो मन (ईमानबाले) ने बड़े प्रेम से एक औरत के निकाह के बदले अली को मारडाला । उस कुतामा नाम ईमानदार औरत ने अपने महर में अली का क़त्ल लखवाया था । इस तरह अरब में इस्लाम बढ़ा और घट गया (देखो तारीख अम्बिया सफा ४४५ व ४४६ सन् १८८१ हिज्र देहली।)

यह मा वया अली के जंग की अग्नि बहुत काल तक प्रज्व लत रही और इसी का अन्तिम परिणाम यह था क अली के लड़कों हसैन व हुसेन का यजीद मा वया के लड़के के साथ इमाम होने का झगडा हुआ और असंख्य मुसलमान दोनों तरफ के क़त्ल हुए (देखो जांगनामा हा मद।)

जो लोग मुस्लमान होते थे उनको माल व संतान वापस मलता था। क़त्ल से बच जाते थे इस वास्ते अक्सर कबीला अरब जब लड़ते लड़ते और खून की नदिया बहाते बहाते तंग आ गए मजबूरन मुस्लमान हो गए चुनाँ च गज़वा तायफ़ में लखा है बाद फतह के एक गरोह हवाज़न (हवा उड़ाने वालो) ने इस्लाम क़बूल कया और आपने उनकी जायदाद और संतान को वा पस दिया फर मा लक वन अताफ जो हुनैन के का फरो की फ़ौज का सरदार था ववश होकर मुस्लमान हुआ और इसका माल व संतान वा पस दी गयी। (देखो तारिख अम्बिया सफा ३६० सन १२८१ हिजरी)

नवी साल के जिक्र में लखा है की गरोह गरोह अरब के कबीले शौकत व इस्लाम की तरक्की देखकर मुस्लमान हो गए यहाँ तक की नाम इस साल का “सनतुल वफूद” वफ़ादारी का साल कहते हैं (देखो सफा ३६१ तारिख अम्बिया १२८१ हिजरी)

फर लखा है क मुसलमानो को जीत पर जीत होने से आस पास के मुशरिक लोग दिक्कते व परेशानी उठाने के बाद इस्लाम की शरणागत हुए और का फरपन भूल गए। (तारिख अम्बिया सफा ३८९ व ३६०)

अरब में गुलामी का आम दस्तूर अब तक मौजूद है। और वह हज़रत के वक़्त से जारी है। लौंडी और गुलाम जिस तरह मक्का में भेजे जाते हैं और ख्वाजा सराय बनाये जाते हैं और मक्का मौज़मा और मदीना मनव्वर बल्कि रोज़ह मुतहरह पर ख्वाजा सरायो का यकीन है। निहायत अफ़सोस के काबिल है और फर कहा जाता है की दीन इस्लाम में जबर करना जायज़ नहीं।

एक योग्य और प्रतिष्ठित इतिहास लेखक लखता है की अरब वाले नूह की संतान नहीं है बल्कि कृष्ण लड़के शाम की संतान में से हैं और इसी वास्ते वह शामी कहलाते हैं द्वारिका से ख़ारिज हो जाने के बाद शाम जी अरब मय (साथ) अपने सम्बन्धियों व सेवको के आ गए और उसी रोज़ से अरब आबाद हुआ वर्ना इससे पहिले वहाँ आबादी नहीं थी और अरब शब्द संस्कृत का है (यानि आर्यावः) यानी आर्यो का रास्ता मुल्क मश्र को आर्यो की यात्रा का रास्ता और अरब का अंग्रेजी नाम अरेबिया को देखने से यह बात समझ में आजाती है। पस दरहक़ीक़त अरब के लोग शाम जी कृष्ण के बेटे की संतान में हैं।

साभार –

गौरव गरी पं डत लेखराम जी की अमर रचनाओ में से एक पुस्तक

जिहाद – कुरआन व इस्लामी ख़ूँख़ारी

बिलकुल जिस प्रकार लेखराम जी लख कर गए हैं उसी प्रकार लखा गया ता क समस्त मानव जाती इस्लाम का सच जान सके –

लखने में यदि कही कोई त्रुटि या कुछ भूल चूक हो तो क्षमा करे –

नमस्ते —

रोम कस तरह मुसलमान हुआ ।

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

जिस तरह हमने अरब का वर्णन वश्वासनीय इतिहास की साक्षी से सद्ध कया है क वह कस जोर जुल्म से मजबूर होकर मुसलमान हुआ और कस कदर लूट घसूट से दीन मुहम्मदी कस ग़रज़ से फैलाया गया । वहीं हाल रूम व शाम का है। चुना च इसका खुलासा हाल फतूह शाम में दर्ज है और दरहकीकत वह देखने के लायक और दीन इस्लाम की कदर

जानने के लए उम्दाह कताब है ।

मुआज़ वनज़वल ने जो उवेदह की तरफ से दूत बनकर आया था वतारका हा कम रूम से कहा क या तो ईमान लाओ कुरान पर मुहम्मद पर या हमें जिजिया दो नहीं तो इस झगडे का फैसला तलवार करेगी हो शयार रहो (देखो तारीख अम्बिया सका ४१३ सन् १२८१ हिजरी)

अबु उवैदाने जो अर्जी मो मनों के अमीर उमर को लखी उसमें लखा था क इसलाम की फौज हर तरफ को भेज दी गई है क जाओ जो जो इस्लाम कबूल करे उनको अमन दो ओर जो इस्लाम कबूल न करे उन्हें तलवार से क़त्ल कर दो। (सफा ४०१ तारीख अम्बिया सन् १२८१ हिजरी) ।

हज़रत अबू बक्र ने उसामा को सपहसलार मुकर्रर करके लश्कर को जहाद के वास्ते शाम के देश से भेजा । उसने वहां जाकर उन के खण्ड मण्ड कर दिये और तमाम का फरों की नाक में दम कर दी जो घबराकर अपने देश को छोड़कर भाग गये । ओर मारता डाटता वहाँ तक जा पहुचा हवाली के लोगों से बदला लया और फर बहुत सा माल लेकर दबलीफा रसूल की खदमत में हाजिर हुआ । उस बक्त लड़ने बालों की कमर टूट गयी क्यों क उन नादानों का गुमान था क अब इस्लाम में बन्दोबस्त न रहेगा। और इस कदर ताकत न होगी क जहाद कर सकें । (देखो तारीख अम्बिया सका ३७६ व ३७७ सन् १२८१ हिजरी)

शाम की जीत के लये जो पत्र हजरत अवू वक्र सद्दीक ने जहाद की हिजरत (तीर्थयात्रा) के बास्ते मुअज्जम (बड़े) मक्का के लोगों के लये उसमें लखा है क कर्बला और शाम के दुश्मनों (देखो सफा १३ जिल्द १ फतूह शाम मतवूआ नवल कशोर सन् १२८६ हिजरी)

फर बही इतिहास वेत्ता लूट का माल हाथों हाथ आने का वर्णन करके लखता है क यजीद लड़का सू फयाना का और रुवैया अ मर का लड़का जो इस लश्कर के सर्दार थे कहा क मुना सब है की सब माल जो रु मयों से हाथ लगा है हजरत सद्दीक के हुजूर में भेजा जावे ता क मुसलमान उस को देखकर रु मयों के जहाद का इरादा करें । (फतूह शाम जिल्द १३ सन् १२८६ हिजरी)

हज़रत बक्र सदीक शाम के जाने के बक्त यह वसीयत उमेर आस के लड़के को करते थे क डरते खुदा से और उसकी राह में लडो और का फरो को क़त्ल करों । (जिल्द अव्वल फतूह शाम सका १९)

शाम की एक लडाई से ६१० कैदी पकडे आये। उमरबिन आस न उन पर इस्लाम का दीन पेश कया पस कोई उनमें का मुसलमान न हुआ फर हुक्म हुआ क उनकी गर्दनें मार दी जावें (जिल्द अव्वल फतूह शाम सफा २५ नवल कशोर)

द मश्क के मुहा सरे की लडाई में लखा है। फर खा लद वन बलीद ने कलूजिस ओर इजराईल को अपने सामने बुलाकर उन पर इस्लाम होने को कहा मगर उन्होंने इंकार कया पस बमूजिब हुक्म वलीद के बेटे खा लद और अज़ूर के लड़के जरार ने इजराईल को ओर राथा बिन अमरताई ने कलूजिस को कत्ल कया (देखो फ़तूह शाम जिल्द अव्वल सफ़ा ५३ नवल कशोर)

 कताब फाजमाना तुक हिस्सा अव्वल जो देहली से छपा उसमें लखा है क तीन सौ साल तक मुसलमान रूम के हुक्म से हर साल १००० ईसाइयो के बच्चो को क़त्ल करने वाली फ़ौज में जबरन भर्ती करके मुसलमान कया जाता था और उनको ईसाइयो के कत्ल और जंग पर आमादह कया जाता था सर्फ यहाँ तक ही संतोष नहीं कया जाता था बल्कि
ईसाइयों के निहायत खूबसूरत हजारों बच्चे हर साल गलमाँ बनाये जाते और उनसे रूमी मुसलमान दीन वाले प्रकृति के वरूद्ध (इगलाम-लौंडेबाजी) काम के दोषी होते थे। और जवान होकर उन्हीं गाज़ियो के गरोह में शा मल कये जाते थे क बहिश्त के वारिस हों।
अलमुख्त सर मुफस्सिल देखो असल कताब ।)

जिस तरह खलीफों के वक़्त में जबरन गरजे गराये जाते ब बर्बाद जिये जाते थे इसी तरह शाम रूम ने भी जुल्म सतम से गरजाओं को मसजिद बना दिया ।

साभार –
गौरव गरी पं डत लेखराम जी की अमर रचनाओ में से एक पुस्तक
जिहाद – कुरआन व इस्लामी ख़ूँख़ारी

इस्लाम और ईसाइयत का इतिहास एक नज़र में

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

क्या हजरत आदम और उनकी बेगम हव्वा – कभी थे भी ?????

ये सवाल इस लए बहुत महत्वपूर्ण है – क्यों क – ये जानना बहुत जरुरी है इस लए नहीं क कोई मनगढंत बात है या सवाल है –

क्या कोई वैज्ञानिक प्रमाण मला है आज तक जो इनके प्रेम प्रतीक –
अथवा त्याग और ब लदान की मसाल पेश करे ??

अब कुछ लोग (ईसाई और मुस्लमान) अपने अपने धारणा के हिसाब से बेबुनियाद बात करते हुए कहेंगे की –

ये जो मानव जाती है – ये इन्ही आदम और हव्वा से चली है – जो की "स्वघो षत" अल्लाह मयां अथवा तथाक थत परमेश्वर "यहोवा" ने बनाई थी –

जब बात आती है – भगवान श्री राम और योगेश्वर श्रीकृष्ण आदि की तो इन्हे (ईसाई और मुस्लमान) को ठोस प्रमाण चाहिए –

जब क – रामसेतु इतना बड़ा प्रमाण – श्री लंका – खुद में एक अकाट्य प्रमाण – फर भी नहीं मानते –

महाभारत के इतने अवशेष मले – आज भी कुरुक्षेत्र जाकर आप स्वयं देख सकते हैं – दिल्ली (इंद्रप्रस्थ) पांडवकालीन कला आज भी मौजूद है जिसे पुराना कला के नाम से जाना जाता है।

इतना कुछ है – फर भी कुछ समूह (ईसाई और मुस्लमान) मूर्खो जैसे वही उवाच करते हैं – प्रमाण लाओ –

आज हम इस समूह (ईसाई और मुस्लमान) से कुछ जवाब मांगते हैं –

1. हज़रत आदम और हव्वा यदि मानवो के प्रथम पूर्वज हैं तो – क्यों औरत आदमी से पैदा नहीं होती ???? ऐसा इस लए क्यों क प्रथम औरत (हव्वा) आदम की दाई पसली से नि र्मत की गयी – क्या कसी शैतान ने बाइबिल और क़ुरान के तथाक थत अल्लाह का निज़ाम उलट दिया ?? या कोई और शक्ति ने ये चमत्कार कर दिया ??? जिसे आज तक अल्लाह या यहोवा ठीक नहीं कर पाया – यानि की एक पुरुष संतान को उत्पन्न करे न की औरत ???

2. यदि बाइबिल और क़ुरान की ये बात सही है क यहोवा या अल्लाह ने हव्वा को आदम की पसली से बनाया तो आदम यानि की सभी पुरुषो की एक पसली क्यों नहीं होती ???????? और जो हव्वा को एक पसली से ही पूरा शरीर नि र्मत कया तो हव्वा को भी एक ही पसली होनी चाहिए – या यहाँ भी कोई शैतान – यहोवा या अल्लाह पर भारी पड़ गया और यहोवा और अल्लाह की बनाई संरचना में – बड़ा उलटफेर कर दिया जिसे आजतक यहोवा या अल्लाह ने कटाई छटाई का हुक्म देकर अपना बड़प्पन साबित करने की नाकाम को शश की ???????

3. यहोवा या अल्लाह ने आदम और हव्वा की संरचना कहा पर की ?? क्या वो स्थान कसी वैज्ञानिक अथवा researcher द्वारा खोज गया ????

4. हज़रत आदम और हव्वा ने ऐसा क्या काम कया जिसकी वजह से उन दोनों को स्वर्ग (अदन का बाग़) से बाहर निकल दिया गया ?? क्या अपने को नंगा जान लेना और जो कुछ बन पाये उससे शरीर को ढांप लेना – क्या गुनाह है ????? क्या जीवन के पेड़ से बुद् ध को जागरूक करने वाला फैला खाना पाप था ????? ये पेड़ कसके लए स्वर्ग (अदन का बाग़) में बोया गया और कसने बोया ???? क्या खुद यहोवा या अल्लाह को ऐसे पेड़ या फल की आवश्यकता थी या है ??? अगर नहीं तो फर आदम और हव्वा को खाने से क्यों खुद यहोवा या अल्लाह ने मना कया ??? क्या यहोवा या अल्लाह – हज़रत आदम और हव्वा को नग्न अवस्था में ही रखना चाहते थे ???? या फर यहोवा या अल्लाह नहीं चाहता था की वो क्या है इस बात को हज़रात आदम या हव्वा जान जाये ????

5. यहोवा या अल्लाह द्वारा बनाया गया – अदन का बाग़ – जहा हजरत आदम और हव्वा रहते थे – जहा से शैतान ने इन दोनों को सच बोलने और यहोवा या अल्लाह के झूठे कथन के कारण बाहर यानि पृथ्वी पर फकवा मारा – बेचारा यहोवा या अल्लाह – इस शैतान का फर से कुछ न बिगाड़ पाया – खैर बिगाड़ा या नहीं हमें क्या करना – हम तो जानना चाहते हैं – ये अदन का बाग़ मला क्या ??????

6. यहोवा या अल्लाह द्वारा – आदम और हव्वा को उनके सच बोलने की सजा देते हुए और अपने लए उगाये अदन के बाग़ और उस बाग़ की रक्षा करने वाली खडग (तलवार) से आदम और हव्वा को दूर रखने के लए पृथ्वी पर भेज दिया गया। मेरा सवाल है – कस प्रकार भेजा गया ??? क्या कोई वशेष वमान का प्रबंध कया गया था ???? ये सवाल इस लए अहम

है क्यों क बाइबिल के अनुसार यहोवा उड़ सकता है – तो क्या उसकी बनाई संरचना – आदम और हव्वा को उस समय “पर” लगाकर धरती की और भेज दिया गया – या कोई अन्य वकल्प था ???

ये कुछ सवाल उठे हैं – जो भी कुछ लोग (ईसाई और मुस्लमान) श्री राम और कृष्ण के अस्तित्व पर सवाल उठाते हैं – अब कुछ ठोस और इतिहास की नज़र में ऐसे अकाट्य प्रमाण लाओ जिससे हज़रत आदम और हव्वा का अस्तित्व साबित हो सके – नहीं तो फ़र्ज़ी आधार पर की गयी मनगढंत कल्पनाओ को खुद ही मानो – और ढोल पीटो – झूठ के पैर नहीं होते – और सत्य कभी हारता नहीं – ध्यान रखना –

वो जरा इन सवालो के तर्कपूर्ण और वैज्ञानिक आधार पर जवाब दे – नहीं तो अपना मुह बंद रखा करे।

नोट : कृपया दिमाग खोलकर और शांतिपूर्ण तरीके से ता र्कक चर्चा करे – आपका स्वागत है – गाली गलौच अथवा असभ्य बर्ताव करने पर आप हारे हुए और जानवर घो षत कये जायेंगे।

सहयोग के लए –

धन्यवाद –

इस्लाम में आज़ादी ? एक कड़वा सच

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

कोई व्यक्ति अपने मत को त्यागकर

इस्लाम मत को अपना ले तो कोई सजा का प्रावधान नहीं।

ले कन जैसे ही

इस्लाम मत को छोड़कर अन्य मत अपना ले

तो उसकी सजा मौत है।

क्या अब भी इस्लामी तालीम में कोई स्वतंत्रता बाकी रही ???

क्या मृत्यु के डर से भयभीत रहने को आज़ादी कहते हैं ???

क्या अल्लाह वास्तव में इतना निर्दयी है की केवल मत बदलने से ही जन्नत जहन्नम तय करता है – तो कैसे अल्लाह दयावान और न्यायकारी ठहरा ?

सच्चाई तो ये ही है की जब तक इस्लाम नहीं अपनाया जाता – वह व्यक्ति स्वतंत्र होता है – पर जैसे ही इस्लाम अपनाया वह आ शक़ – ए – रसूल बन जाता है –
अर्थात हज़रत मुहम्मद का गुलाम होना स्वीकार करता है –

अल्लाह ने सबको आज़ादी के अ धकार के साथ पैदा कया – यदि क़ुरआन की ये बात सही है तो कैसे मुस्लमान अपने को मुहम्मद साहब के गुलाम (आ शक़ – ए – रसूल) कहलवाते हैं ????

क्या इसी का नाम आज़ादी है ????

तो गुलामी का नाम क्या होगा ??

ऐसी स्ति थ में मानवीय स्वतंत्रता कहाँ है ???????

वैचारिक स्वतंत्रता कहाँ हैं ??????

धा र्मक स्वतंत्रता कहाँ है ?????

शारीरिक स्वतंत्रता कहाँ हैं ????

http://navbharattimes.indiatimes.com/…/article…/45219309.cms

ए मुसलमानो जरा सोच कर बताओ ……………………….

कहाँ है आज़ादी ????????????????

क़ुरआन में परिवर्तन

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

आज तरह सौ वर्ष से हमारे मुस्लमान भाई कहते चले आ रहे हैं की हमारे कुरआन शरीफ में कसी प्रकार का भी कोई परिवर्तन अर्थात फेर-बदल नहीं हुआ इस लए ये (क़ुरआन) खुदाई कताब है। परन्तु हमें अपने कई वर्षो के अति गहन निरिक्षण करने के पश्चात इस बात का पूरा पूरा पता लग गया है की कुरआन में बहुत कुछ परिवर्तन अर्थात फेरबदल हो चूका है जिसका एक अंश हम क़ुरान शरीफ की अक्षर संख्या के सम्बन्ध में इस्लामी साहित्य के बड़े बड़े वख्यात वद्वानो के लेखानुसार आप सज्जनो की भेंट करते हैं, अवलोकन कीजिये।

कसके मत में कुरआन की अक्षर संख्या कतनी थी ?

क्रमांक …………………. मत का नाम ……………… अक्षर संख्या

1………. सुयूती इब्ने अब्बास के कुरआन में ……………. 323671

2………. सुयूती उ मब्नेखताब के कुरआन में …………. 1027000

3……… सराजुल्कारी अब्दुल्ला इब्ने मसऊद …………. 322671

4……… सरजुल्कारी मुजाहिद के कुरआन में …………. 321121

5………ऊम्दतुल्ब्यान अब्दुल्ला इब्ने मसऊद ………… 322670

6……… सराजुल्कारी प्रस्तुतकर्ता …………………… 3202670

7………ऊम्दतुल्ब्यान प्रस्तुतकर्ता …………………….. 351482

8………कसीदतुल करात प्रस्तुतकर्ता ……………….. 3202670

9………दुआय मुतबर्रकः प्रस्तुतकर्ता …………………. 445483

10………रमूजूल कुरआन मुहम्मद हसनअली ………….. 40265

जवाब दो मुस्लमान मत्रो – ये क्या स्पष्ट मलावट नहीं दिखती ????

अगर नहीं तो कैसे ?????????

साभार : क़ुरआन में परिवर्तन
लेखक – मौलाना गुलाम हैदर अली "उर्फ़" पं डत सत्यदेव "काशी"

इस्लाम में स्त्री और पुरुष का बराबरी का हक़ महज एक "अन्ध वश्वास" है

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

इस्लाम में स्त्री और पुरुष का बराबरी का हक़ महज एक
"अन्ध वश्वास" है – और इस अन्ध वश्वास का जितनी जल्दी हो सके निर्मूलन होना ही चाहिए –

अब आप पूछोगे इसमें अन्ध वश्वास क्या है ? इस्लाम तो नारी को बराबरी का दर्ज़ा हज़रत मुहम्मद के समय से देता चला आ रहा है –

तो भाई मेरा जवाब वही है की आँख मूँद कर बुद् ध से बिना समझे कसी बात को मान लेना ही तो अन्ध वश्वास है – और यही अन्ध वश्वास के चक्कर में बहुत से नादान फंस जाते हैं – खासकर युवतियां –

उन युवतियों में भी वशेषकर जो हिन्दू – बौद्ध – सख – जैन – ईसाई – आदि सम्प्रदायों से सम्बन्ध रखती हैं – उन्हें तो वशेष कर इस पोस्ट को ध्यान से पढ़ना चाहिए –

दारुल उलूम – ये वो नाम है जो इस्लामी कायदे कानूनों के बारे में लोगों (मुसलमानो) के संदेहों का निराकरण करने वाली संस्था है। और प्रत्येक मुस्लमान (मुस्लमान मतलब जो

मुसल्लम ईमान है – यानि अपने ईमान का पक्का) वो अपने ईमान से जुडी इस संस्था के फतवो को कैसे नज़र अंदाज़ कर सकता है ? यानी एक पक्के और सच्चे मुस्लमान के लए इन फतवो को लेकर कोई गलत फहमी नहीं – जो कह दिया वो पत्थर की लकीर – यही तो ईमान है। क्यों क इस संस्था के फतवे अपने खुद के घर की जागीर नहीं होते – बल्कि इस्लामी कायदे क़ानून – खुदा की पुस्तक क़ुरान (ऐसा मुस्लिम बोलते हैं) तथा हदीसो (इस्लामी परिभाषा में, पैग़म्बर मुहम्मद के कथनों, कर्मों और कार्यों को कहते हैं)

अब चाहे कोई मुस्लिम कसी फतवे को माने या तो ना माने मगर अपने स्वार्थ की पूर्ती के लए तो फतवा बनवा ही सकता है – ऐसी आशंका होनी लाज़मी है – आईये एक नज़र डालते हैं –

"देवबंद ने अपने एक फतवे में कहा क इस्लाम के मुताबिक सर्फ पति को ही तलाक देने का अ धकार है और पत्नी अगर तलाक दे भी दे तो भी वह वैध नहीं है।"

जी हाँ – पढ़ा आपने – केवल एक पुरुष ही तलाक दे सकता है – यानि की पुरुष को ही तलाक देने का "अ धकार" है – स्त्री को कोई अ धकार नहीं – और अगर स्त्री दे भी दे तो भी "वैध" नहीं –

ये है इस्लाम का सच – तो कैसे स्त्री पुरुष – इस्लाम की नज़र में एक बराबर हुए ???????

आइये कुछ और फतवो के बारे में बताते हैं –

"एक व्यक्ति ने देवबंद से पूछा था, पत्नी ने मुझे 3 बार तलाक कहा, ले कन हम अब भी साथ रह रहे हैं, क्या हमारी शादी जायज है? इस पर देवबंद ने कहा क सर्फ पति की ओर से दिया तलाक ही जायज है और पत्नी को तलाक देने का अ धकार नहीं है।"

"इसके अलावा देवबंद ने अपने एक फतवे में यह भी कहा क पति अगर फोन पर भी अपनी पत्नी को तलाक दे दे तो वह भी उसी तरह मान्य है जैसे सामने दिया गया।"
"एक फतवे में कहा गया क इस्लाम के हिसाब से महिलाओं के टाइट कपड़े पहनने की मनाही है और लड़ कयों की ड्रेस ढीली और साधारण होनी चाहिए।"

"गर्भनिरोधकों के इस्तेमाल पर भी देवबंद ने एक फतवा जारी कर सनसनी फैला दी। एक व्यक्ति ने देवबंद से पूछा क उसकी पत्नी को थायराइड की समस्या है, जिसके चलते उसके गर्भवती होने से बच्चे पर असर पड़ सकता है। ऐसी स्थिति से बचने के लए उसे डॉक्टर ने गर्भनिरोधक के इस्तेमाल की सलाह दी है और क्या वह इस्लाम के मुताबिक गर्भनिरोधक का इस्तेमाल कर सकता है?" –

अब दे खये और जानिये इस बारे में फतवा क्या कहता है –

"इसके जवाब में देवबंद ने कहा क डॉक्टर की सलाह के बाद उसे इस बारे में हकीम से परामर्श लेना चाहिए और अगर वह भी उसे गर्भनिरोधक का उपयोग करने की सलाह देता है, तो वह ऐसा कर सकता है।"

आप समझ रहे हैं ????

चाहे पत्नी मरने की कगार पर हो – मगर एक सच्चे मुसलमान के लए अपनी पत्नी के इलाज से पहले फतवे से ये जानना की क्या जायज़ (वैध) है और क्या नाजायज़ (अवैध) है – उसकी पत्नी की जान से ज्यादा जरुरी है – अभी भी शक है की सच्चा और पक्का मुस्लमान फतवो को नहीं मानेगा ???????? जब क वो हर एक काम को जायज़ या नाजायज़ पूछने के लए मुल्लो मौलवी के फतवो की बांट जोहता है (इन्तेजार करता है)

ये खुद में क्या एक जायज़ बात है ????

मतलब की डॉक्टर जो मॉडर्न वज्ञानं पढ़के – डग्री लेके बैठा है – उसकी बात पर वश्वास नहीं है – मगर एक झोलाछाप और बिना एक्सपीरियंस का हकीम सलाह दे तो वो वैध है –

वाह भाई वाह – क्या वज्ञानं है – क्या ज्ञान है –

आगे भी दे खये –

"देवबंद ने महिलाओं को काजी या जज बनाने को भी लगभग हराम करार दे दिया। देवबंद ने इस बारे में पूछे गए सवाल के जवाब में फतवा देते हुए कहा महिलाओं को जज बना सकते हैं, ले कन यह लगभग हराम ही है और ऐसा न करें, तो ज्यादा बेहतर है।"

अब भी कोई गुंजाईश बाकी है क्या की इस्लाम में स्त्री पुरुष को सामान अ धकार प्राप्त हैं की नहीं ?????

बात सर्फ काजी या जज की नहीं है – बात असल में है की यदि कोई स्त्री काजी बन गयी – तो फर स्त्रियों के हक़ में और फायदे के लए फतवे आने शुरू होंगे तब दिक्कत हो जाएगी – इस लए काजी नहीं बन सकती कोई मुस्लिम महिला – इस बात का भी ग णत सम झए की कोई महिला जज भी ना बने – तो भाई इसका मतलब तो यही हुआ की महिलाओ या लड़ कयों को श क्षत करना ही इस्लाम के खलाफ है – या फर हायर स्टडी करना ही मुस्लिम महिलाओ के लए हराम है –
क्यों क इतना पढ़ना फर कस लए जब वो उस मुक़ाम पर ही न पहुंच पाये ????????

आगे सुनिए –

"देवबंद ने कहा क यह हदीस में भी दिया गया है, जिसका मतलब है क जो देश एक महिला को अपना शासक बनाएगा, वह कभी सफल नहीं होगा। इस लए महिलाओं को जज नहीं बनाया जाना चाहिए।"

ये दे खए नारी वरोधी एक और फतवा – पता नहीं कस समाज के ऐसे लोग हैं जिनमे बुद् ध २ पैसे की भी नहीं –

क्या इस्लामी हदीस स्त्रियों के वरुद्ध है या ये मुल्ला मौलवी अपनी तरफ से ऐसी बे सर पैर के फतवे जारी कर रहे हैं –

ये सोचना – समझना आपका काम है –

कसी भी जाती की नारी हो – उसका सम्मान – उसको बराबरी का दर्ज़ा ये उसका हक़ है बल्कि नारी जो निर्मात्री है – ऐसा वेद कहते हैं –
"नारी को ऊँचा दर्ज़ा है"

अब आप एक बार स्वयं वचार करे की जिन कताबो की बिनाह पर ये मुल्ले मौलवी इन फतवो को तैयार करते हैं – वो मुहम्मद साहब से ज़माने से चली आ रही हैं – अब या तो उन कताबो में स्त्री से वैर है तभी ऐसे फतवे आ रहे या फर मुल्ले मौलवी अपनी तरफ से ऐसे फतवे तैयार कर रहे –

अब सच क्या है ?????

आप युवतियां, महिलाये, नारियो – स्वयं वचारो – क्यों क आप निर्मात्री हो – समाज की – वर्तमान की और आने वाले इसी मानव समाज के उज्जवल भ वष्य की

नमस्ते –

क़ुरआन सीरियाई शब्द है, तो सम्पूर्ण क़ुरआन अरबी में कैसे ?

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

क़ुरआन शब्द – सीरिया भाषा के "केरयाना" शब्द से लया गया था – जिसका अर्थ होता है – "शास्त्र पढ़" – इसे बदल कर क़ुरआन कर दिया गया – जिसका मतलब होता है – "वह पढ़ा" अथवा "उसे सुनाई" –

दूसरी बात की क़ुरआन में अल्लाह ने बोला है – क़ुरआन को वशुद्ध अरबी भाषा में दिया गया –

तो संशय ये है की सीरियन भाषा – इस्लाम आने के ५०० साल लगभग पहले से वद्यमान है – फर ऐसा क्यों की सीरिया की भाषा को प्रयोग करके "क़ुरआन" शब्द को रचा गया ???

क्या अल्लाह मयां नया शब्द देने में माहिर न थे ???

नोट : क़ुरआन में अल्लाह मयां बहुत जगह ऐसा कहे हैं की क़ुरआन को वशुद्ध अरबी में नाज़िल कया –

तब ऐसा क्यों है की क़ुरआन में अरबी के अलावा 74 अन्य भाषाओ का वजूद मलता है ????

क्या अल्लाह ने अनेक भाषाओ के शब्द चोरी कये ???

या अन्य भाषाओ के अरबी शब्द ईजाद नहीं कये जा सके ??

या फर अल्लाह मयां थोड़ा झूठ बोल गए की क़ुरआन वशुद्ध अरबी में है ????

क्यों क क़ुरआन में अरबी भाषा के आलावा अन्य बहुत सी भाषाए हैं जिनसे कोई मुस्लिम भी इंकार नहीं कर सकता – इससे ये सम्भावना प्रबल होती है की क़ुरआन शब्द वशुद्ध अरबी नहीं है –

भाई सच क्या है – कोई मुस्लिम मत्र जरा सत्य से अवगत करावे –

मनुष्य का सैद्धांतिक और नीतिगत भोजन शाकाहार है, मांसाहार नहीं।

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

भोजन की बात होती है – तो सैद्धांतिक तौर पर – भोजन वो होना चाहिए – जिससे न तो कसी का दोष लगा हो – ना पाप करके चोरी करके लाये हो – न ही हत्या अथवा हिंसा करके –

हिंसा कहते हैं – जो वैर भाव से कया गया कृत्य हो।

ले कन यदि हम भोजन के तौर पर देखे की क्या खाया जाये – तो एक निर्धारण होता है – एक नियम है – उसकी और ध्यान देना आवश्यक है – क्यों क ईश्वर ने मनुष्य बनाया तो उसकी भोजन सामग्री भी अवश्य बनाई होगी और वो ऐसी होनी चाहिए जो सुगम हो सर्वत्र हो आक षत करने वाली हो – जो हमारे खाने योग्य हो –

तो ऐसी क्या चीज़ ईश्वर ने बनाई ?

पशु ? पक्षी ? बकरा ? मुर्गा ? बैल ? गाय ? सूअर ?

जी नहीं – क्यों क न तो इनको देखकर खाने का आकर्षण होता – और न ही इन पशुओ को आपसे वैसा भय रहता जैसे की चीता शेर आदि हिंसक जानवरो से – यदि ये पशु मनुष्य के लए बने गए होते तो आपके दांत – नाख़ून – पंजे – पेट की आंत – भोजन नली – आदि सब हिंसक जानवरो – पशुओ जैसी होती – जब क ऐसा नहीं है –

पर यदि आप ध्यान से देखो – तो आपको सुन्दर प्राकृतिक वन – पेड़ पौधे – फल फूल – सुन्दर सुन्दर खुशबू – फूलो का प्राकर्तिक सौंदर्य आपके मन को भाता है – हम अपने घर आँगन को ऐसी ही सजाते हैं –

यदि हमें प्राकर्तिक तौर पर माँसाहारी बनाया होता तो हमें पेड़ पौधों फूलो की अपेक्षा हड्डी मांस खून आदि से वशेष लगाव होता – और अपने घर आदि भी ऐसे ही हड्डी मांस खून आदि से सजाते – जब क ऐसा नहीं होता।

वशेष बात है की – जब हम पेड़ से आम तोड़ते या धान गेहू की फसल काटते तो कोई भागता नहीं है – क्यों क वो भागने के लए बनाये ही नहीं – और इसमें हिंसा भी नहीं हुई क्यों क वैर भाव नहीं था वो जीवो के भोजन हेतु ही बनाये गए हैं – ये सद्ध होता है।

दुनिया में सभी शाकाहारी है – क्यों क बिना शाक – गेहू ज्वर बाजरा सरसो – मूली टमाटर = कुछ नहीं बना सकते – न खा ही सकते – इस लए दुनिया का कोई मनुष्य अपने को शाकाहारी नहीं हु ऐसा सैद्धांतिक तौर पर नहीं कह सकता –

पर कुछ लोग वो खाते हैं जो सभी मनुष्य नहीं खाते –
और जो सब मनुष्य खाते हैं उसे ही शाकाहार कहा जाता है

इस लए शाकाहारी तो सभी हैं – मांसभक्षी भी शाकाहार ही खाता है – पर क्यों क सभी मनुष्य मांस नहीं खाते इस लए वो अपने को मांसाहारी भी कहता है – और बिना शाकाहार उसका मांस व्यर्थ है – इस लए क्यों नहीं शाकाहार अपनाया जाये ?

शेष फर कभी………

ईश्वर निराकार है – एक तर्कपूर्ण समाधान

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

शंका निवारण :

पूर्वपक्षी : क्या ईश्वर के हाथ पाँव आदि अवयव हैं ?

उत्तरपक्षी : ये शंका आपको क्यों हुई ?

पूर्वपक्षी : क्यों क बिना हाथ पाँव आदि अवयव ईश्वर ने ये सृष्टि कैसे रची होगी ? कैसे पालन और प्रलय करेगा ?

उत्तरपक्षी : अच्छा च लए में आपसे एक सवाल पूछता हु – क्या आप आत्मा रूह जीव को मानते हैं ?

पूर्वपक्षी : जी हाँ – में आत्मा को मानता हु – सभी मनुष्य पशु आदि के शरीर में है – पर ये मेरे सवाल का जवाब तो नहीं – मेरे पूछे सवाल से इस जवाब का क्या ताल्लुक ? कृपया सीधा जवाब दीजिये।

उत्तरपक्षी : भाई साहब कुछ जवाब खोजने पड़ते हैं – खैर च लए ये बताये शरीर में हाथ पाँव आदि अवयव होते हैं क्यों क जीव को इनसे ही सभी काम करने होते हैं – पर जो आत्मा होती है उसके अपने हाथ पाँव भी होते हैं क्या ?

पूर्वपक्षी : नहीं होते।

उत्तरपक्षी : क्यों नहीं होते ?

पूर्वपक्षी : #$*&)_*&(*#$*$()
(सर खुजाते हुए – कोई जवाब नहीं – चुप)

उत्तरपक्षी : जब एक आत्मा जो सर्वशक्तिमान ईश्वर के अधीन है – बिना हाथ पाँव अवयव आदि के – मेरे इस शरीर में वद्यमान रहकर – शरीर को चला सकती है – तो ईश्वर जो सर्वशक्तिमान है – वो ये सृष्टि का निर्धारण उत्प त्त प्रलय सञ्चालन वो भी बिना हाथ पाँव आदि अवयव क्यों नहीं कर सकता ? इसमें आपको कैसे शंका ? कमाल के ज्ञानी हो आप ?

पूर्वपक्षी : #$*&)_*&(*#$*$()
(चुपचाप गुमसुम चले गए)

ईसा मुक्तिदाता नहीं – बाइबिल

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

मुख्य रूप से मान्य ग्रन्थ तो ईसाइयो का ही है – पर कुछ भारतीय मुख्य रूप से हिन्दू भाई खासकर – आदिवासी – पछड़ा वर्ग एवं हमारे अति प्रय द लत भाई तथा कुछ ऐसे परिवार भी जो पढ़े लखे समझदार हैं धनाढ्य भी पर फर भी अपने सत्य सनातन शुद्ध वैदिक धर्म को त्याग – अन्ध वश्वास पाखंड और अनाचार में न जाने क्यों प्रवत्त होते जा रहे है ?

शायद इसकी एक बड़ी वजह है – ईसाई मशनरियों द्वारा हिन्दुओ के मानस पटल पर अं कत देवी देवताओ की भाव भं गमाओं रूपों आकृति से मलते जुलते रूप आकार आदि से ईसा की लुभावनी मूर्ति फोटो आदि बना कर "हिन्दुओ" के देवी देवताओ में "सबसे बड़ा देवता" अथवा "ईश्वर पुत्र" घो षत करवाना और "इकलौता मुक्तिदाता" बताकर धर्मांतरण करवाना यदि इससे काम न बने तो हिन्दुओ खासकर गरीब, निर्बल, आदिवासी तथा द लत भाइयो को धन का लालच देकर उनको ईसाई बनाना।

आ खर हिन्दुओ के देवी देवताओ की शरण में इस मुक्तिदाता को क्यों जाना पड़ा ? ऐसी क्या मजबूरी ईसाइयो के लए हो गयी की जिस ईसा को मुक्तिदाता बताते नहीं थकते उसे हिन्दू देवी देवताओ के जैसे रूप आकर आदि से हिन्दुओ को दिखाकर मुर्ख बनाकर ठगने का गोरखधंधा आ खर एक अन्ध वश्वास नहीं तो क्या है ? यदि हिन्दुओ के देवी देवता मुक्ति नहीं दे सकते तो कस प्रकार ईसा उन्ही देव देवी के रूप आकार धारण कर मुक्ति करवाएगा ?

आइये एक नजर डाले आ खर ईसा अकेला मुक्तिदाता कैसे ? ये सवाल इस लए बहुत महत्वपूर्ण है क्यों क ईसा से भी बड़ा मुक्तिदाता था ईसा के ही समय पर फर ऐसा क्या हुआ जो ईसा को ही मुक्तिदाता माना गया अथवा जबरदस्ती घो षत कया कहीं ऐसा तो नहीं एक समुदाय वशेष पर थोपा गया "तथाक थत मुक्तिदाता" ????

आइये एक नजर डाले ——-

हजरत यूहन्ना ने हजरत मसीह को शुद्ध कया अर्थात – बपतिस्मा देकर निष्पाप कया, दूसरे शब्दों में प्रायश्चित कराया। यथा –

1. तब यीशु यूहन्ना से बपतिस्मा लेने के लए उसके पास गलील से यदन को गया। (मत्ती ३-१३)

2. और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरंत पानी से ऊपर आया। (मत्ती ३-१६)

3. बपतिस्मा जो इसका दृष्टांत है, और शरीर का मैल दूर करना नहीं, परन्तु परमेश्वर के साथ सीधे ववेक का अंगीकार है। (पतरस ३-२१)

4. यूहन्ना…………….. पापमोचन के लए पश्चाताप के लए बपतिस्मा का उपदेश करने लगा। (लूका ३-३)

केवल ईसा को अकेला मुक्तिदाता बताने वाले और हिन्दू भाइयो को अन्ध वश्वास में गर्त करने वाले ईसाई मशनरी के लोग कृपया बताये ईसा अकेले कैसे मुक्तिदाता हुआ ?

यदि ईसा अकेला मुक्तिदाता है तो फर हजरत मसीह को हजरत यूहन्ना ने बपतिस्मा कस लए दिया ?

1. ईश्वर के साथ सीधे ववेक के लए।

2. पापमोचन के लए।

3. प्रायश्चित के लए।

अब पाठकगण स्वयं वचार करे की हजरत मसीह को तो खुद पाप से मुक्ति करवाने के लए बपतिस्मा लेना पड़ा वो भी हजरत यूहन्ना से फर ईसा अकेले "मुक्तिदाता" कैसे ?

खैर एक वचार इस पर भी कर लेवे की बपतिस्मा करवाने वाला (ईसा को पाप मुक्त बनाने वाला) हजरत यूहन्ना – बपतिस्मा लेना वाला हजरत मसीह जिसे मनुष्यो की शुद् ध करवाने वाला बताया जाता है – उसने स्वयं हजरत यूहन्ना को पाप क्षमा करवाने वाला (बपतिस्मा) देने वालो में सबसे बड़ा कहा है –

दे खये साक्षी स्वयं इंजील ही है – यथा

"में तुमसे सच कहता हूँ जो स्त्रियों से जन्मा है, उनमे से यूहन्ना बपतिस्मा देने हारे से बड़ा कोई नहीं।" (म त ११-११)

यदि ईसाई भाई कहे की हजरत मसीह खुदा या खुदा के बेटे थे – तो भाई सवाल उठेगा की खुदा के बेटे के पाप स्वयं खुदा नहीं धो सका – उसके लए हजरत यूहन्ना ही काम आये – इस लहाज से तो हजरत यूहन्ना खुदा से बड़े सद्ध हुए और ईसा से भी –

दूसरी बात की ईसा खुदा के अकेले बेटे नहीं थे – जैसे की ईसाई मशनरी झूठ फैला रही हैं की ईसा ईश्वर के पुत्र थे – दे खये

हजरत मसीह भी स्त्री से जन्मे थे, अतः वह भी यूहन्ना से बड़े नहीं हो सकते जैसा की ईसा ने स्वयं अपने मुह से कहा फर खुदा या खुदा के बेटे कैसे हो गए ?

यूहन्ना की माता बूढ़ा होने के कारण पुत्र उत्पन्न नहीं कर सकती थी, और ईसाइयो के कथनानुसार हजरत मरियम कुंवारी होने से संतान उत्पन्न नहीं कर सकती थी।

अतः दोनों ही प वत्र आत्मा से उत्पन्न होने के कारण खुदा बेटे होने चाहिए। यदि हजरत यूहन्ना ईश्वर के बेटे नहीं तो फर ईसा मसीह कैसे ?

तो अब ईसाई भाई जरा बतावे की ईसा अकेला मुक्तिदाता कैसे और साथ ही अकेला खुदा का बेटा भी सद्ध नहीं होता – इस लए प्रार्थना है ये अन्ध वश्वास, पाखंड और अनाचार छोड़ – सत्य सनातन वैदिक धर्म में लौटिए – अपने शुद्ध रूप को अपनाये –

क्या ईसा मसीह कुंवारी से उत्पन्न हुए थे ?

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

यहूदी और ईसाई मत के सम्मि लत मजहबी ग्रन्थ प्राचीन और नवीन सुसमाचार आद्योपांत कई भाषाओ में पढ़े, परन्तु ईसाई मत की सर्वश्रेष्ठता के जितने दावे कये जाते हैं, उन सबका ही घोर खंडन प्रतिवाद इन्ही के माननीय ग्रंथो में स्थान स्थान पर पाया।

इनका सबसे प्रथम और आकर्षक दावा यह है की ईसा मसीह कुंवारी से उत्पन्न हुए थे, मरियम की युसूफ बढ़ई के साथ केवल मंगनी सगाई मात्र हुई थी, क उसको गर्भवती पाया गया।

बाइबिल में मसीह के कई भाई बहिनो के नाम आते हैं। परन्तु कहीं उनके माँ बाप के परस्पर ववाह की चर्चा नहीं मलती।

भाइयो ! इस लए उनके सब भाई बहन कुंवारी और प वत्र आत्मा द्वारा उत्पन्न होने के कारण खुदा के बेटे और बेटियां क्यों नहीं माने जाने चाहिए ?

हजरत मसीह के भाई और बहन –

1. वह क्या बढ़ई का पुत्र नहीं है ? क्या उसकी माता का नाम मरियम और उसके भाइयो के नाम याकूब, योशी, शमोन और जुदा नहीं हैं ? ।। ५५ ।।
और क्या उसकी बहन हमारे यहाँ नहीं हैं ?।। ५६ ।।

(बाइबिल का नया नियम)

2. जब वह (हजरत मसीह) भीड़ से बात कर ही रहा था तो देखो उसकी माता और भाई बाहर खड़े थे। (मत्ती १२:४६)

3. ये सब एक चत्त होकर स्त्रियों के यीशु की माता मरियम के संग और भाइयो संग प्रार्थना और वनती में लगे रहते थे। (प्रेरितों के काम १:१४)

4. खुदाबंद के भाई और केफस करते हैं। (१ करन्तीनियो को खत ९:५)

5. पर रसूलो में से कसी को नहीं देखा मगर खुदाबंद के भाई याकूब को। (गलैतियो को खत १:१९)

6. जेम्स मसीह का भाई। (पेज १८६ हैण्ड बुक टू दी न्यू टेस्टामेंट)

क्या इन ६ प्रमाणों से यह सद्ध नहीं होता है की हजरत मसीह के कई भाई और बहन थे ? क्या ये सब बिना ववाह के ही हो गए ? केवल हमको ही नहीं प्रत्युत लंका के बड़े योरो पयन पादरी बैप्टिस्ट होवार्ड जे० चार्टर बी० ए० बी० डी० मशनरी (Haward J. Charter, B.A.B.D. Baptist Missinary) स्वयं उस प्रश्न को उठाते हैं। यथा –

There has been much controversy on the question of Jame’s exact relation to jesus and opinions are still devided on there two views.
1. That jesus and his brothers Joses, Simon and Juda were the children of Joseph and Mary and younger of our Lord.

2. That they were the children of Joseph by a farmer marriage.
The first of these two views is the most naturat conclusion from the two verses which tell us of the relationship of Jesus to the rest of the family (Matt 13:55)

Is not this the carpenter’s son ? Is not his mother called Marry ? and his brothers, James and Joseph and Simon and Judas ? (Mark 6:2)
Is not this the carpenter, the son of Mary and brothers of James and Joses and Judas and Simon ? And are not his sisters here with us ? And they were offended in Him.

The secon view has some traditional support. P186.

It is said to have been derived from the Apocryphal Gaspels of the second century, and it became popular through Origen’s influence. P.186.

Hand book to the New Testoment by Rev. Haward Baptist.

रेवरेण्ड महोदय के लखने का आशय यह है की –

“इस बात पर वशेष चर्चा होती है की – जेम्स का मुख्य सम्बन्ध मसीह से क्या था ?” इस वषय में दो सम्मतियाँ ठहराई गयी हैं –

1. जेम्स और उसके भाई जोसफ, समौन और जूड़े ये युसूफ और मरियम के पुत्र थे और हमारे प्रभु के भाई थे। यह सम्बन्ध तो वास्ति वक है।

2. यह की वे जेम्स आदि युसूफ की पहली पत्नी से उत्पन्न हुए थे। पहली सम्मति के वषय में तो यह स्वाभा वक परिणाम कई आयतो से मलता है की युसूफ का सम्बन्ध उसी परिवार से था।

(देखो मत्ती १३:५५ और मार्क ६:२)

इन सभी आयतो में इनको मैरी और युसूफ के पुत्र और पुत्री कहा गया है।
दूसरी सम्मति की प्रच लत कथानक द्वारा – रिवायती दंतकथा के तौर पर पुष्टि होती है, वह

अ वश्वसनीय है। यानी गैर मुअतबिर है। यह दंतकथा गौस्पेल के नाम से "ओरिजन" के प्रभाव से दूसरी शब्दावली में सर्वसाधारण में फ़ैल गयी।

परिणाम यही निकलता है की मसीह के कई सगे भाई बहन वद्यमान थे, और युसूफ बढ़ई द्वारा मरियम के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। दो पत्नियों की कहानी मनगढ़ंत है।
नोट :- "पहलौटा" शब्द भी यही सद्ध करता है की मसीह के और भी भाई बहन थे।

अंत में स्वयं रेवरेण्ड महोदय यह परिणाम निकालते हैं –

Many Christians hold this view why prefer to believe in the perpatual verginity of Mary. But of course we must remember that preference is not proof. P.186

अर्थात – बहुत से ईसाई मरियम के नित्यकुमारी रहने के वश्वास को वशेषता देते हैं, परन्तु उनको स्मरण रखना चाहिए की केवल वशेषता देना कोई प्रमाण नहीं है।

इन थोड़े प्रमाणों से ही जिज्ञासु गण इस परिणाम पर सहज ही में पहुँच सकते हैं की मसीह कुमारीपुत्र नहीं थे। हमारा दावा है की मसीह युसूफ के वीर्य से, कई बहन भाई सहित मरियम के गर्भ में उत्पन्न हुए।

बाइबिल की परस्पर वपरीत शक्षा – वरोधाभासी वचनो का संग्रह – बाइबिल

JULY 2, 2015 5 COMMENTS

ईसाई भाई बाइबिल को ईश्वर का प वत्र ग्रन्थ मानते हैं और हिन्दू भाइयो का धर्मांतरण इस बाइबिल के आधार पर करवाते हैं यह कहकर क बाइबिल ईश्वर की वाणी है – और जो ईसा पर वश्वास ले आवे वो ही मुक्ति पायेगा क्यों क ईश्वर की "प वत्र पुस्तक" बाइबिल ऐसा निर्देश करती है –

यदि ये बात सही है – तो बाइबिल जैसी प वत्र पुस्तक में कोई भी दोष न होना चाहिए और यदि दोष नहीं होगा तो परस्पर वरुद्ध बाते भी न होनी चाहिए क्यों क ईश्वर सर्वज्ञ है – और ईश्वर अपनी एक बात से वपरीत बात कभी भी कसी पुस्तक में नहीं देता –

क्यों क अपनी बात जो पहले बताई उससे वपरीत बात बोलना एक सामान्य मनुष्य का कार्य तो हो सकता है क्यों क मनुष्य स्वार्थी है – कोई एक बात बोलकर बाद में वपरीत बात बोल सकता है – यदि ईश्वर भी ऐसा वपरीत बर्ताव करने लगे तो उसे ईश्वर नहीं एक सामान्य मनुष्य ही जानना चाहिए।

आइये एक नजर बाइबिल की वपरीत शक्षाओ पर डालते हैं जिससे सद्ध होगा की बाइबिल ईश्वर की पुस्तक नहीं महज एक मनुष्य की बनाई है जिसमे इतना वरोधाभास है की आप गन नहीं सकते –

दे खये –

1. ईश्वर अपने कार्य से संतुष्ट हुआ (उत्प त्त 1.31)

ईश्वर अपने कार्य से बहुत असंतुष्ट हुआ (उत्प त्त 6.6)

---

2. ईश्वर अपने द्वारा चुने मंदिर में बसता (रहता) है। (2 इतिहास 7.12, 16)

ईश्वर कसी मंदिर में नहीं बसता (रहता) है। (प्रेरितों के काम – 7.48)

---

3. ईश्वर प्रकाश में बसता है। (1 तीमु थयुस 6.16)

ईश्वर अन्धकार में बसता है। (1 राजा 8.12) (भजन संहिता 18.11) (भजन संहिता 97.2)

---

4. ईश्वर को देखा और आवाज़ सुनी।
(निर्गमन 33.11, 33.23) (निर्गमन 24.9,10, 11) (उत्प त्त 3.9-10) (उत्प त्त 32.30) (यशायाह 6.1)

ईश्वर को देखना और ईश्वर की आवाज़ सुनना असम्भव है
(यूहन्ना 1.18) (यूहन्ना 5.37) (निर्गमन 33.20) (1 तीमु थयुस 6.16)

---

5. ईश्वर थक जाता है और वश्राम करता है।
(निर्गमन 31.17) (यिर्मयाह 15.6)

ईश्वर कभी नहीं थकता और न ही कभी वश्राम करता है।
(यशायाह 40.28)

---

6. ईश्वर सर्वत्र उपस्थित है – सब कुछ सुनता और जानता है
(नीतिवचन 15.3) (भजन संहिता 139.7-10) (अय्यूब 34.21-22)

ईश्वर सर्वत्र उपस्थित नहीं है – न ही सब कुछ सुनता और न ही सब कुछ जानता है –
(उत्प त्त 11.5) (उत्प त्त 18.20-21) (उत्प त्त 3.8) (प्रेरितों के काम – 1.24) (भजन संहिता 139.2-3)

---

7. ईश्वर सब मनुष्यो के दिलो की बात और राज़ जानता है –
(प्रेरितों के काम – 1.24) (भजन संहिता 139.2-3)

ईश्वर मनुष्यो के दिलो की बात और राज़ जानने का प्रयास करता है –
(व्यवस्था ववरण 13.3) (व्यवस्था ववरण 8.2) (उत्प त्त 22.12)

---

8. ईश्वर सर्वशक्तिमान है –
(यिर्मयाह 32.27) (मत्ती 19.26)

ईश्वर सर्वशक्तिमान नहीं है –
(न्यायियों 1.19)

---

9. ईश्वर और उसके वचन कभी नहीं पलटते (अपरिवर्तनीय) हैं –
(यहोशू 1.17) (मलाकी 3.6) (यहेजकेल 24-14) (गनती 23.19)

ईश्वर और उसके वचन पलटते (परिवर्तनीय) हैं –
(उत्प त्त 6.6) (योना 3.10) (1 शमूएल 2.30-31) (2 राजा 20.1,4,5,6) (निर्गमन 33.1,3,17,14)

---

10. ईश्वर निष्पक्ष और न्यायकारी है
(भजन संहिता 92.15) (उत्प त्त 18.25) (व्यवस्था ववरण 32.4) (रो मयो 2.11) (यहेजकेल 18.25)

ईश्वर पक्षपाती और अन्यायकारी है –
(उत्प त्त 9.25) (निर्गमन 20.5) (रो मयो 9.11,12,13) (मत्ती 13.12)

ये तो मात्र कुछ झल कयाँ हैं – पूरी बाइबिल एक कथन से सर्वथा वपरीत कथनो एवं शक्षाओ से परिपूर्ण है – यदि ये ईश्वर की पुस्तक होती तो इसमें वरोधाभासी बाते लेशमात्र भी न होती –

इससे सद्ध है बाइबिल ईश्वरीय ज्ञान नहीं –

कृपया सत्य को जानिए – वेद की और लौटिए – क्यों क एकमात्र वेद ही – पक्षपात, वैरभाव, वरोधाभासी शक्षाओ से रहित ईश्वरीय ज्ञान है –

नमस्ते

क्या ईसा मरकर अपना ब लदान दिया और पुनः जिन्दा भी हुए थे ?

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

 वषय को पढ़कर आप सभी चौंक जरूर गए होगे की ये क्या लखा – सभी ईसाई ऐसा मानते हैं – ईसाई भाई कुछ इस प्रकार कहते हैं क ईसा ने अपना ब लदान मनुष्यो के लए दिया जिससे अब जो ईसा को "खुदा का बेटा" माने तो निश्चित ही स्वर्ग जायेगा – ये भी मात्र कपोल कल्पना ही है – क्यों क यदि ईसा ने अपने आप ब लदान दिया होता तो क्रॉस पर चढाने से पहले और क्रॉस पर भी अपने मारे जाने से दुखी न होता न ही अपनी जान बचाने को ईश्वर से प्रार्थना करता और न ही ईसा मरकर पुनः जिन्दा हो गए थे मगर हमारे ईसाई भाइयो को इसमें भी शायद कोई संदेह दिखलाई नहीं देता इसी लए इस भ्रान्ति को बहुत बड़ा चमत्कार बताते हुए नासमझ और भोले भाले हिन्दू भाइयो को बहकाते हैं – उनको स्वर्ग का सब्जबाग दिखाते हैं – और हिन्दू भाई इस स्वर्ग के लालच में आकर इस भ्रान्ति को चमत्कार मान अंगीकार करते हुए अपना शुद्ध वैदिक धर्म छोड़ ईसाइयो के अन्ध वश्वास और पाखंड रुपी चंगुल में फंस जाते है।

इस चंगुल में फंस कर न तो कभी स्वर्ग अथवा नरक को समझ पाता – और मुक्ति वषय तो पूछिये ही मत क्यों क जो व्यक्ति अंध वश्वास और पाखंड में सदैव लप्त रहेगा वो कभी इस जन्म मरण के चक्र से मुक्त नहीं हो सकता – हाँ अपने कये कर्मो द्वारा स्वर्ग (सुख वशेष) और नरक (दुःख वशेष) प्राप्त अवश्य करता है और इस प्रकार के स्वर्ग नरक को प्राप्त करवाने हेतु कोई ईसा मूसा मुहम्मद आदि की गवाही और राह पर चलना जरुरी नहीं – क्यों क जो व्यक्ति जैसे कर्म करता वैसे ही फल भोगता है – ये ईश्वरीय वधान है – इसमें कोई तथाक थत "ईश्वर का बेटा" या नबी अथवा रसूल कोई कुछ कम बढ़ती नहीं करवा सकता –

खैर हम वषय पर चलते हैं – वषय है क्या क्या ईसा मरकर अपना ब लदान दिया और पुनः जिन्दा भी हुए थे ?

पूरी बाइबिल (ओल्ड + न्यू टैस्टमैंट) को यदि आप ध्यानपूर्वक पढ़ लेवे तो आपकी शंका खुद ही खत्म हो जाएगी क्यों क अलग अलग चैप्टर (अध्याय) में अलग अलग तरीके से बताया गया है – जिससे ईसा के मरने पर ही शंका हो जाती है –
दुबारा जिन्दा होने की तो बात ही छो ड़ये – दुबारा जिन्दा तो तब होगा न भाई जब कोई मर गया हो – बाइबिल पढ़ने से तो यही ज्ञात होता है की ईसा साहब मरे ही नहीं थे – वे तो जिन्दा थे – इससे मरकर दुबारा जिन्दे होने का सवाल ही पैदा नहीं होता – और जब मरे ही नहीं तो ब लदान कैसा ?

जब क सच्चाई यह है की अपनी जान बचाने के लए ईसा ईश्वर से बार बार प्रार्थना करते नजर आये – यहाँ तक क वो समय जिसमे ईसा को सूली पर चढ़ाया गया उस समय को टालने (अपने आप से हटाने) तक के लए प्रार्थना की थी।

आइये सल सलेवार तरीके से समझते हैं –

1. हे मेरे पता ! जो हो सके तो यह कटोरा (सूली की मृत्यु) पास से टल जाए। (मत्ती २६:३९)

2. यदि हो सके तो यह घड़ी (मौत) उससे टल जाए। (मरकुस (मार्क) १४:३५)

3. यह बात कहकर यीशु आत्मा में घबराया। (यूहन्ना १३:२१)

4. उसने अपने शरीर के दिनों में ऊँचे शब्द से पुकारकर और रोकर, उससे जो मृत्यु से बचा सकता था, वनती की, निवेदन कये। (इब्रानियों को पत्र ५:७)

5. यीशु ने बड़े जोरो से पुकार कर कहा – "एलीएली लामा शवकतनी" अर्थात हे मेरे ईश्वर ! तूने मुझे क्यों त्यागा है ? (मत्ती २७:४)

उपरोक्त यीशु द्वारा की गयी प्रार्थनाओं और रुदन से स्पष्ट है की यीशु ने कोई ब लदान नहीं दिया – क्यों क जो ब लदान होता है – उसमे ऐसे प्रार्थना और रुदन नहीं होता –

उदहारण के लए शहीद भगत संह आदि वीरो को दे खये जब उन्हें फांसी के लए ले जाया जा रहा था तो उन्हें कोई दुःख नहीं था – बल्कि वतन के लए क़ुर्बान होने का सुख था – और वो "मेरा रंग दे बसंती चोला" गाकर जेलख़ानो में सुनाया गया – इसे कहते हैं ब लदान।

"सच्चा ब लदान"

अब हमारे ईसाई भाई कैसे इस "हत्या के षड्यंत्र" को ईसा का ब लदान सद्ध करेंगे ? जब क ईसा खुद स्वेच्छा से सूली पर नहीं चढ़ा – उसको तो मारने का षड्यंत्र कया गया क्यों क ईसा ने अपने आप को "ईश्वर का बेटा" घो षत करने की मथ्या चाल चली थी – जो की उस समय के कानून के हिसाब से दण्डित कृत्य था –

खैर जो भी हो अभी तो ईसाई भाई केवल यही बता देवे की जब ईसा ने अपना ब लदान ही नहीं दिया जैसे की बाइबिल खुद सद्ध करती है – तो आप ईसाई ऐसा शोर क्यों मचाते हो की ईसा ने अपना ब लदान मनुष्यो के लए दिया और जो ईसा को माने सो स्वर्ग का अ धकारी होगा ?

अभी भी समय है – पाखंड छो ड़ये – और सत्य सनातन वैदिक धर्म को अपनाये – चाहे ईसा को मानो या न मानो – अपने कर्मो के आधार पर सभी स्वर्ग (सुख वशेष) के अ धकारी हैं –

इस लए ये स्वर्ग का लालच छोड़ – शुद्ध और सात्विक कृत्य करे – वेदो की और लौटे
खैर अब आगे देखते हैं – क्या यीशु सूली पर मर गए थे और पुनः जिन्दा हो गए ?

अन्ध वश्वास और पाखंड रुपी चंगुल

अगले भाग में …….

क्या वेदो को ऋ ष वेद व्यास ने लखा था ? मथक से सच्चाई की ओर

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

वे पौरा णक मत्र जो ये कहते नहीं थकते की वेदो को “वेद व्यास” जी ने लखा – वो या तो पूर्वाग्रह के शकार हैं या फर अपने पुराणो के ज्ञान को जानते नहीं हैं –

गरुण पुराण के अनुसार –

वेद व्यास जी ने वेद रूपी वृक्ष को अनेक शाखाओ में वभक्त कया
गरुण पुराण अध्याय १ (पृष्ठ १८)

अब जब वेद पहले ही वद्यमान थे जैसे की इस पुराण को पढ़कर पता चलता है – तब ये पौरा णक मत्र क्यों लोगो को भरमाते रहते हैं की वेद व्यास जी ने वेदो की रचना की ????? यहाँ स्पष्ट रूप से लखा है की वेद व्यास जी ने वेदो की रचना नहीं की – तो कृपया ऊल जलूल तर्क देकर समय व्यर्थ न करे – अपना भी और मेरा भी

मेरा मानना है की वेदो की शाखा भी वेद व्यास जी से पहले ही वद्यमान थी – क्यों क वेद व्यास जी के पता ऋ ष पराशर जी पराशर संहिता में बहुत जगह वेद और वेदो की शाखाओ की बात करते हैं –

अब यहाँ वचारणीय तथ्य ये है की यदि उपरोक्त व र्णत पुराण को प्रमाण माने तो वेदो को शाखाओ में वभक्त करने वाले वेद व्यास जी थे – तब कैसे पराशर जी ने अपने पराशर संहिता में वेद की शाखाओ का भी जिक्र कया ???

अब कुछ पौरा णक ये कहेंगे की व्यास उनके बेटे थे जब उन्होंने वेदो की शाखाये बना दी तब उन्होंने अपने ग्रन्थ में लखा –

तो मेरा सुझाव उनको ये है की जाके पहले अपना मुंह गरम पानी से धो ले और अपनी नींद को उत्तर लेवे – तब बात करे –

क्यों क जब पराशर संहिता लखी गयी तब वेद व्यास जी उत्पन्न नहीं हुए थे – अगर आप पौरा णक फर भी मानते हैं तो कृपया प्रमाण ले आये –

नमस्ते –

आ खर क्यों मैं एक ईसाई नहीं हु

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

यह लेख ईसाइयों के अनुरूप इस धारणा से प्रेरित है की यदि में ऐसा वश्वास करू की बाइबिल ही एक सच्ची ईश्वरीय कताब है तो मैं एक ईसाई बन जाऊंगा। मगर मेरे वैदिक धर्मी बने रहने के बहुत से अनेक कारण हैं जिन पर बाइबिल का ईश्वरी पुस्तक होने का वश्वास नहीं हो पाता। उनमे से कुछ मुख्य कारण हैं :

1. “सर्वोच्च शक्ति” मात्र एक “सनाई पर्वत” अथवा ऊँचे आसमान पर रहती है ? यह बात आज के आधुनिक वज्ञानं सम्मत ता र्कक आधार युक्त नहीं।

जब क दूसरी और वेद कहते हैं – कण कण में ईश्वर व्याप्त है और यही वज्ञानं का मूलभूत आधार है क्यों क प्रत्येक अणु परमाणु को गति देने का काम ईश्वर करता है यदि ऐसा न हो तो ब्रह्माण्ड की गतिशीलता बंद होकर नाश का कारण होगा जब क ईश्वर प्रत्येक अणु परमाणु में व्याप्त होकर उसे गति देता है जिससे ब्रह्माण्ड निरंतर नियमवत अपने कार्य में तल्लीन है

2. "सर्वोच्च शक्ति" का दयालु और प्रेम भाव बाइबिल के ईश्वर से नदारद रहना।

जब क ईश्वर ने मनुष्यो को एक दूसरे से प्रेमभाव बरतने को कहा और सभी जीवो को अपने पुत्रवत समझकर अपना प्रेम एकसामान सभी जीवो पर लुटाया।

3. "सर्वोच्च शक्ति" का अर्थात बाइबिल के ईश्वर का बाइबिल अनुसार पूजा के लए अ धकार न देकर एक मनुष्य की पूजा करवा पाखंड को बढ़ावा देना।

वेद में ईश्वर ने कहीं भी अपना गर्वगण्ड न करके मनुष्यो को स्वतंत्र कर्म करने को कहा – उस कर्म में ईश्वर की उपासना केवल उस ईश्वर का धन्यवाद स्वरुप है – जिसका स्वर्ग नरक से कुछ लेना देना नहीं

4. बाइबिल में "सर्वोच्च शक्ति" यानी बाइबिल के ईश्वर का अपनी कही बातो से मुकर जाना या फर एक बात से दूसरी वरोधी बात करना।

वेद में ईश्वर की कल्याणमयी वाणी से सद्ध है कहीं भी एक से उलट दूसरी बात वा शक्षा नहीं पायी जाती

5. "सर्वोच्च शक्ति" का वज्ञानं सम्मत ज्ञान न होना।

वेद में तृण से लेके ब्रह्माण्ड पर्यन्त सब वस्तुओ का यथावत ज्ञान है

6. "सर्वोच्च शक्ति" का अपने बनाये मनुष्यो और उनके सद्भाव को देखकर, जलना, हिरस करना, चढ़ना, द्वेष, घृणा और पक्षपात आदि करना।

वेद में ईश्वर ने कहा "मनुर्भव" अर्थात मनुष्य बनो – कहीं भी कोई सम्पर्दायी बात नहीं – ना ही कहीं – हिन्दू, मुस्लिम अथवा ईसाई बन जाने लालच या स्वर्ग नरक का डर।

7. "सर्वोच्च शक्ति" द्वारा महिलाओ के प्रति द्वेष, घृणा और नफरत आदि ज्ञान से उनका शोषण करवाना।

वेद ने महिलाओ को अबला नहीं सबला कहा, निर्मात्री कहा, ये सद्ध करता है वेद नारियो को "देवी" प वत्र कहता है

8. "सर्वोच्च शक्ति" द्वारा भाई-बहन, माता पुत्र, पता पुत्री, आदि अनेक रिश्तो की मर्यादाओ को तार तार करवाना।

पूरी सृष्टि जब से बनी तब से ही रिश्तो की मर्यादाओ का पूरा ध्यान वेद ने दिया है, इसी लए सृष्टि की आदि में अनेक स्त्री पुरषो की उत्प त्त ईश्वर करता है – ना की आदम हव्वा बना के भाई बहन का रिश्ता कलं कत करता है

9. “सर्वोच्च शक्ति” द्वारा उपलब्ध करवाई “ईश्वरीय पुस्तक” में ज्ञान, वज्ञानं की जगह, छल, कपट, धोखा, वैमनस्य, इतिहास, जादू, टोना, और अता र्कक अन्ध वश्वास आदि भ्रम युक्त अज्ञान का समावेश होना।

वेद में केवल ज्ञान, वज्ञानं, और पदार्थ वद्या का यथावत ज्ञान है, आडम्बर, ढकोसले, और पाखंड का वेद से दूर दूर तक कोई नाता नहीं

10. “सर्वोच्च शक्ति” द्वारा इस कताब पर बिना तर्क, प्रमाण आदि युक्तियों द्वारा सद्ध कये केवल वश्वास ले आने पर ही स्वर्ग भेजने का प्रलोभन देना।

वेद कहता है – इस लए ना मानो क्यों क वेद है इस लए मानो क्यों क तुम्हारे पास बुद् ध है, सत्य को ग्रहण करो और असत्य का त्याग करो

कोई भी ऐसी पुस्तक जो अपने को ईश्वरीय होने का दम्भ भरती हो, ले कन उसमे यदि ऐसी ववादास्पद बाते अथवा वषय पाये जाए तो क्या उसे ईश्वरीय पुस्तक का दर्ज़ा दिया जा सकता है ?

क्या कोई “सर्वोच्च शक्ति” ऐसी बेतुकी और निराधार बाते अपनी पुस्तक में लखवा सकती है ?

में जानता हु अ धकांश लोग इन सभी बातो को ईश्वरीय होने से नकार देंगे – और यही वजह है की मेने भी बाइबिल को ईश्वरीय होने से इन्ही कारणों के मद्देनजर नकार दिया है। क्यों क ये पुस्तक या ऐसी ही अन्य सम्प्रदायों की पुस्तके – ईश्वरीय होने का दम्भ तो भरती हैं मगर उनके सभी दावे जमीनी हकीकत पर खोखले सद्ध होते हैं क्यों क ईश्वरीय पुस्तक ज्ञान और वज्ञानं से भरी होनी चाहिए ना क ऐसी बुद् ध वहीन बातो से।

जाहिर है इस लेख से सभ्य समाज सहमत होगा और इस पुस्तक को केवल कुछ मनुष्यो द्वारा अपने फायदे और स्वार्थ की पूर्ति हेतु बनाई गयी पुस्तको की संज्ञा देगा ना क ईश्वरीय ग्रन्थ की।

अभी भी समय है, सम्पूर्ण वश्व के कल्याण हेतु, ब्रह्माण्ड की शांति हेतु, आइये लौटिए ईश्वर की सच्ची, कल्याणमयी वाणी की और, ज्ञान की और, न्याय और वज्ञानं की और

आओ लौट चले वेदो की और

नमस्ते

अभी पॉइंट तो बहुत उठ सकते हैं, मगर फलहाल पोस्ट बड़ी न हो जाए इस हेतु मुख्यतया इन्ही १० बिन्दुओ पर वचार करेंगे।

शेष अगले भाग में –

ईसाई पैगम्बर अत्यंत चरित्र हीन थे – पार्ट 1

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

यहूदा ने अपने बेटे की बहु से व्य भचार कया।

यदि पर्दा पड़ा था – ऐसा बोलो =

तो इसका मतलब की पैगम्बर कोई आम आदमी हुआ जो "वैश्या-रंडी" को देखकर अपने पर काबू भी न कर पाया ?

ऐसे पैगम्बर से भले तो हम सभ्य लोग ही सही – जो वैश्या-रंडी को देखकर काबू में रहते हों।

(उत्प त्त, अध्याय 38) –

12 बहुत समय के बीतने पर यहूदा की पत्नी जो शूआ की बेटी थी सो मर गई; फर यहूदा शोक से छूटकर अपने मत्र हीरा अदुल्लामवासी समेत अपनी भेड़-बकरियों का ऊन कतराने के लये तिम्नाथ को गया।

13 और तामार को यह समाचार मला, क तेरा ससुर अपनी भेड़-बकरियों का ऊन कतराने के लये तिम्नाथ को जा रहा है।

14 तब उसने यह सोच कर, क शेला सयाना तो हो गया पर मैं उसकी स्त्री नहीं होने पाई; अपना वधवापन का पहिरावा उतारा, और घूंघट डाल कर अपने को ढांप लया, और एनैम नगर के फाटक के पास, जो तिम्नाथ के मार्ग में है, जा बैठी:

15 जब यहूदा ने उसको देखा, उसने उसको वेश्या समझा; क्यों क वह अपना मुंह ढ़ापे हुए थी।

16 और वह मार्ग से उसकी ओर फरा और उससे कहने लगा, मुझे अपने पास आने दे, (क्यों क उसे यह मालूम न था क वह उसकी बहू है)। और वह कहने लगी, क यदि मैं तुझे अपने पास आने दूं, तो तू मुझे क्या देगा?

17 उसने कहा, मैं अपनी बकरियों में से बकरी का एक बच्चा तेरे पास भेज दूंगा। तब उसने कहा, भला उस के भेजने तक क्या तू हमारे पास कुछ रेहन रख जाएगा?

18 उस ने पूछा, मैं तेरे पास क्या रेहन रख जाऊं? उस ने कहा, अपनी मुहर, और बाजूबन्द, और अपने हाथ की छड़ी। तब उसने उसको वे वसतुएं दे दीं, और उसके पास गया, और वह उससे गर्भवती हुई।

19 तब वह उठ कर चली गई, और अपना घूंघट उतार के अपना वधवापन का पहिरावा फर पहिन लया।

20 तब यहूदा ने बकरी का बच्चा अपने मत्र उस अदुल्लामवासी के हाथ भेज दिया, क वह रेहन रखी हुई वस्तुएं उस स्त्री के हाथ से छुड़ा ले आए; पर वह स्त्री उसको न मली।

ईसाई पैगम्बर अत्यंत चरित्र हीन थे – पार्ट 2

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

पैगम्बर दाऊद ने ऊरिय्याह की पत्नी से व्य भचार कया।

2 सांझ के समय दाऊद पलंग पर से उठ कर राजभवन की छत पर टहल रहा था, और छत पर से उसको एक स्त्री, जो अति सुन्दर थी, नहाती हुई देख पड़ी।

3 जब दाऊद ने भेज कर उस स्त्री को पुछवाया, तब कसी ने कहा, क्या यह एलीआम की बेटी, और हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी बतशेबा नहीं है?

4 तब दाऊद ने दूत भेज कर उसे बुलवा लया; और वह दाऊद के पास आई, और वह उसके साथ सोया। (वह तो ऋतु से शुद्ध हो गई थी) तब वह अपने घर लौट गई।

5 और वह स्त्री गर्भवती हुई, तब दाऊद के पास कहला भेजा, क मुझे गर्भ है।
(शमूएल 2 अध्याय 11)

अब दाऊद ने जो व्य भचार और पाप कया उसे छिपाने को ऊरिय्याह को मरवा डालने की योजना बनाई

14 बिहान को दाऊद ने योआब के नाम पर एक चट्ठी लखकर ऊरिय्याह के हाथ से भेजदी।

15 उस चट्ठी में यह लखा था, क सब से घोर युद्ध के साम्हने ऊरिय्याह को रखना, तब उसे छोडकर लौट आओ, क वह घायल हो कर मर जाए।
(शमूएल 2 अध्याय 11)

अब जब ऊरिय्याह को मरवा डाला जो क दाऊद की सोची समझी चाल थी –

16 और योआब ने नगर को अच्छी रीति से देख भालकर जिस स्थान में वह जानता था क वीर हैं, उसी में ऊरिय्याह को ठहरा दिया।

17 तब नगर के पुरुषों ने निकलकर योआब से युद्ध कया, और लोगों में से, अर्थात दाऊद के सेवकों में से कतने खेत आए; और उन में हित्ती ऊरिय्यह भी मर गया।

18 तब योआब ने भेज कर दाऊद को युद्ध का पूरा हाल बताया;
(शमूएल 2 अध्याय 11)

अपनी योजना पूरी हो जाने पर अर्थात दाऊद की काम पपासा शांत होने की राह का रोड़ा ऊरिय्यह के मर जाने पर फर ऊरिय्याह की बीवी को अपने घर में डाला

27 और जब उसके वलाप के दिन बीत चुके, तब दाऊद ने उसे बुलवाकर अपने घर में रख
लया, और वह उसकी पत्नी हो गई, और उसके पुत्र उत्पन्न हुआ। परन्तु उस काम से जो
दाऊद ने कया था यहोवा क्रो धत हुआ।
(शमूएल 2 अध्याय 11)

ऐसे ऐसे पैगम्बर ईसाइयो में हुए हैं।

अब इन्हे पैगम्बर कौन कहे ?

क्या ये पैगम्बरी के काम थे ?

कसी औरत को नहाते देखना – फर अपनी काम पपासा को शांत करने हेतु उस औरत को बुलवा लेना – मौज मस्ती करना – अगर उस औरत का पति राह का रोड़ा बने तो ठिकाने लगवा देना – फर उस औरत का जमकर उपभोग करना –
भाई फल्मो में और हा लया जिंदगी में ऐसे काम वलेन करते हैं – यानी खलनायक – यानी बुरे लोग – मगर पुरानी फल्मो में तो वलेन भी ऐसे नहीं दिखाते थे – कम से कम नारी का सम्मान कुछ तो होता ही था – ये तो पैगम्बर कम – प्रेम चोपड़ा और गुलशन ग्रोवर जैसे लोगो का दादा जरूर लगता है –
आप क्या कहते हो ?

नोट : ऊरिय्याह कौन था ? ये जानना बहुत जरुरी है –

ऊरिय्याह अपने स्वामी दाऊद के प्रति वफादार, कर्तव्यनिष्ठ, सच्चा, ईमानदार और वीर पुरुष था। जो की ऊरिय्याह की दाऊद को बोली इस बात से सद्ध होता है

7 जब ऊरिय्याह उसके पास आया, तब दाऊद ने उस से योआब और सेना का कुशल क्षेम और
युद्ध का हाल पूछा।

8 तब दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, अपने घर जा कर अपने पांव धो। और ऊरिय्याह राजभवन
से निकला, और उसके पीछे राजा के पास से कुछ इनाम भेजा गया।

9 परन्तु ऊरिय्याह अपने स्वामी के सब सेवकों के संग राजभवन के द्वार में लेट गया, और
अपने घर न गया।

10 जब दाऊद को यह समाचार मला, क ऊरिय्याह अपने घर नहीं गया, तब दाऊद ने
ऊरिय्याह से कहा, क्या तू यात्रा करके नहीं आया? तो अपने घर क्यों नहीं गया?

11 ऊरिय्याह ने दाऊद से कहा, जब सन्दूक और इस्राएल और यहूदा झोंप डय़ों में रहते हैं, और
मेरा स्वामी योआब और मेरे स्वामी के सेवक खुले मैदान पर डेरे डाले हुए हैं, तो क्या मैं घर
जा कर खाऊं, पीऊं, और अपनी पत्नी के साथ सोऊं? तेरे जीवन की शपथ, और तेरे प्राण की
शपथ, क मैं ऐसा काम नहीं करने का।

12 दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, आज यहीं रह, और कल मैं तुझे वदा करूंगा। इस लये
ऊरिय्याह उस दिन और दूसरे दिन भी यरूशलेम में रहा।

देखो ईसाई मत्रो – तुम्हारे बाइबिल में ही तुम्हारे पैगम्बरों के बारे में क्या क्या लखा है ?
फर भी तुम ऐसे लोगो को श्रेष्ठ पुरुष समझने से बाज़ नहीं आ रहे ?
क्या श्रेष्ठ पुरुष ऐसे ही होते हैं जो :

औरत को नहाते हुए नगनवस्था में देखे ?

अपनी काम पपासा को शांत भी न कर पाये ?

अपनी कामाग्नि को शांत करने को कसी नारी के साथ व्य भचार तक कर लेवे ?

और हद्द तो तब हो जाए जब अपनी कामाग्नि से धहकते हुए – उस स्त्री के पति को मारने के लए चालबाजियां करे ?

धूर्तता से, छल से, कपट से उस वीर को मारे ?

औरत को पाने के लए चाल चले ?

अपने ही कर्तव्यपरायण, सच्चे, निर्भीक, वफादार, ईमानदार पुरुष को पुरस्कृत करने की बजाये उसे मरवा के उसकी बीवी के साथ रंगर लयां मनाते रहे ?

क्या इसी को ईसाइयत में पैगम्बरी कहते हो ?

और देखो – यहोवा क्रो धत हुआ और दाऊद को क्या कहा –

9 तू ने यहोवा की आज्ञा तुच्छ जान कर क्यों वह काम कया, जो उसकी दृष्टि में बुरा है?
हित्ती ऊरिय्याह को तू ने तलवार से घात कया, और उसकी पत्नी को अपनी कर लया है,
और ऊरिय्याह को अम्मोनियों की तलवार से मरवा डाला है।

10 इस लये अब तलवार तेरे घर से कभी दूर न होगी, क्यों क तू ने मुझे तुच्छ जानकर हित्ती
ऊरिय्याह की पत्नी को अपनी पत्नी कर लया है।

11 यहोवा यों कहता है, क सुन, मैं तेरे घर में से वप त्त उठा कर तुझ पर डालूंगा; और तेरी
पत्नियों को तेरे साम्हने ले कर दूसरे को दूंगा, और वह दिन दुपहरी में तेरी पत्नियों से कुकर्म
करेगा।

12 तू ने तो वह काम छिपाकर कया; पर मैं यह काम सब इस्राए लयों के साम्हने दिन दुपहरी
कराऊंगा।

13 तब दाऊद ने नातान से कहा, मैं ने यहोवा के वरुद्ध पाप कया है। नातान ने दाऊद से
कहा, यहोवा ने तेरे पाप को दूर कया है; तू न मरेगा।

14 तौभी तू ने जो इस काम के द्वारा यहोवा के शत्रुओं को तिरस्कार करने का बड़ा अवसर दिया है, इस कारण तेरा जो बेटा उत्पन्न हुआ है वह अवश्य ही मरेगा।
(शमूएल 2 अध्याय 12)

अब बताओ – ये इनके ईश्वर यहोवा का इन्साफ है – मतलब की एक व्यक्ति ने अगर कसी महिला का बलात्कार कया = तो उसकी सजा बलात्कारी की बहन को बलात्कार करके दी जाए –

वाह रे वाह धन्य हो ईसाइयो –

क्या महिला की कोई इज्जत नहीं होती ?

और वो जो बच्चा पैदा हुआ – उसमे उसकी क्या गलती थी ? उस बच्चे को क्यों मार ? मारना तो दाऊद को था –

क्या ये इन्साफ है ?

तो नाइंसाफी कसे कहे ?

कृपया सत्य को समझे –

ज्ञान और वज्ञानं की और लौटे

न्याय और धर्म की और लौटे

सत्य की और लौटे

आओ लौट चलो वेदो की ओर

नमस्ते

ईसाई पैगम्बर अत्यंत चरित्र हीन थे – पार्ट 3

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

मत्रो जैसे की पछली दो पोस्ट से ये कारवां चलता आ रहा है की सत्य को सामने रखा जाए – और असत्य को दूर फेक दिया जाए – उसी कड़ी में पेश है – एक और सत्य की खोज।

हजरत दाऊद का चरित्र जो बाइबिल में एक कामांध, काम पपासु, स्त्रियों का अत्य धक सेवक, और निर्लज्ज आदमी – जिसने अपनी काम पपासा को शांत करने हेतु अपने खुद के एक कर्तव्यनिष्ठ, सच्चे, वीर, वफादार योद्धा को जान से मरवा दिया ता क उसकी बीवी को ह थया सके। उसके साथ रंगर लयां मना सके।

जिसकी मान सकता ऐसी थी उसकी संतान कैसी होगी ? क्या आपने कभी सोचने का पर्यत्न कया ?

आइये आज प्रयत्न करते हैं सत्य को खोजने का

जैसे की हम सब जानते हैं –

बाप पे पूत,
नसल पे घोडा
बहुत नहीं, तो थोड़ा थोड़ा।

ये पोस्ट इसी वषय को चरितार्थ करती है। आपको पछली पोस्ट में हजरत दाऊद जैसे पैगम्बर के बारे में बाइबिल क्या कहती है – उससे रूबरू करवाया था।
अब थोड़ा मुखातिब हुआ जाये हजरत दाऊद के संतानो से।

हजरत दाऊद का एक बेटा था – अबशालोम

हजरत दाऊद का एक और बेटा था – अम्नोन

हजरत दाऊद की एक बेटी – तामार जो अबशालोम की बहिन थी।

यानी तीनो एक ही पता से उत्पन्न भाई बहिन थे।

अब हुआ क्या ?

हुआ ये की भाई का दिल अपनी बहन पर आ गया

यानी दाऊद के एक बेटे अम्नोन का दिल अपनी बहन तामार पर आ गया।

1 इसके बाद तामार नाम एक सुन्दरी जो दाऊद के पुत्र अबशालोम की बहिन थी, उस पर दाऊद का पुत्र अम्नोन मोहित हुआ।
(2 शमूएल, अध्याय 13)

अब दिल आ जाये तो क्या करे ? वही होता है – जो आ शक़ों का हाल होता है – खाना पीना छूट जाना – भूख प्यास न लगना, बीमार पड़ जाना आदि आदि। वही अम्नोन के साथ हुआ।

2 और अम्नोन अपनी बहिन तामार के कारण ऐसा वकल हो गया क बीमार पड़ गया; क्यों क वह कुमारी थी, और उसके साथ कुछ करना अम्नोन को कठिन जान पड़ता था।
(2 शमूएल, अध्याय 13)

अब क्या करे अम्नोन ? सो अपने दोस्त की सलाह ली।

3 अम्नोन के योनादाब नाम एक मत्र था, जो दाऊद के भाई शमा का बेटा था; और वह बड़ा चतुर था।

4 और उसने अम्नोन से कहा, हे राजकुमार, क्या कारण है क तू प्रति दिन ऐसा दुबला होता जाता है क्या तू मुझे न बताएगा? अम्नोन ने उस से कहा, मैं तो अपने भाई अबशालोम की बहिन तामार पर मोहित हूं।

5 योनादाब ने उस से कहा, अपने पलंग पर लेटकर बीमार बन जा; और जब तेरा पता तुझे देखने को आए, तब उस से कहना, मेरी बहिन तामार आकर मुझे रोटी खलाए, और भोजन को मेरे साम्हने बनाए, क मैं उसको देखकर उसके हाथ से खाऊं।
(2 शमूएल, अध्याय 13)

बस जी बन गया काम – अंधे को क्या चाहिए – दो आँखे –

हजरत दाऊद जो की पैगम्बर थे – यहोवा इनसे बात करता था – पता नहीं यहोवा कहाँ गुम हुआ जो ऐसी जरुरत की बताने वाली बात – अथवा पाप को होने से बचा भी न पाया और न हजरत दाऊद को बता पाया – शायद यहोवा भी इस काम को पसंद करता हो ?

खैर हजरत दाऊद ने खबर भजवा दी – तामार को भेजो – अम्नोन खाना खाना चाहता है – पता नहीं पैगम्बरी ने साथ क्यों न दिया – जो भ वष्य की बात ऐसे पैगम्बर चुटकी में जान लेते हैं – इस पाप से अन भज्ञ रहे ? हो सकता है हजरत दाऊद इस काम को मन से समर्थन दे रहे हो ?

खैर जो भी हो – तामार आ गयी अपने बीमार भाई को ठीक करने के लए। धन्य है ऐसी बहिन जो अपने भाई की बिमारी की खबर मलते ही पधार गयी – और पूरी बना दी।

7 और दाऊद ने अपने घर तामार के पास यह कहला भेजा, क अपने भाई अम्नोन के घर जा कर उसके लये भोजन बना।

8 तब तामार अपने भाई अम्नोन के घर गई, और वह पड़ा हुआ था। तब उसने आटा ले कर गूंधा, और उसके देखते पूरियां। पकाईं।

मगर अम्नोन के मन में जो पाप चल रहा था – उससे वो बेचारी अबला बहिन अनजान थी – उसे तो केवल अपने भाई के ठीक होने की जल्दी थी – इस लए भाई को अकेले – एकांत कमरे में भी भोजन करवाने को राजी हो गयी।

तब उसने थाल ले कर उन को उसके लये परोसा, परन्तु उसने खाने से इनकार कया। तब अम्नोन ने कहा, मेरे आस पास से सब लोगों को निकाल दो, तब सब लोग उसके पास से निकल गए।

10 तब अम्नोन ने तामार से कहा, भोजन को कोठरी में ले आ, क मैं तेरे हाथ से खाऊं। तो तामार अपनी बनाई हुई पूरियों को उठा कर अपने भाई अम्नोन के पास कोठरी में ले गई।

भाई हमने तो सुना है – स्त्रियों में एक सेंस होती है – जो पहचान जाती है की कोई उसके साथ जो कर रहा है – उसमे उसकी मान सकता अच्छी है या बुरी है। मगर बेचारी तामार इतनी भोली थी – की अपने भाई की बुरी बात को पहिचान तक न सकी।

11 जब वह उन को उसके खाने के लये निकट ले गई, तब उसने उसे पकड़कर कहा, हे मेरी बहिन, आ, मुझ से मल।

12 उसने कहा, हे मेरे भाई, ऐसा नहीं, मुझे भ्रष्ट न कर; क्यों क इस्राएल में ऐसा काम होना नहीं चाहिये; ऐसी मूढ़ता का काम न कर।

13 और फर मैं अपनी नामधराई लये हुए कहां जाऊंगी? और तू इस्राए लयों में एक मूढ़ गना जाएगा। तू राजा से बातचीत कर, वह मुझ को तुझे ब्याह देने के लये मना न करेगा।

14 परन्तु उसने उसकी न सुनी; और उस से बलवान होने के कारण उसके साथ कुकर्म करके उसे भ्रष्ट कया।

और तामार जैसी सुशीला, नेक बहिन के साथ – हजरत दाऊद के पुत्र अम्नोन ने कुकर्म कर ही दिया। उसे भ्रष्ट करके ही माना।

छी ! छी ! छी !

 कतनी घिनौनी हरकत थी – अपनी ही बहिन के साथ कुकर्म करना – मगर देखने वाली बात है – हजरत दाऊद जो एक महान पैगम्बर हुए हैं – उनके घर में – उनके अपने ही खून – अपने ही बेटे ने – ऐसा जलील काम कया।

क्या ये पाप कृत्य नहीं था ?

क्या हजरत दाऊद को अपनी पैगम्बरी के लए – ऐसे कुपुत्र को दंड नहीं देना चाहिए था ?

क्या अपनी बेटी के लए हजरत दाऊद को कोई सहानुभूति नहीं थी ?

क्या इसे पैगम्बरी कह सकते हैं ?

जो पैगम्बर अपने घर में हो रहे पाप को नहीं रोक सका ?

जो पैगम्बर अपने पुत्र को सही शक्षा नहीं दे सका ?

जो पैगम्बर अपनी पुत्री की रक्षा नहीं कर सका ?

जो यहोवा सब कुछ जानने वाला है – पैगम्बरों से बात करता है – भ वष्य की बात बताता है – राष्ट्र को बनवाता और बिगड़वाता है –

वो अपने पैगम्बर की पुत्री की लाज न बचा सका ?

क्या ये बाइबिल धर्म की शक्षा देती है ?

अगर देती है –

तो ये अधर्म करने वाले पैगम्बर और उनके पुत्रो को दंड का वधान क्यों नहीं ?

सत्य को जानो ईसाई मत्रो !

मनुष्य जीवन का लाभ उठाओ।

सत्य को जानो और मानो।

आओ लौट चले सत्य की और

वेद और वज्ञानं की और

मनुष्यता की और

"कृण्वन्तो वश्वमार्यम"

नमस्ते

ईसाई पैगम्बर अत्यंत चरित्र हीन थे – पार्ट 4

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

मत्रो जैसे की पछली तीन पोस्ट से ये कारवां चलता आ रहा है की सत्य को सामने रखा जाए – और असत्य को दूर फेक दिया जाए – उसी कड़ी में पेश है – एक और सत्य की खोज।

हजरत याकूब (इजराइल) के 12 पुत्र हुए :

1. रूबेन, शमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, जबूलून –
ये छह बेटे याकूब की पहली बीवी लआ से हुए

2. युसूफ और बिन्यामीन – दूसरी बीवी राहेल से हुए

3. दान और नप्ताली – राहेल की दासी बिल्हा से थे

4. गाद और आशेर – ये लआ की दासी जिल्पा से हुए।
(उत्प त्त ३५:२३-२६)

ये तो हुआ संछिप्त परिचय – अब आप सोचोगे इसमें चरित्रहीनता कहाँ है ?

भाई लोगो – पहली चरित्रहीनता तो यही देख लो – की हजरत याकूब जो एक ईसाई पैगम्बर थे – उनकी एक नहीं दो दो बी वयां थी – क्या ये कम चरित्रहीनता है ?

चलो इसे चरित्रहीनता नहीं कहते – ये शादी थी। मगर क्या अपनी पत्नी की दा सयों के साथ बिना शादी कये संतान पैदा करना चरित्रहीनता नहीं है ?

चलो एक बार को माना की दासी के साथ भी ववाह कया था – अव्वल तो ये संभव ही नहीं था – फर भी यदि मान लया जाए तो – अपनी पत्नी को सुरक्षा की जिंदगी देना ये एक मनुष्य का कर्तव्य होता है – ले कन हजरत याकूब जो एक महान पैगम्बर थे – अपने बेटे को अच्छी शक्षा तक न दे सके – क्या ये महानता की बात थी ?

मैं चरित्रहीनता इस लए कहता हु की एक पैगम्बर होने के नाते समाज को और अपने परिवार को सु शक्षा देना ही पैगम्बर का कार्य होता है – मगर ये कैसे पैगम्बर जिनके बेटे ने अपनी ही माँ के साथ कुकर्म कर दिया ?

दे खये –

जैसे की आपने ऊपर पढ़ा – रूबेन – याकूब की पहली पत्नी से उत्पन्न पुत्र हुआ था – मगर उसका आचरण इतना भ्रष्ट था की उसने अपनी ही सौतेली माँ के साथ कुकर्म कया।

इजराइल (याकूब) वहां थोड़े समय ठहरा। जब वह वहां था तब रूबेन इजराइल (याकूब) की दासी बिल्हा के साथ सोया। इजराइल ने इस बारे में सुना और बहुत क्रुद्ध हुआ।

(उत्प त्त ३५:२२)

अब इस बात का थोड़ा ग णत सम झए।

इजराइल (याकूब) के बीवी राहेल पुत्र को जन्म देते समय मर गयी तो – तो याकूब उसे दफनाने में व्यस्त था – बस फर क्या था रूबेन को मौक़ा मल गया – और उसने अपनी ही माँ का बलात्कार कया।

अब ऐसे ऐसे पता पुत्र जिस समाज – कुल के पैगम्बर हुए हो – उस समाज से आप कस प्रकार की शक्षा की उम्मीद कर सकते हैं ?

रूबेन के इस पाप की सुचना जब याकूब को मली – तो उसने उसे क्या सजा दी ? क्या कोई ईसाई मत्र बताने का कष्ट करेगा ?

मेरे ईसाई मत्रो इस पापयुक्त आचरण को छोडो = सत्य सनातन वैदिक धर्म से नाता जोड़ो =

आओ लौटो वेदो की और

नमस्ते

ईसाई पैगम्बर अत्यंत चरित्रहीन थे – पार्ट 5

JULY 2, 2015 3 COMMENTS

सभी मत्रो – जैसे की पछली ४ पोस्ट से ये पोल खोल चालू है – की ईसाई पैगम्बर अत्यंत ही चरित्रहीन थे – खुद बाइबिल ऐसा प्रमा णत करती है – मगर फर भी हमारे कुछ हिन्दू

भाई – इस पाखंड में फंसते जाते हैं – क्यों क वो बाइबिल को पढ़ते नहीं – और जो कुछ पढ़ते हैं – वो सही से समझते नहीं – आइये अपने हिन्दू भाइयो को इस पाखंड रुपी चुंगल से निकालने के लए सहयोग करे और इस पोस्ट के माध्यम से सत्य को एक बार फर प्रसारित करे –

आज जिन महान पैगम्बर की चरित्रहीनता का जिक्र इस पोस्ट में कया जायेगा – वो इतने महान थे – की उन्होंने न केवल अपने फायदे और काम पपासा को शांत करने के लए अपने खुदा (यहोवा) की आज्ञा का अपमान कया – बल्कि इस बाइबिल में अपने खुदा (यहोवा) से इस कृत्य के लए आशीर्वाद भी प्राप्त कया –

ऐसा लखवा दिया –

आइये एक नजर डाले – आ खर माजरा क्या है –

बाइबिल में अनेक जगह पर यहोवा कहता है –

शा पत हो वह जो अपनी बहिन, चाहे सगी हो चाहे सौतेली, उस से कुकर्म करे। तब सब लोग कहें, आमीन॥
व्यवस्था ववरण, अध्याय २७:२२)

और यदि कोई अपनी बहिन का, चाहे उसकी संगी बहिन हो चाहे सौतेली, उसका नग्न तन देखे, तो वह निन्दित बात है, वे दोनों अपने जाति भाइयों की आंखों के साम्हने नाश कए जाएं; क्यों क जो अपनी बहिन का तन उघाड़ने वाला ठहरेगा उसे अपने अधर्म का भार स्वयं उठाना पड़ेगा।
लैव्यव्यवस्था, अध्याय २०:१७)

तो उपर ल खत प्रमाणों से सद्ध है की अपनी बहिन – चाहे सगी हो अथवा सौतेली – उस से यदि कोई गलत काम करता है – तो वो व्य भचारी है – यानी ऐसा मनुष्य चरित्रहीन है – निन्दित है – और उसका नाश कया जाए –

बात बिलकुल ठीक है – कायदे की है – ऐसा ही होना चाहिए – मगर मेरी उस वक़्त आँख फटी की फटी रह गयी जब मेने – महान ईसाई पैगम्बर "इब्राहिम" का जिक्र बाइबिल में पढ़ा –

अरे दादा इतना घोर अनर्थ – इतना व्य भचारी पैगम्बर ? अपनी ही बहिन को अपनी हवस का शकार बना डाला ?

छिः धक्कार है ऐसी बाइबिल पर और ऐसे ईश्वर पर जो एक जगह कहता कुछ है – और जब पैगम्बर की बात आई तो बदल गया ? क्या ऐसा भी ईश्वर का काम हो सकता है ?

दे खये

इब्राहिम ने कहा, मैं ने यह सोचा था, क इस स्थान में परमेश्वर का कुछ भी भय न होगा; सो ये लोग मेरी पत्नी के कारण मेरा घात करेंगे।
(उत्प त, अध्याय २०:११)

और फर भी सचमुच वह मेरी बहिन है, वह मेरे पता की बेटी तो है पर मेरी माता की बेटी नहीं; फर वह मेरी पत्नी हो गई।
(उत्प त, अध्याय २०:११)

ईसाई मत्रो देखो आपका पैगम्बर – जिसने अपने ही खुदा की कही बात को मटटी में मला दिया ?

क्या ऐसे ही पैगम्बर होते हैं ?

पैगम्बर तो वो कहलाते हैं – जो खुदा की बात पर चले – मगर क्या "इब्राहिम" जो महान पैगम्बर थे – खुदा की बात पर अमल कर पाये ? नहीं – क्यों क अपनी काम पपासा जो शांत करनी थी ? और देखो अपनी जान बचाने को भी अपनी पत्नी को बहिन बनवा दिया – फर सच भी बता दिया की हाँ वो बहिन तो है मगर बीवी भी है – क्यों क इब्राहिम के पता की बेटी थी – उसके माँ की नहीं ?

क्या ये पैगम्बर के कर्म होते हैं ?

अब देखो आपका खुदा कैसे बदला – क्यों क पैगम्बर की बात जो है –
फर परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, तेरी जो पत्नी सारै है, उसको तू अब सारै न कहना, उसका नाम सारा होगा।
(उत्प त, अध्याय १७:१५)

और मैं उसको आशीष दूंगा, और तुझ को उसके द्वारा एक पुत्र दूंगा; और मैं उसको ऐसी आशीष दूंगा, क वह जाति जाति की मूलमाता हो जाएगी; और उसके वंश में राज्य राज्य के राजा उत्पन्न होंगे।
(उत्प त, अध्याय १७:१६)

अब बताओ – क्या भरोसा कया जाए आपके खुदा का ?

जो अपनी एक बात पर ही टिका नहीं रहता – अरे भाई न्याय तो कम से कम सही होना चाहिए – बल्कि एक पैगम्बर के लए तो खासकर कोई रियायत नहीं होनी चाहिए – क्यों क वो एक समाज का नेता होता है – अब यदि नेता ही ऐसे कानून तोड़ने लगे – और यहोवा आशीर्वाद देता रहे – तो आम आदमी क्यों नहीं ये सब पाप कर्म करेगा ?

मेरे ईसाई मत्रो अभी समय है – इस पापयुक्त आचरण से अपने को भ्रष्ट ना करो – ईश्वर की शरण में आओ – सच्ची मुक्ति वेद के द्वारा है – इस झूठी मलावटी – हर पैगम्बर द्वारा र चत अपने फायदों के लए बनाई बाइबिल से आपका घर परिवार ही दू षत होगा – और कुछ नहीं

वेद शक्षा अपनाओ

धर्म में पुनः स्था पत हो जाओ

सत्य और न्याय की और

ईश्वर की सत्य सनातन व्यवस्था की और

चलो चले वेदो की और

नमस्ते

बाइबिल और ईसाई पैगम्बरों की चरित्रहीन, पथभ्रष्ट और असामाजिक शक्षा

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

बाइबिल अनुसार – माँ बेटे से – पता पुत्री से – भाई सगी बहन से – सेक्स सम्बन्ध बना सकता है – ये उ चत कार्य हैं।

ईसाई समाज में –

आदम के काल से आज तक

 पता पुत्री

माँ बेटा

भाई बहन

आदि का शारीरिक सम्बन्ध बनाना – या भारतीय परिवेश में कहे तो ऐसे घृ णत रिश्ते – नाजायज़ ताल्लुक – बनाना –

ईसाइयो अथवा बाइबिल की शक्षा मानने वालो के लए –

श्रद्धा, समर्पण, वश्वास और गर्व का वषय है

रेफ. दे खये –

भाई बहन के सम्बन्ध :

1 हे मेरी बहिन, हे मेरी दुल्हिन, मैं अपनी बारी में आया हूं, मैं ने अपना गन्धरस और बलसान चुन लया; मैं ने मधु समेत छत्ता खा लया, मैं ने दूध और दाखमधु भी लया॥ हे मत्रों, तुम भी खाओ, हे प्यारों, पयो, मनमाना पयो!

2 मैं सोती थी, परन्तु मेरा मन जागता था। सुन! मेरा प्रेमी खटखटाता है, और कहता है, हे मेरी बहिन, हे मेरी प्रय, हे मेरी कबूतरी, हे मेरी निर्मल, मेरे लये द्वार खोल; क्यों क मेरा सर ओस से भरा है, और मेरी लटें रात में गरी हुई बून्दोंसे भीगी हैं।

3 मैं अपना वस्त्र उतार चुकी थी मैं उसे फर कैसे पहिनूं? मैं तो अपने पांव धो चुकी थी अब उन को कैसे मैला करूं?
(श्रेष्ठगीत, अध्याय 5)

7 तेरा डील डौल खजूर के समान शानदार है और तेरी छातियां अंगूर के गुच्छों के समान हैं॥

8 मैं ने कहा, मैं इस खजूर पर चढ़कर उसकी डा लयों को पकडूंगा। तेरी छातियां अंगूर के गुच्छे हो, और तेरी श्वास का सुगन्ध सेबों के समान हो,
(श्रेष्ठगीत, अध्याय 7)

भाई बहन का ववाह –

11 इब्राहीम ने कहा, मैं ने यह सोचा था, क इस स्थान में परमेश्वर का कुछ भी भय न होगा; सो ये लोग मेरी पत्नी के कारण मेरा घात करेंगे।

12 और फर भी सचमुच वह मेरी बहिन है, वह मेरे पता की बेटी तो है पर मेरी माता की बेटी नहीं; फर वह मेरी पत्नी हो गई।
(उत्प त्त अध्याय २०:११-१२)

हजरत इब्राहिम ने अपनी बहिन सारा से ववाह कया –

अम्नोन ने अपनी बहिन तामार का बलात्कार कया – जब क तामार कहती रही की – अम्नोन से ब्याह हो सकता है – (2 शमूएल, अध्याय १३:१-१४)

कैन ने अपनी बहिन से ही ववाह कया – क्यों क और कोई उत्प त्त स्त्री की यहोवा ने की नहीं – केवल आदम और हव्वा बनाये – तो सद्ध है – कैन ने अपनी ही बहिन से ववाह कया।

अब देखते हैं पता पुत्री सम्बन्ध :

30 और लूत ने सोअर को छोड़ दिया, और पहाड़ पर अपनी दोनों बेटियों समेत रहने लगा; क्यों क वह सोअर में रहने से डरता था: इस लये वह और उसकी दोनों बेटियां वहां एक गुफा में रहने लगे।

31 तब बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, हमारा पता बूढ़ा है, और पृथ्वी भर में कोई ऐसा पुरूष नहीं जो संसार की रीति के अनुसार हमारे पास आए:

32 सो आ, हम अपने पता को दाखमधु पला कर, उसके साथ सोएं, जिस से क हम अपने पता के वंश को बचाए रखें।

33 सो उन्होंने उसी दिन रात के समय अपने पता को दाखमधु पलाया, तब बड़ी बेटी जा कर
अपने पता के पास लेट गई; पर उसने न जाना, क वह कब लेटी, और कब उठ गई।

34 और ऐसा हुआ क दूसरे दिन बड़ी ने छोटी से कहा, देख, कल रात को मैं अपने पता के
साथ सोई: सो आज भी रात को हम उसको दाखमधु पलाएं; तब तू जा कर उसके साथ सोना
 क हम अपने पता के द्वारा वंश उत्पन्न करें।

35 सो उन्होंने उस दिन भी रात के समय अपने पता को दाखमधु पलाया: और छोटी बेटी
जा कर उसके पास लेट गई: पर उसको उसके भी सोने और उठने के समय का ज्ञान न था।

36 इस प्रकार से लूत की दोनो बेटियां अपने पता से गर्भवती हुई।
(उत्प त्त, अध्याय 19)

आइये अब देखे –

माँ बेटे का रिश्ता

इजराइल (याकूब) वहां थोड़े समय ठहरा। जब वह वहां था तब रूबेन इजराइल (याकूब) की दासी बिल्हा के साथ सोया। इजराइल ने इस बारे में सुना और बहुत क्रुद्ध हुआ।
(उत्प त्त ३५:२२)

अब इस बात का थोड़ा ग णत सम झए।

इजराइल (याकूब) के बीवी राहेल पुत्र को जन्म देते समय मर गयी तो – तो याकूब उसे दफनाने में व्यस्त था – बस फर क्या था रूबेन को मौक़ा मल गया – और उसने अपनी ही माँ के साथ रात बितायी (सम्भोग कया)

सम्बन्ध तो और भी बहुत से लोगो के इसी प्रकार से बाइबिल में लखे हैं – मगर पोस्ट बड़ी करने का उद्देश्य नहीं – इस लए एक बार स्वयं बाइबिल पढ़ कर वचार करे –

क्या ये ऐसे घटिया – और मान सक स्तर से गरे हुए लोग – जो अपने को स्वघो षत "पैगम्बर" और एक काल्पनिक गढ़ा हुआ खुदा "यहोवा" कोई सभ्य व्यक्ति हुए होंगे ?

एक तरफ यहोवा कहता है कोई व्य भचार नहीं करो – मगर उसके पैगम्बर और उसके बेटी बेटियो के कये भ्रष्ट आचरण को अपनी दैवीय मुहर लगाकर प वत्र बना देता है ?

कुछ उदहारण –

20 अम्राम ने अपनी फूफी योकेबेद को ब्याह लया और उससे हारून और मूसा उत्पन्न हुए,
और अम्राम की पूरी अवस्था एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई।
(निर्गमन, अध्याय 6)

29 अब्राम और नाहोर ने स्त्रियां ब्याह लीं: अब्राम की पत्नी का नाम तो सारै, और नाहोर की
पत्नी का नाम मल्का था, यह उस हारान की बेटी थी, जो मल्का और यिस्का दोनों का पता

था।
(उत्प त्त, अध्याय ११)

यहाँ अबिराहम तो वो जिसने अपनी बहिन साराह से सम्बन्ध बनाये – मगर यहाँ एक बात ध्यान से पढ़िए – अबिराहम के भाई नाहोर ने अपनी भतीजी मल्क से सम्बन्ध बनाये –

26 जब तक तेरह सत्तर वर्ष का हुआ, तब तक उसके द्वारा अब्राम, और नाहोर, और हारान उत्पन्न हुए॥
(उत्प त्त, अध्याय ११)

ये बाइबिल केवल अपने सेक्स की भूख कैसे और कस प्रकार शांत की जाए – एक नारी की अस्मत कैसे बर्बाद की जाए – कैसे हवस की भूख को पूरा कया जाए – उसकी सभी युक्तियाँ बाइबिल में पायी जाती हैं =

ये थोड़ा सा बाइबिल में नारी की स्थति वषय को बताया – बाकी सभी पाठकगण स्वयं वचार करे –

मेरे ईसाई मत्रो – आप क्यों संकोच में हो अभी तक – बाहर निकलो इस मजहबी गंदगी से – प्रकाश और ज्ञान की और आओ –

धर्म और सत्य की और आओ

आओ लौटो वेदो की और

नमस्ते'

क्या अर्जुन के रथ पर हनुमान जी वद्यमान थे ?

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

अर्जुन के रथ में जो पताका थी, उसमे केवल हनुमान जी ही स्था पत थे – ऐसा महाभारत नहीं कहती –

जैसे आज भी हम बहुत से अत्याधुनिक मसाइल, फाइटर प्लेन , एयरक्राफ्ट देखते हैं, उन सबमे, कुछ प्रतीक उपयोग कये जाते हैं, मसाल के तौर पर –

राष्ट्र का ध्वज

सेना से सम्बन्ध वभाग का लोगो

कुछ न. भी लखे होते हैं

आदि आदि अनेक एम्ब्लोम (प्रतीक चन्ह) भी स्था पत होते हैं।

इसी प्रकार – अर्जुन के रथ (वमान) में अनेक अनेक महापुरषो, वीरो, और पतरो आदि के मूर्ति (प्रतीक चन्ह) लगे हुए थे।

जो लोग केवल ये कहते हैं की हनुमान जी की ही मूर्ति या ध्वजा थी – वो कृपया एक बार – महाभारत में ही उद्योगपर्वान्तर्गत यानसन्धि पर्व – अध्याय ५६ श्लोक संख्या ७-८ पढ़ लेवे

संजय ने कहा – प्रजानाथ ! वश्वकर्मा त्वष्टा तथा प्रजापति ने इंद्र के साथ मलकर अर्जुन के रथ की ध्वजा में अनेक प्रकार के रूपों के रचना की है।। ७ ।।

उन तीनो ने देवमाया के द्वारा उस ध्वज में छोटी बड़ी अनेक प्रकार की बहुमूल्य एवं दिव्य मूर्तियों का निर्माण कया है ।। ८ ।।

इन श्लोको में अर्जुन के रथ की ध्वज का वर्णन है – स्पष्ट है कहीं भी केवल हनुमान जी का वर्णन नहीं है – क्यों क अनेक वीर, महापुरष, राजाओ आदि के चन्ह उस ध्वज पर अं कत कये गए थे ठीक ऐसे ही हनुमान जी भी उनमे से एक थे।

मगर कुछ मूर्खो ने केवल हनुमान जी को ही ध्वज पर दिखा कर अर्जुन, कृष्ण जैसे महावीरों की वलक्षण और ज्ञानग र्भत सोच को दर कनार करके – पक्षपाती तरीके से केवल हनुमान जी को ही ध्वज पर दिखाया –

क्या इस प्रकार के पक्षपात से अनेक वीरो और महापुरषो का अपमान नहीं होता ?

एक तरफ तो पौरा णक लोग कहते नहीं थकते की हनुमान जी प्रभु श्री राम के चरणो से हटते तक नहीं – दूसरी तरफ कृष्ण को राम का ही दूसरा रूप भी बताते हैं –

 फर मेरी शंका है – ये हनुमान जी कृष्ण यानी अपने प्रभु राम के चरणो से हटकर – उनके सर पर क्यों और कैसे सवार हो गए ?

क्या ये तर्क सही होगा ?

आशा है इस पोस्ट का सही मतलब समझा जाएगा

धन्यवाद

नोट : अर्जुन के रथ में १०० घोड़े (हार्सपावर) उपयोग था – जो एक फाइटर प्लेन था – जिसमे अनेक शस्त्र और तकनीकी थी – जिसके बारे में वस्तार से पोस्ट लखी जायेगी।

क्या हनुमान जी उड़कर समुद्र लांघ लंका पहुंचे थे ?

JULY 2, 2015 2 COMMENTS

सुन्दर काण्ड के पहले सर्ग में श्लोक संख्या १-९ – बाल्मी क रामायण में हनुमान जी के उड़ने जैसा कोई वर्णन कहीं प्राप्त नहीं होता है –

आ खर सच क्या है – आइये एक नजर बाल्मी क रामायण के सुन्दर काण्ड के पहले सर्ग में श्लोक संख्या १-९ तक देखे और वचार करते हैं :

जो हनुमान जी के उड़कर समुद्र लांघ कर लंका जाने की बात है वो भी एक मथक ही है – यदि आप बाल्मी क रामायण को पढ़े – तो सुन्दर काण्ड के पहले सर्ग में श्लोक संख्या १-९ – कृपया ध्यान दीजिये – इस रेफ को नोट कीजिये और जाकर चेक कीजिये – वहां वाल्मी क जी लखते हैं –

दुष्करं निष्प्रतिद्वद्वं चकीर्षन्कर्म वानरः।
समुदग्र शरोग्रीवो गवां पतिरिवाबभौ ।। १ ।।

प्लृवग प्लृवने कृतनिश्चयः।
ववृघे रामवृद्धयर्थे समुद्र इव पर्वसु ।। २ ।।

वकर्षन्नू र्मजालानी बृहन्ति ळवणाम्भ स।
पुप्लुवे क पशार्दूलो व करन्निव रोदसी ।। ३ ।।

मेरुमंदरसंकाशानुदगतांसुमहार्णवे।
अत्यक्राम्न्महावेगस्त रंगंगान्यन्निव ।। ४ ।।

ति मनक्रझषाः कूर्मा दृश्यन्ते ववृतास्तदा।
वस्त्रापकर्षणेनेव शरीरा ण शरीरिणाम ।। ५ ।।

येनासौ याति बलवान्वेगेन क पकुञ्जरः।
तेन मार्गेण सहसा द्रो णकृत इवार्णवः ।। ६ ।।

प्राप्तभूयिष्ठपारस्तु सर्वतः परिलोकयन्।
योजनानां शतस्यान्ते वनराजी ददर्श सः ।। ७ ।।

सागरं सागगनूपानसागरानूपजान्द्रुमान।
सागरस्य च पत्नीनां मुखान्या प वलोकयत ।। ८ ।।

स चारुनाना वघरूपधारी परं समासाद्य समुद्रतीरम।
निपत्य तीरे च महोदधेस्तदा ददर्श लंकाममरावती मव ।। ९ ।।

(सुन्दर काण्ड सर्ग १ श्लोक संख्या १-९)

अर्थ :

बड़ा, कठिन, तुलना से रहित कर्म करना चाहता हुआ, ऊँचे सर और ग्रीवावाला वानर सांड की तरह भासने लगा ।। १ ।।

डोंगी से तैरने में निश्चय वाला, डोंगी से तैरने वालो में श्रेष्ठो से देखा हुआ वह पर्वो में समुद्र के तरह राम के अर्थवृद् ध को प्राप्त हुआ ।। २ ।।

उस खारी जल में बड़े बड़े २ लहरो के समूहों को चीरता हुआ वह वानर श्रेष्ठ मानो द्यौ पृथ्वी पर (जल के फूल) बिखेरता हुआ खेवा करने लगा ।। ३ ।।

मेरु मंदर के बराबर महासागर में उठती हुई लहरो को बड़े वेगवाला, मानो गनता हुआ गया ।। ४ ।।

(बल से जल उछलने पर) मछ लये, मगर, मच्छ, इस तरह नंगे हुए दीखते हैं जैसे वस्त्र के खींच लेने से शरीर धारियों के शरीर ।। ५ ।।

बलवान वानर श्रेष्ठ वेग से जिस मार्ग से जा रहा था, उस मार्ग से समुद्र सहसा द्रोण की तरह होता जाता था (पानी में उसकी डोंगी के आकार बनते जाते थे) ।। ६ ।।

बहुत बड़ा भाग पार करके सब और देखता हुआ वह सौ योजन की समाप्ति पर वन समूह को देखता भया ।। ७ ।।

सागर, सागर के कनारे के देश, और उस देश में होने वाले वृक्ष और सागर की पत्नियें (नदियों) के मुहाने देखता भया ।। ८ ।।

सुन्दर नाना वधरूप धारी वानर समुद्र के परले तीर पर पहुंचकर महासागर के कनारे पर उतरकर अमरावती के तुल्य लंका को देखता भया ।। ९ ।।

इस सारे सर्ग से अ धकतर हनुमान जी का समुद्र को फांद कर पार होना पाया जाता है , जो क असंभव है। और ये कोई मथक अथवा लोकोक्ति बनायीं गयी लगती है – क्यों क यहाँ सर्ग में ही स्वयं वाल्मी क जी ने दूसरे श्लोक में हनुमान जी को डोंगी से तैर कर समुद्र पार करने का स्पष्ट इशारा कया है –

प्लव = छोटी नौका – डोंगी अथवा आज के समय पर तेज वेग से पानी में चलने वाली "वेवरनर" जैसा कोई तीव्र वाहन –

श्लोक ३ में लखा है – "उस खारी जल में बड़े बड़े २ लहरो के समूहों को चीरता हुआ वह वानर श्रेष्ठ" – आप वचार करे – बिना जल में कोई नौका चलाये ये काम असंभव है।

श्लोक ४ में लखा है – "मेरु मंदर के बराबर महासागर में उठती हुई लहरो को बड़े वेगवाला, मानो गनता हुआ गया" – स्वयं वचार करे – लहरे उठती रहती हैं समुद्र में – पर जैसे कोई "स फंग" करने गया मनुष्य उन उठती लहरो के ऊपर संतुलन बनाकर वेग से चलता है – ठीक वैसे ही इस श्लोक में बताया गया – उड़ना नहीं बताया।

श्लोक ४ में लखा है – "बलवान वानर श्रेष्ठ वेग से जिस मार्ग से जा रहा था, उस मार्ग से समुद्र सहसा द्रोण की तरह होता जाता था (पानी में उसकी डोंगी के आकार बनते जाते थे) – इस श्लोक से तो सारी शंकाओ का पूर्ण समाधान ही हो गया – जब भी पानी पर डोंगी नाव कुछ भी चलेगी वो पानी को चीरकर आगे बढ़ेगी जिससे उस मार्ग में पानी का रास्ता कटता हुआ दिखेगा जो नाव अथवा डोंगी के आकार का ही होगा – अ धक वश्लेषण हेतु एक बार इस पोस्ट के साथ संलग्न चत्र को देखे –

श्लोक 9 में लखा है – "सुन्दर नाना वधरूप धारी वानर समुद्र के परले तीर पर पहुंचकर महासागर के कनारे पर उतरकर अमरावती के तुल्य लंका को देखता भया" – अब दे खये यहाँ स्पष्ट रूप से व र्णत है हनुमान जी समुद्र के पार लंका के कसी तीर (नदी अथवा समुद्र का कनारा) पर पहुंच कर लंका को देखने लगे।

यहाँ वचारने योग्य बात यह है की यदि हनुमान जी उड़कर लंका गए होते तो कसी समुद्र कनारे उतरने की कोई आवश्यकता नहीं थी – वो सीधे ही लंका के महल पर उतरते – या फर जहाँ माता सीता को रखा गया था उस अशोक वाटिका में उतरते –
अ धक जानकारी के लए सुन्दर काण्ड के दुसरे सर्ग की श्लोक संख्या १-१७ भी पढ़ लेवे –

यहाँ संक्षेप में बताता हु – वहां लखा है –

हनुमान जी नीले हरे घास के, उत्तम गंध वाले, मधु वाले और उत्तम वृक्षों वाले वनो के मध्य में से गया। (सुन्दर काण्ड सर्ग २ श्लोक ३)

अब बताओ भाई – यहाँ स्पष्ट लखा है वनो के मध्य में से गए – फर उड़ कर वनो के ऊपर से क्यों नहीं गए ???????

इसके आगे के श्लोको में भी हनुमान जी के उड़ने का कोई वर्णन नहीं बल्कि स्पष्ट लखा है – वो चतुराई से कैसे लंका में दा खल हुए – उसके लए उन्हें शाम तक इन्तेजार करना पड़ा – यदि उड़ सकते होते तो शाम तक इन्तेजार करते क्या ????

कृपया सत्य को जाने और माने –

नमस्ते –

"द्रौपदी का चीरहरण" – भारतीय संस्कृति को बदनाम करने का षड्यंत्र – पार्ट 2

JULY 2, 2015 LEAVE A COMMENT

जैसे की पछली पोस्ट से स्पष्ट हुआ की "द्रौपदी का चीरहरण" मात्र कुछ धूर्तो की मलावट का परिणाम है – क्यों क महाभारत में द्रौपदी का चीरहरण जैसी कुत्सित घटना का होना एक असंभव कृत्य था – भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य आदि गुरुओ और वदुर जैसे महानितिनिपुण के होते – ये कार्य हो ही नहीं सकता था –
फर भी यदि कुछ हिन्दू भाई इस पक्ष में नहीं हैं – यदि वो अभी भी कहते हैं की द्रौपदी का चीरहरण हुआ था – तो इस पोस्ट को भी ध्यानपूर्वक पढ़ – सत्य से अवगत होकर अपने दुराग्रह और पूर्वाग्रह को छोड़ – संस्कृति और सभ्यता को बदनाम करना छोड़ देवे –

आइये गतलेख से आगे थोड़ा और वस्तार से समझते हैं –

जब पांडव जुए में राज्य के साथ साथ अपने आप को और द्रोपदी को हार गए तब पांड्वो की स्थिति दासों की तरह और द्रोपदी की स्थिति दासी की तरह रह गयी थी , अतः अब उन्हें

राजाओ अथवा राजकुमारों जैसे वस्त्र धारण करने का कोई अ धकार नहीं रह गया था । यही दशा द्रोपदी की भी थी , पर जब द्रोपदी सभा में लाई गयी , उस समय केवल पांडव उच्च कोटि और सज्जित वस्त्र धारण कये थे , और द्रौपदी ने केवल एक वस्त्र धारण कया हुआ था क्यों क द्रौपदी उस समय रजस्वला थी। अतः उनसे उनके वस्त्र उतर के दासो और दासी के परिधान पहन लेने के लए कहा गया।

द्रौपदी ने वरोध कया – क्यों की वो अपने आप को हारी हुयी नहीं मानती थी – द्रौपदी ने कहा – जब यु धष्ठर स्वयं अपने को हार गए तब कस प्रकार वे मुझे दांव पर लगाने का अ धकार रखते थे ?

द्रौपदी के प्रश्नो के उत्तर हेतु – वदुर ने सभासदो से पूछा – साथ में – धृतराष्ट्र का एक पुत्र " वकर्ण" स्वयं द्रौपदी के समर्थन में उत्तर आया – उसने भी यही कहा – जब यु धष्ठर स्वयं अपने को दांव पर लगा हार गए – तब कस प्रकार द्रौपदी को दांव लगाने का अ धकार यु धष्ठर के पास रहा ?

तब कोई जवाब ना पाकर – द्रौपदी हताश और निराश हो गयी – दुःशासन द्रौपदी को "दासी" कहकर सम्बो धत करने लगा – इतने में कर्ण ने अपने अनु चत वचनो से द्रौपदी को अनेक बुरे वचन कहकर दुःशासन को द्रौपदी और पांडवो के वस्त्र उतार लेने को कहा।

दुःशाशन ! यह वकर्ण अत्यंत मूढ है तथा प वद्वानों सी बाते बनाता है , तुम पांड्वो और द्रोपदी के भी वस्त्र उतर लो "
द्यूतपर्व अध्याय ६८ श्लोक ३८

ध्यान देने की बात है की कर्ण केवल द्रोपदी के ही वस्त्र उतरने के लए नहीं कहता वरन पांड्वो के भी वस्त्र उतरने के लए कहता है । इस बात से स्पष्ट है की "द्रौपदी का चीरहरण" मात्र कुछ लोगो की "धूर्त मान सकता" का परिणाम है।

असल में हुआ ये था की – पांडवो ने अपने वस्त्र उतार कर रख दिए और दासो के वस्त्र धारण कये होंगे –

वैशम्पायन जी कहते हैं – "जनमेजय ! कर्ण की बात सुन के समस्त पांड्वो ने अपने अपने राजकीय वस्त्र उतार कर सभा में बैठ गए (सभा पर्व अध्याय 68, श्लोक 39)

क्यों क द्रौपदी अपने को हारी नहीं मानती थी – इस लए दुःशासन को जबरदस्ती द्रौपदी के कपडे बदलवाने हेतु ववश कया गया था – जिसे "धूर्तमंडली" व्याख्याकारों ने – चीरहरण का नाम दिया।

यदि एक बार ऐसा भी मान ले – की दुःशासन ने चीरहरण करने को द्रौपदी की साडी खींची और कृष्ण ने साडी को बढ़ा दिया – तो भाई जरा इस श्लोक पर भी एक सरसरी नजर डाल लेवे –

वैशम्पायनजी कहते हैं – जनमेजय ! उस समय द्रौपदी के केश बिखर गए थे। दुःशासन के झकझोरने से उसका आधा वस्त्र भी खसककर गर गया था। वह लाज से गाड़ी जाती थी और भीतर ही भीतर दग्ध हो रही थी। उसी दशा में वह धीरे से इस प्रकार बोली

द्रौपदी ने कहा – अरे दुष्ट ! ये सभा में शास्त्रो के वद्वान, कर्मठ और इंद्र के सामान तेजस्वी मेरे पता के सामान सभी गुरुजन बैठे हुए हैं। मैं उनके सामने इस रूप में कड़ी होना नहीं चाहती।

क्रूरकर्मा दुराचारी दुःशासन ! तू इस प्रकार मुझे ना खींच, ना खींच, मुझे वस्त्रहीन मत कर। इंद्र आदि देवता भी तेरी सहायता के लए आ जाएँ, तो भी मेरे पति राजकुमार पांडव तेरे इस अत्याचार को सहन नहीं कर सकेंगे।
द्यूतपर्व – अध्याय ६७ : ३५-३७

यदि कृष्ण ने साडी देकर नग्न होने से बचाया – तो भाई – इन श्लोक के अनुसार तो द्रौपदी अर्धनग्न हो चुकी थी – तभी क्यों नहीं बचा लया ? या फर जब दुःशासन बाल पकड़कर जबरदस्ती द्रौपदी को खींच रहा था – और द्रौपदी कृष्ण को आवाज़ लगा बुला रही थी – तब ही क्यों नहीं कृष्ण ने बचा लया ?

क्या कृष्ण जी इस बात का इन्तेजार कर रहे थे की – कब दुःशासन साडी खींचे और मैं चमत्कार दिखाऊ ?

क्या कृष्ण द्रौपदी की पहली आवाज़ सुनकर ही नहीं बचा सकते थे ? यदि पहली आवाज़ पर ही बचा लया होता – तो ये धूर्तो ने जो मलावट करने की को शश की – वो होती ही नहीं –

आगे दे खये –

वनपर्व में जब श्रीकृष्ण जंगल में पांडवों से मलने गए थे। वहाँ श्रीकृष्ण ने बताया की वें द्युतसभा में जो कुछ भी हुआ था उससे अन भज्ञ है। उन्होने ये भी कहा की अगर वें वहाँ मौजुद होते तो यु धष्ठिर को ऐसा कभी नही करने देतें। यु धष्ठिर ने पुछा की उस वक्त वें कहाँ थे तब श्रीकृष्ण ने बताया की उस वक्त शाल्व ने अपने प्रचंड 'सौभ' वमान से द्वारका पर उपर से बमबारी शुरु कर द्वारका जला रहा था, इस लए श्रीकृष्ण उसे मारने के लए गए थे, जब वो वमान का संहार करके वा पस आए तब उन्हे सात्यकी से खबर मली की द्युतसभा में यु धष्ठिर जुए में सारा राज्य हार गया और इस लए वें दौडते पांडवों से मलने जंगल में आए।

आगे कसी जगह दुःखी द्रौपदी भी यु धष्ठिर, अर्जुन और अपने भाई को कोसते हुए कहती है की उनमें से कोई भी उसकी वटंबना रोकने नहीं आया इस लए उनमें से कोई भी उसका अपना नहीं है। वो उधर खडे श्रीकृष्ण को भी कहती है की तुम भी मेरी मदद के लए नहीं आए इस लए कृष्ण तुम भी मेरें नहीं। अगर कृष्णने सचमें वस्त्रावतार लया था तब द्रौपदी क्या उन्हे ऐसे शब्द कहती?

ये सारी घटनाओ से ज्ञात होता है की द्रौपदी का चीरहरण हुआ नहीं था – मात्र कुछ धूर्तो ने कृष्ण के चमत्कार को दर्शाने के लए ये सब मनगढ़ंत बात गढ़ी है –

एक आखरी पोस्ट और आएगी – जिसमे इस द्यूतपर्व में मलावट की पूरी स्थति आपके सामने आ जाएगी

अपनी सभ्यता और संस्कृति पर स्वयं ही मथ्या दोष न गढ़े।

कृपया सत्य को जानिये –

वेदो की और लौटिए

ईश्वर का वैदिक स्वरुप – ईश्वर, जीव और प्रकृति – तीनो कारण स्वयं सद्ध और अनादि हैं

JULY 1, 2015 LEAVE A COMMENT

संस्कृत भाषा में परमात्मा = परम + आत्मा तथा जीवात्मा = जीव + आत्मा दो शब्द हैं।

परमात्मा शब्द का अर्थ है – सर्वश्रेष्ठ आत्मा

और जीवात्मा का अर्थ है प्राणधारी आत्मा

आत्मा शब्द दोनों के लए आता है और बहुधा परम-आत्मा तथा जीव-आत्माओ का भेदभाव कये बिना समस्त जीवनतत्वो के लए व्यवहृत कया जाता है।

परमात्मा और जीवात्माओं के कार्यो में इतनी समानता है [मगर दोनों के कार्य क्षेत्र निसंदेह अत्यंत व भन्न हैं] की प्रायः इनके सम्बन्ध के वषय में भ्रम हो जाता है और इस भ्रम के कारन दर्शनशास्त्र तथा धर्म दोनों क्षेत्रो में बाल की खाल निकाली जाती है।

खासतौर पर ईश्वर को ना मानने वाले लोग मनुष्य को ही " सद्ध" व "ईश्वर" का दर्जा देकर अपनी अल्पज्ञता के कारण ऐसा वचार लाते हैं –

वैदिक ईश्वर का स्वरुप कैसा है और जीव का स्वरुप कैसा है – जब इस प्रकार की चर्चा की जाती है तब आवश्यक हो जाता है इस प्रकृति के बारे में भी कुछ जाना जाए – तो आइये – इस वषय पर कुछ वचार करे –

इस कार्यरूप सृष्टि में तीन नियम बहुत ही स्पष्ट रूप से दीखते हैं :

पहिला – इस सृष्टि का प्रत्येक पदार्थ नियमपूर्वक, परिवर्तनशील है।

दूसरा – प्रत्येक जाती के प्राणी अपनी जाती के ही अंदर उत्तम, माध्यम और निकृष्ट स्वाभाव से पैदा होते हैं।

तीसरा – इस वशाल सृष्टि में जो कुछ कार्य हो रहा है वह सब निय मत, बुद् धपूर्वक और आवश्यक है।

पहिला नियम : सृष्टि नियमपूर्वक परिवर्तनशील है इसका अर्थ जो लोग सृष्टि को स्वाभा वक गुण से परिवर्तनशील मानते हैं वे गलती पर हैं क्यों क स्वाभाव में परिवर्तन नहीं होता ऐसे लोग भूल जाते हैं की परिवर्तन नाम है अस्थिरता का और स्वाभाव में अस्थिरता नहीं होती क्यों क उलटपलट, अस्थिर ये नै म त्तक गुण हैं स्वाभा वक नहीं। इस लए सृष्टि में परिवर्तन स्वाभा वक नहीं। इसकी एक बड़ी वजह ये भी है की यदि प्रकृति में परिवर्तन स्वाभा वक माने तो ये अनंत परिवर्तन यानी अनंत गति माननी पड़ेगी और फर एकसमान अनंत गति मानने से संसार में कसी भी प्रकार से ह्रास वकास संभव नहीं रहेगा कन्तु सृष्टि में बनने और बिगड़ने की निरंतर प्र क्रया से सद्ध होता है की सृष्टि का परिवर्तन नै म त्तक है सवभ वक नहीं, इसी लिए इस परिवर्तनरुपी प्रधान नियम के द्वारा यह सद्ध होता है की सृष्टि के मूल कारणों में से यह एक प्रधान कारण है जो खंड खंड, परिवर्तन शील और परमाणुरूप से वद्यमान है। परन्तु यह परमाणु चेतन और ज्ञानवान नहीं हैं इसकी बड़ी वजह है की जो भी चेतन और ज्ञानवान सत्ता होगी वो कभी दूसरे के बनाये नियमो में बंध नहीं सकती बल्कि ऐसी सत्ता अपनी ज्ञानस्वतंत्रता से निर्धारित नियमो में बाधा पहुचाती है – जहाँ तक हम देखते हैं परमाणु बड़ी ही सच्चाई से अपना काम कर रहे हैं – जिस भी जगह उनको दूसरे जड़ पदार्थो में जोड़ा गया – वहां आँख बंद करके भी कार्य कर रहे हैं जरा भी इधर उधर नहीं होते इससे ज्ञात होता है की इस सृष्टि का परिवर्तनशील कारण जो परमाणु रूप में वद्यमान है ज्ञानवान नहीं बल्कि जड़ है – इसी जड़, परिवर्तनशील और परमाणु रूप उपादान कारण को माया, प्रकृति, परमाणु मेटर आदि नामो से कहा जाता है और संसार के कारणों में से एक समझा जाता है

दूसरा नियम : सभी प्रा णयों के उत्तम और निकृष्ट स्वाभाव हैं। अनेक मनुष्य प्रतिभावान, सौम्य और दयावान होते हैं, अनेक मुर्ख उद्दंड और निर्दय होते हैं। इसी प्रकार अनेक गौ, घोडा आदि पशु स्वाभाव से ही सीधे होते हैं और अनेक शेर, आदि क्रोधी और दौड़दौड़कर मारने वाले होते हैं यहाँ देखने वाली बात है की ये स्वभाव वरोध शारीरिक यानी भौतिक नहीं बल्कि आध्यात्मिक है, जो चैतन्य बुद् ध और ज्ञान से सम्बन्ध रखता है। ले कन ध्यान देने वाली है ये ज्ञान प्रा णयों के सारे शरीर में व्याप्त नहीं है, क्यों क यदि सारे शरीर में ये ज्ञान व्याप्त होता तो कसी का कोई अंग भंग यथा अंगुली, हाथ, पैर आदि कट जाने पर उसका ज्ञानंश कम हो जाना चाहिए ले कन वस्तुतः ऐसा होता नहीं इस लए यह निश्चित और नि र्ववाद है की ज्ञानवाली शक्ति जो प्रा णयों में वास करती है वो पुरे शरीर में व्याप्त नहीं है प्रत्युत वह एकदेशी, परिच्छिन्न और अनुरूप ही है क्यों क सुक्षतिसूक्ष्म कृ मयों में भी मौजूद है दूसरा तथ्य ये भी है की यदि पुरे शरीर में ज्ञानशक्ति मौजूद होती तो जैसे शरीर का आकर बढ़ता है वैसे उस शक्ति को भी बढ़ना पड़ता जब क ऐसा होता नहीं और ये शक्ति परमाणुओ के संयोग से भी नहीं बनी क्यों क ऊपर सद्ध कया गया की ज्ञानवान तत्व, परमाणु संयुक्त होकर नहीं बन सकता और न ही ये हो सकता है की अनेक जड़ और अज्ञानी परमाणु एकत्रित होकर परस्पर संवाद ही जारी रख सकते हो। यदि कोई मनुष्य ब्रिटेन में जिस समय पर गाडी दौड़ा रहा है – तो उसी समय पूरी दुनिया में मौजूद इंसान उस गाडी और मनुष्य को नहीं देख पा रहे इस लए प्रा णयों में मौजूद ज्ञानवान शक्ति, अल्पज्ञ है, एकदेशी है, परिच्छिन्न है। इस लए इस शक्ति को जीव, रूह और सोल के नाम से जानते हैं।

इस वस्तृत सृष्टि में जो कुछ कार्य हो रहा है, वह निय मत, बुद् धपूर्वक और आवश्यक है। सूर्य चन्द्र और समस्त ग्रह उपग्रह अपनी अपनी नियत धुरी पर निय मत रूप से भ्रमण कर रहे हैं। पृथ्वी अपनी दैनिक और वा र्षक गति के साथ अपनी नियत सीमा में घूम रही है। वर्षा, सर्दी और गर्मी नियत समय में होती है। मनुष्य और पशुपक्ष्यादि के शरीरो की बनावट वृक्षों में फूलो और फलो की उत्प त्त, बीज से वृक्ष और वृक्ष से बीज का नियम और प्रत्येक जाती की आयु और भोगो की व्यवस्था आदि जितने इस सृष्टि के स्थूल सूक्ष्म व्यवहार हैं, सबमे व्यवस्था, प्रबंध और नियम पाया जाता है। नियामक के नियम का सब बड़ा चमकार तो प्रत्येक प्राणी के शरीर की वृद् ध और ह्रास में दिखलाई देता है। क्यों एक बालक नियत समय तक बढ़ता और क्यों एक जवान धीरे धीरे ह्रास की और – वृद्धावस्था की और बढ़ता जाता है इस बात का जवाब कोई नहीं दे सकता यदि कोई कहे की वृद् ध और ह्रास का कारण आहार आदि पोषक पदार्थ हैं, तो ये युक्तियुक्त और प्रामा णक नहीं होगा क्यों क हम रोज देखते हैं एक ही घर में एक ही परिस्थिति में और एक ही आहार व्यवहार के साथ रहते हुए भी छोटे छोटे बच्चे बढ़ते जाते हैं और जवान वृद्ध होते जाते हैं तथा वृद्ध अ धक जर्जरित होते जाते हैं। इन प्रबल और चमत्कारिक नियमो से सू चत होता है की इस सृष्टि के अंदर एक अत्यंत सूक्ष्म, सर्वव्यापक, परिपूर्ण और ज्ञानरूपा चेतनशक्ति वद्यमान है जो अनंत आकाश में फ़ैल हुए असंख्य लोकलोकान्तरो का भीतरी और बाहरी प्रबंध कये हुए हैं। ऐसा इस लए ता र्कक और प्रामा णक है क्यों क नियम बिना नियामक के, नियामक बिना ज्ञान के और ज्ञान बिना ज्ञानी के ठहर नहीं सकता। हम सम्पूर्ण सृष्टि में नियमपूर्वक व्यवस्था देखते हैं, इस लए सृष्टि का यह तीसरा कारण भी सृष्टि के नियमो से ही सद्ध होता है। इसी को परमात्मा, ईश्वर खुदा और गॉड कहते आदि अनेक नामो से पुकारते हैं हैं जिसका मुख्य नाम ओ३म है।

सृष्टि के ये तीनो कारण स्वयं सद्ध और अनादि हैं।

मेरे मत्रो, ज्ञान और वज्ञान की और लौटिए,

सत्य और न्याय की और लौटिए

वेदो की और लौटिए….

आओ लौट चले वेदो की और।

ईश्वर वचार – तर्क आधार पर ईश्वर की सद् ध

JUNE 30, 2015 LEAVE A COMMENT

जब हम संसार में कसी पदार्थ को देखते हैं तो हमें उस में दो प्रकार के पदार्थ प्रतीत होते हैं – एक परिणामी दूसरे अपरिणामी।

जितने साकार पदार्थ हैं वे सब परिणामी और जितने निराकार पदार्थ हैं वे अपरिणामी हैं।

परन्तु जब हम इन साकार पदार्थो में प्रथम मनुष्य शरीर को देखते हैं तो यह शरीर माता पता के संयोग से उत्पन्न होता है बढ़ता है घटता है और अंत को नष्ट हो जाता है इससे

हमें क्या अनुमान होता है जो पैदा हुआ है वो नष्ट भी होगा जिस में परिणाम है वह पैदा हुआ है। जब परिणामी पदार्थो को उत्प त्त वाला सद्ध कर लेते हैं तो हम व्यष्टि पदार्थ अर्थ एक व्यक्ति को छोड़ कर समष्टि जगत को देखते हैं तो यह ही परिणाम प्रतीत होता है की अवयवी के अवयव परिणाम को प्राप्त होते हैं वह अवयवी भी परिणामी होता है क्यों क सम्पूर्ण अवयवो का नाम अवयवी है जब हम इस प्रकार सूक्ष्म वचार करते हैं तो हमें जगत परिणामी प्रतीत होने लगता है हम जगत के परिणामी होने से उसकी उत्प त्त का अनुमान कर लेते हैं यद्य प मध्य अवस्था में उसकी उत्प त्त का बोध अनुमान के बिना नहीं होता फर भी शब्द प्रमाण से जगत हुतपन्न हुआ और जगत, संसार, सृष्टि इसके पर्यायवाचक जितने शब्द दिए जाते हैं सब के अर्थ उत्प त्त वाले के हैं।

जब हमने जगत को उत्प त्त वाला अनुभव कया तो हमारा वचार वह होता है की यह उत्प त्त स्वाभा वक है या नै म त्तक दूसरे हम जिस पदार्थ की उत्प त्त जिस पदार्थ से देखते हैं उसका लय भी उसी पदार्थ में होता है इस से कार्यरुप सब पदार्थो में अनित्यता और कारणरूप पदार्थो में नित्यता का बोध होता है जब हम पांच भूतो में अर्थात पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश में सब पदार्थो का लय देखते हैं तो उन्ही पंच पदार्थो से इस जगत की उत्प त्त का वचार करते हैं.

यद्य प कार्य अवस्था इन पदार्थो की अनित्य है परन्तु कर्णावस्था में यह नित्य होते हैं जब हम जगत के उपादान कारण नि मत्त भी हैं अथवा जगत पंचभूतों ही से उत्पन्न हुआ वा इन के बिना कोई और भी पदार्थ है ?

जब हम पृथ्वी को वचरते हैं तो जड़ प्रतीत होती है जल भी ज्ञानशून्य है अग्नि भी ज्ञान नहीं रखती वायु में भी ज्ञान का अभाव वही प्रतीत होता है आकाश ज्ञान से हीं है इस प्रकार के वचार से हम सम्पूर्ण भूतो को ज्ञान से रहित पाते हैं।

परन्तु जब हम संसार में जो सोने के बने गहने में सोने और गुण और चांदी में चांदी के गुण पाते हैं इस से हमको बोध होता है की कारण के गुण अनुकूल कार्य में गन रहते हैं। जब भूतो में ज्ञान गुण नहीं हैं तो उसके कार्यरूप जगत में भी ज्ञान नहीं हो सकता और जगत में मनुष्यो को ज्ञान से युक्त देखते हैं तो शीघ्र वचार उत्पन्न होता है की यह ज्ञान गुण कसका है ?

बहुत से लोग खासकर चार्वाकी कहते हैं पृथक भूतो में तो चैतन्यता नहीं कन्तु संयोग से उत्पन्न होती है यहाँ ध्यान देने वाली बात है की जो गुण एक एक में न रहे वह संयोग से उत्पन्न नहीं होता जैसे मैदे में मधुरता नहीं – जल में मधुरता नहीं उत्पन्न होती – चीनी में मधुरता है – जल में मलाने से तुरंत मधुरता उत्पन्न हो जाती है।

दूसरे रेल के इंजन में पृथ्वी है, जल है, अग्नि है, वायु है, आकाश है परन्तु ज्ञानशक्ति नहीं है, मृतक शरीर में पांचो ज्ञानशक्ति का आधार कोई दूसरी वास्तु है। जब हम इस प्रकार सृष्टि में जड़ चैतन्य को दो स्वरूप करके वचार लेते हैं तो हमको सृष्टि में इनका संयोग और सृष्टि में स्वाभाव से संयोग है या नि मत्त से यह वचार उत्पन्न होता है। जब हम बाज़ार जाते हैं तो हम को कभी कहीं ईंटे गरी पड़ी पाती है तो हम अनुमान से जान जाते हैं ये स्वाभा वक गरी होंगी। परन्तु यदि कसी स्थान पर १० की निश्चित संख्या में गन गन के

 कसी ने राखी हैं तो इससे यह सद्ध होता है की जहाँ पर नियम हैं वह नै म त्तक और जो वे नियम हैं वह स्वाभा वक हैं।

जब सृष्टि में नियम को देखते हैं तो इसके हर एक पदार्थ में नियम प्रतीत होता है, मनुष्य स्त्री के संयोग से लड़का उत्पन्न होता है, घोडा घोड़ी के संयोग से घोडा ही होता है, घोड़ी और गधे के संयोग से खच्चर – इसी प्रकार सब पदार्थ नियमानुसार प्रतीत होते हैं, गर्मी में देश घंटे की रात और सर्दी में १४ घंटे की – कहने का तात्पर्य जिधर देखो उधर नियम बंध रहा है फर इसे कस युक्ति से स्वाभा वक माने ?

दूसरा जो स्वाभा वक गुण हैं वे सर्वदा एक रास रहते हैं वे बिना कसी नि मत्त के बदलते नहीं जैसे जल का स्वाभाव शीतल है वह बिना अग्नि संयोग के उष्ण न होगा – इससे सद्ध है की जल में उत्पन्न वह उष्णता अग्नि की है – न की जल की – इससे सद्ध है की पंचभूतों में ज्ञान नहीं – ना ही वे स्वयं से संयोग वयोग कर ही सकते हैं क्यों क पंचभूत जड़ पदार्थ हैं –

इस लए भूतो के स्वाभाव से तो जगत की उत्प त्त असंभव है – इस लए यह निश्चित कया जाता है की जगत का नि मत्त कारण ज्ञानशक्ति संपन्न सर्वशक्तिमान कोई ना कोई अवश्य ही है।

जब हम इस प्रकार ईश्वर को मानेंगे तो कुछ लोगो को शंका उत्पन्न होगी की –

ईश्वर ने जगत उत्पन्न कया है तो ईश्वर को कसने उत्पन्न कया ?

इसका उत्तर है की –

परिणामी पदार्थ कार्य होते हैं उनको कारण की अपेक्षा होती है यदि ईश्वर परिणामी हो तो उसका भी कारण हो मगर ईश्वर नित्य है अपरिणामी है – उसका कर्ता नहीं हो सकता।

यदि कोई कहे ईश्वर कहाँ है ?

तो उत्तर यही ठीक है रहने का ठिकाना एकदेशी के लए होता है – वभु के लए नहीं –

इस लए ईश्वर निराकार शक्ति है जो जगत का नि मत्त कारण है

इति सद्धम

न जहर, न मांसाहार, दूध है अमृत

JUNE 30, 2015 LEAVE A COMMENT

दूध – मधुर, स्निग्ध, रु चकर, स्वादिष्ट और वात- पत्त नाशक होता है। यह वीर्य,

बुद् ध और कफ वर्धक होता है। शीतलता, ओज, स्फूर्ति और स्वास्थ्य प्रदायक होता है।

स्त्री और गाय का दूध गुण-धर्म की दृष्टि से समान होता है। उसमें वटा मन ए और खनिज तत्व होते हैं, जो रोगों से लड़ने की ताकत (प्रतिरोधक क्षमता) प्रदान करते हैं और आंखों का तेज बढ़ाते हैं। दूध एक पूर्ण आहार है। शरीर को पुष्ट और स्वस्थ रखने के लए जितने तत्वों की जरूरत होती है, वे सभी उसमें पाए जाते हैं।

दूध रक्त नहीं है। इसका सबसे बड़ा वैज्ञानिक प्रमाण तो यह है क दूध में जो केसीन नामक प्रोटीन मौजूद रहता है, वह खून और मांस में नहीं पाया जाता। जो रक्त क णकाएं (डब्ल्यूबीसी, आरबीसी) और प्लेटलेट्स खून में पाए जाते हैं, वे दूध में नहीं होते। यह बात साइंसदानों ने दूध का बेंजोइक टेस्ट करके बताई है। यह परीक्षण कसी भी पैथोलॉजी लैब में कसी भी डॉक्टर से कराकर देखा जा सकता है। दूध एनिमल प्रॉडक्ट होने पर भी रक्त-मांस से बिल्कुल अलग एक शुद्ध रस है।

कोई यह तर्क दे सकता है क दूध में वही प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट्स और शर्करा आदि तत्व पाए जाते हैं, जो खून में पाए जाते हैं, इस लए दोनों एक हैं। ले कन अगर यह तर्क सही है, तो वे सभी तत्व हरे या भगोए हुए सोया, गेहूं, चना आदि अनाज में भी पाए जाते हैं, लहाजा उन्हें भी मांसाहार कहना पड़ेगा, जो क सही नहीं होगा।

यह सही है क जेनेटिक ब्लू प्रंट के मुताबिक अपनी-अपनी प्रजाति की मां का दूध सबसे अच्छा होता है इस लए गाय का बछड़ा गाय का दूध, बकरी का मेमना बकरी का दूध, बिल्ली का बच्चा बिल्ली का दूध और शेरनी का बच्चा शेरनी का दूध पीता है। इस प्रकार सभी स्तनधारी प्रा णयों की मांएं अपने बच्चों के पोषण और वकास के लए दूध देती हैं।

ले कन यह भी सदियों से आजमाई हुई बात है क जिन प्रा णयों की मां नहीं होती या दूध नहीं दे पाती, गाय उनकी मां बन जाती है। गाय का दूध सभी प्रा णयों के अनुकूल पड़ता है और पर्याप्त मात्रा में प्राप्त कया जा सकता है। इसके उलट अन्य प्रा णयों का दूध प्रतिकूल और अपर्याप्त होने से सभी के काम नहीं आता। ले कन याद रखें क दूध मां का हो या गाय का, उसका सेवन करने की एक निश्चित मात्रा होती है। यदि उससे अ धक ग्रहण कया जाएगा, तो हानि पहुंचाएगा। इस लए 'हित मत भुख' यानी थोड़ा और हितकारी भोजन करने को कहा गया है। अति तो हर चीज की बुरी होती है। यह कह कर भी दूध को खारिज नहीं कया जा सकता क वह छह से आठ घंटे में पचता है। बहुत सी ऐसी शक्तिवर्धक चीजें (बादाम, काजू, मूंगफली आदि) हैं, जिन्हें पचने में इससे ज्यादा समय लगता है।

शशु अवस्था में लेक्टॉस एंजाइम का पर्याप्त मात्रा में स्त्राव होता है। वे ही एंजाइम दूध को पचाते हैं, इस लए बच्चों का वह पूर्ण आहार होता है, ले कन जैसे-जैसे उम्र बढ़ती जाती है, लेक्टॉस एंजाइम का स्त्राव घटता जाता है। फर भी लगातार दूध पीने वालों को यह पचता रहता है। यूनिव र्सटी ऑफ कै लफॉर्निया में क्लिनिकल इम्यूनोलॉजी के प्रोफेसर डॉ. ट्यूबर का कहना है क जो वयस्क आदतन दूध और उससे बने उत्पादों का सेवन करते हैं, उनके लेक्टॉस एंजाइम स क्रय बने रहते हैं और दूध पचता रहता है। ले कन जो बचपन के बाद दूध का सेवन बंद कर देते हैं, उनमें इस एंजाइम का संश्लेषण बंद हो जाता है। ऐसे व्यक्तियों को दूध पीने के बाद डायरिया और पेट दर्द की शकायत हो सकती है। ले कन दूध नहीं पचा सकने वाला व्यक्ति अगर (चावल,

रोटी आदि के साथ) थोड़ा-थोड़ा बढ़ाते हुए क्रम से दूध का सेवन करता है, तो एंजाइम की मात्रा सुधर जाती है और दूध पचने लगता है।

दूध इतना अ धक होता है क उसे दुहा जाना जरूरी है। हानाह शोध संस्थान के डॉक्टर वाइल्ड का कहना है क अगर दूध दुहा न जाए, तो स्तन ग्रं थयों पर बुरा असर पड़ता है। इससे स्तन को शकाएं मरने लगती हैं। ले कन यह ध्यान रखना चाहिए क बछड़े को पेट भर दूध मले। इंजेक्शन का इस्तेमाल कभी नहीं करना चाहिए।

दूध का उपयोग अनादिकाल से हो रहा है। हमारे महापुरुष इसी अमृत को पीकर बड़े हुए। इस लए दूध के आलोचकों को न सर्फ तथ्यों से, बल्कि परंपरा से भी सबक लेना चाहिए।

ईश्वर नियंता है, न्यायकारी है, आधीन नहीं

JUNE 30, 2015 LEAVE A COMMENT

मत्रो,

आज बात करते हैं सद्धांतो और नियमो की – क्यों क बिना इनके न तो धर्म संभव है न ही ज्ञान –

वैदिक वचार – ईश्वर ऐसा कुछ नहीं कर सकता जो सृष्टि नियम और सद्धांत वरुद्ध हो – क्यों क ईश्वर सर्वज्ञ है – न्यायकारी है – सत्य है – ज्ञानी है आदि आदि।

कुछ हिन्दू भाई धर्म तत्व से अन भज्ञ होकर सृष्टि नियम व सद्धांतो को ताक पर रखकर ईश्वर पर केवल दोष सद्ध करके उसे न्यायकारी परमात्मा को अन्यायकारी और नियम वरुद्ध चलने वाला मान बैठते हैं – जिससे वो खुद ही नहीं जान पाते की ईश्वर क्या है – आइये एक छोटे से उदहारण से समझने की को शश करते हैं –

सद्धांत क्या हैं और नियम क्या हैं – पहले ये समझना होगा –

सद्धांत – जो अटल हो – सत्य हो – तर्कपूर्ण हो – जिनसे सद्ध कया जाता है – ये छोटी सी परिभाषा है – समझने के लए।

नियम – जो निय मत हो – जिनमे परिवर्तन न होता हो – जो मान्य हो – सत्य और न्याय पर आधारित हो – ये छोटी सी परिभाषा है – समझने के लए।

2 + 2 = 4 ये एक बहुत छोटा सा सवाल है जिसे एक पहली कक्षा में पढ़ने वाला वद्यार्थी भी आसानी से हल कर सकता है – ये सवाल जिसका जवाब सैद्धांतिक और नियमानुसार नहीं बदल सकता – एक ही जवाब आएगा चाहे कसी भी प्रकार सद्ध कया जाये।

यदि हम भी इस सवाल का उत्तर देंगे तो यही होगा – क्यों क यह न्याय और सद्धांतो की बात है – इसका कतई मतलब ये नहीं निकल सकता की हम इस सद्धांत के आधीन हैं।

आधीनता और स्वाधीनता चेतन तत्वों में ही चरितार्थ हो सकती है – जड़ तत्वों में नहीं। क्यों क सद्धांत और नियम जड़ तत्व हैं – इस लए कोई चेतन वस्तु इनके आधीन नहीं हो सकती।

अब कुछ लोग कहेंगे क्यों क भारतीय सं वधान है वो जड़ है मगर एक जज उसके आधीन है। तो यहाँ दो बाते समझने वाली हैं –

१. क्यों क सं वधान है – तो उसको कसीने बनाया होगा – और बनाने वाला चेतन होगा क्यों क वचार और कर्म चेतन में ही संभव है जड़ में नहीं। इस लए यदि आप कहो की कोई जज भारतीय सं वधान के आधीन है तो पहले तो आपको यही सद्धांत स्वीकार करना पड़ेगा की ईश्वर है क्यों क इस सृष्टि के नियम और सद्धांत स्वयं नहीं बन सकते उनको बनाने वाली कोई सत्ता होनी चाहिए जो चेतन हो इस लए ईश्वर है।

२. जज आधीन नहीं, स्वतंत्र है क्यों क वो अपने ववेक और न्याय से फैसला करता है। यदि जज कसी के आधीन हो तो न्याय नहीं कर सकता क्यों क न्याय करने के लए नियम होने चाहिए इस लए वो नियमानुसार ही न्याय करेगा यदि नियमानुसार न्याय न करे तो पक्षपाती और दुष्ट कहलाये फर उसको जज कोई कैसे कहे ? इस लए की ईश्वर न्यायकारी है और न्याय के लए नियम चाहिए क्यों क वो सबको एकसमान न्याय करता है पक्षपात नहीं इस लए वो नियंता है –

नियंता आधीन नहीं होता – नियंता नियम से न्याय करता है इसी लए वो स्वतंत्र होना चाहिए – बिना स्वतंत्र हुए वो नियमपूर्वक न्याय नहीं कर सकता।

जीव नियमो के आधीन है क्यों क जीव को कर्मो के फल भोग करने हैं। और ईश्वर स्वतंत्र है इस लए नियमानुसार कर्मो के फल, जीव को भोग करवाता है।

अतः ईश्वर सर्वज्ञ, न्यायकारी है इस लए स्वतंत्र है।

जीव अल्पज्ञ है, कर्मो के फल भोग हेतु परतंत्र है।

जगत और जगत का कारण जड़ है।

नमस्ते

शव लंग – ईश्वर के कल्याणकारी और मंगलमय होने का प्रमाण

JUNE 30, 2015 LEAVE A COMMENT

कुछ लोग लंग शब्द की व्याख्या ठीक नहीं करते –

कुछ लंग शब्द की व्याख्या ही गलत करते हैं –

कुछ ऐसे भी हैं जो लंग शब्द की व्याख्या अपने अनुरूप करते हैं –

अब पता नहीं ये अति व शष्ट ज्ञानी – कौन से ज्ञान का प्रदर्शन करते है ?????

सदैव अर्थ का अनर्थ ही करते हैं –

उनमे कुछ ऐसे भी हैं जो बस केवल लंग शब्द की व्याख्या कर " शव लंग" को सद्ध करना चाहते हैं – जब इन व्यख्याकारो से इस शब्द के अर्थ का प्रमाण मांगो की ये अर्थ कहाँ से कस आधार पर कया तो वो उनके पास होता नहीं – फर और ज्ञान का प्रदर्शन कर अपशब्द और भद्दी भद्दी गा लयाँ शुरू हो जाती हैं – जब पुराणो से " शव लंग" बताओ तो मानते नहीं – बस अपना अनर्थ ही सद्ध करने का प्रयोजन करते हैं जो ठीक वदित नहीं होता –

आइये देखते हैं – लंग का अर्थ आ खर है क्या ???

लंग का अर्थ होता है "प्रमाण" –
ब्रह्म सूत्र के चौथे अध्याय के पहले पाद का दूसरा सूत्र है-

" लंगाच्च"

वेदों और वेदान्त में लंग शब्द सूक्ष्म शरीर के लए आया है. सूक्ष्म शरीर 17 तत्त्वों से बना है. शतपथ ब्राह्मण-5-2-2-3 में इन्हें सप्तदशः प्रजापतिः कहा है. मन बुद् ध पांच ज्ञानेन्द्रियाँ पांच कर्मेन्द्रियाँ पांच वायु. इस लंग शरीर से आत्मा की सत्ता का प्रमाण मलता है. वह भा सत होती है. आकाश वायु अग्नि जल और पृथ्वी के सात्विक अर्थात ज्ञानमय अंशों से पांच ज्ञानेन्द्रियाँ और मन बुद् ध की रचना होती है. आकाश सात्विक अर्थात ज्ञानमय अंश से श्रवण ज्ञान, वायु से स्पर्श ज्ञान, अग्नि से दृष्टि ज्ञान जल से रस ज्ञान और पृथ्वी से गंध ज्ञान उत्पन्न होता है. पांच कर्मेन्द्रियाँ हाथ, पांव, बोलना. गुदा और मूत्रेन्द्रिय के कार्य सञ्चालन करने वाला ज्ञान.
प्राण अपान,व्यान,उदान,सामान पांच वायु हैं. यह आकाश वायु, अग्नि, जल. और पृथ्वी के रज अंश से उत्पन्न होते हैं. प्राण वायु नाक के अगले भाग में रहता है सामने से आता जाता है. अपान गुदा आदि स्थानों में रहता है. यह नीचे की ओर जाता है. व्यान सम्पूर्ण शरीर में रहता है. सब ओर यह जाता है. उदान वायु गले में रहता है. यह उपर की ओर जाता है और उपर से निकलता है. सामान वायु भोजन को पचाता है.

आइये अब देखते हैं शव का अर्थ क्या होता है –

"मंगलमय और कल्याणकर्ता"

अब इन दोनों अर्थो को मला कर दे खये –

शव + लंग = मंगलमय और कल्याणकर्ता + प्रमाण

तो इससे सद्ध है की शव लंग का अर्थ हुआ

वह ईश्वर जो मंगलमय और कल्याणकर्ता है उसका यह प्रमाण है की – मृत्यु के उपरान्त प्राणी की आत्मा को आवृत्त रखनेवाला वह सूक्ष्म शरीर जो पाँचों, प्राणों, पाँचों ज्ञानेन्द्रियों, पाँचों सूक्ष्मभूतों, मन, बुद् ध और अहंकार से युक्त होता है परन्तु स्थूल अन्नमय कोश से रहित होता है। लोक-व्यवहार में इसी को सूक्ष्म-शरीर कहते हैं। वशेष—कहते हैं क जब तक पुनर्जन्म न हो या मोक्ष की प्राप्ति न हो, तब तक यह शरीर बना रहता है।

शव कल्याणकर्ता है – मंगलमय है इसी लए वह ईश्वर (शव) यह कर्मफल व्यवस्था है क आप जब तक मोक्ष प्राप्त न कर लो – इस हेतु आपका पुनर्जन्म होता रहेगा – और ये सूक्ष्म शरीर इसी लए प्रमाण है की आप स्थूल शरीर से उत्तम कर्म करते हुए मोक्ष प्राप्त करो – इसी कारण ईश्वर को शव अर्थात कल्याणकारी कहा जाता है।

यह है वैज्ञानिक और वेदो के आधार पर " शव लंग" का अर्थ –

वह शव लंग नहीं जिसका पुराणो में बड़ा ही अश्लील चत्रण मलता है –

मैं सभी हिन्दू भाइयो से वनम्र प्रार्थना करता हु कृपया सत्य को जाने – वेदो को पढ़िए – ज्ञान और वज्ञानं की और लौटिए – दुराग्रह को त्याग कर सत्य को जाने और शव को शव (मंगलमय और कल्याणकर्ता) ही जाने – अन्य नहीं –

नमस्ते –

द्रौपदी का चीरहरण – मथक से सत्यता की ओर

JUNE 30, 2015 3 COMMENTS

मेरे सभी हिन्दू भाइयो और बहिनो –

जो जो भी व्यक्ति – महाभारत में ऐसा सोचते और समझते हैं की द्रौपदी के "चीर हरण" जैसा कुत्सित और भ्रष्ट आचरण हुआ था –

तो ऐसी वसंगति को दिमाग से पूरी तरह हटा देवे – और जो इस पोस्ट में लखा जा रहा है – उसे ध्यान पूर्वक पढ़े – निष्पक्ष होकर जांच करे और जो सत्य हो उसे मान लेवे –

यहाँ पोस्ट को बड़ी करने का उद्देश्य नहीं है – इस लए पॉइंट तो पॉइंट बात लखूंगा – यदि कसी भाई को स्पष्टीकरण चाहिए तो वषय से सम्बं धत सन्दर्भ दिए गए हैं स्वयं जांच कर लेवे – तब भी कोई शंका शेष हो तो सवाल पूछ लेवे –

पहली बात – जब द्यूतक्रीड़ा महाभारत में आरम्भ हुई और यु धष्ठर ने स्वयं और अपने भाइयो को तथा अपनी "पत्नी द्रौपदी" को दांव पर लगा दिया – और हार गए –
तब यहाँ ये जानना आवश्यक है क वो क्या हार गए और हारने के बाद क्या बन गए ?

दे खये –

दुर्योधन ने जब देखा की शकुनि ने यु धष्ठर से सब कुछ जीत लया है तो आदेश दिया –

दुर्योधन बोला – वदुर ! यहां आओ। तुम जाकर पांडवो की प्यारी और मनोनुकूल द्रौपदी को यहाँ ले आओ। वह पापाचारिणी शीघ्र यहां आये और मेरे महल में झाड़ू लगाये। उसे वहीँ दा सयों के साथ रहना होगा।

द्यूतपर्व – अध्याय ६६ श्लोक १

यहाँ स्पष्ट है – दुर्योधन ने पांडवो और द्रौपदी को केवल लज्जित ही करना था इस लए वदुर को बोला गया की द्रौपदी जो एक कुल की रानी थी – को "दासी" और पांडव जो राजा थे उन्हें – "दास" बना कर लज्जित ही करना मात्र दुर्योधन का मंतव्य था –

वदुर के वरोध और नीतिवचन सुनने के बाद दुर्योधन ने "प्रतिका मन" को आदेश दिया की द्रौपदी को यहाँ ले आवो (दासीरूप में झाड़ू लगाने हेतु)

द्यूतपर्व – अध्याय ६७ श्लोक २

प्रतिका मन ने द्रौपदी से कहा –

द्रुपदकुमारी ! धर्मराज यु धष्ठर जुए के मदसे उन्मत्त हो गए थे। उन्होंने सर्वस्व हारकर आप को दांव पर लगा दिया। तब दुर्योधन ने आपको जीत लया। याज्ञसेनी ! अब आप धृतराष्ट्र के महल में पधारे। मैं आपको वहां दासी का काम करवाने के लए ले चलता हूँ।

यहाँ भी बिलकुल स्पष्ट है की द्रौपदी को केवल दासी के काम हेतु महल की सफाई आदि करवाने के उद्देश्य से दुर्योधन ने प्रतिका मन को भेजा था – ता क द्रौपदी और पांडवो का मानमर्दन हो सके – अन्य कोई मंतव्य दुर्योधन का नहीं था।

द्यूतपर्व – अध्याय ६७ श्लोक ४

उपरोक्त श्लोको से स्पष्ट है – दुर्योधन का मंतव्य द्रौपदी का चीरहरण करना तो बिलकुल गलत और समाज को भ्रा मत करने वाली बात गढ़ी गयी है।

आगे दे खये –

कुछ मत्र कहते हैं की दुःशासन द्रौपदी को जबरदस्ती पकड़ कर – सभाग्रह ले आया – यहाँ पर भी कुछ शंका खड़ी होती है –

वैशम्पायनजी कहते हैं – जनमेजय ! दुर्योधन क्या करना चाहता है, यह सुनकर यु धष्ठर ने द्रौपदी के पास एक ऐसा दूत भेजा, जिसे वह पहचानती थी और उसी के द्वारा यह सन्देश कहलाया – "पाँचालराजकुमारी ! यद्य प तुम रजस्वला और नीवी (ना भ) को नीचे रखकर एक ही वस्त्र धारण कर रही हो, तो भी उसी दशा में रोती हुई सभामे आकर अपने श्वसुर के सामने खड़ी हो जाओ।

"तुम जैसी राजकुमारी को सभा में आई देख सभी सभासद मन ही मन इस दुर्योधन की निन्दा करेंगे।

द्यूतपर्व – अध्याय ६७ श्लोक १८-२१

यहाँ धर्मराज यु धष्ठर की बात से भी प्रमाण मलता है की द्रौपदी का चीरहरण जैसी घटना – समाज को भ्र मत करने हेतु कुछ धूर्तो ने रची – यदि दुर्योधन का मंतव्य केवल द्रौपदी का चीरहरण करना ही था – तो यु धष्ठर द्रौपदी को सभा में आने के लए क्यों कहते ?

जब क यह स्पष्ट है की द्रौपदी को यु धष्ठर ने सभा में आने के लए दूत से बुलावा भेज दिया – और द्रौपदी भी सभा में आने को तईयार थी – तब ये कहना की दुःशाशन जबरदस्ती द्रौपदी को पकड़ कर सभा में ले आया संदेह प्रकट करता है – खैर यदि ये मान भी ले की दुःशासन ने द्रौपदी को बाल से खींच घसीट कर सभा में ले आया – तो उसका वृतांत महाभारत में दे खये

दुःशासन के खींचने से द्रौपदी का शरीर झुक गया। उसने धीरे से कहा -'ओ मंदबुद् ध दुष्टात्मा दुःशासन। में रजस्वला हूँ तथा मेरे शरीर पर एक ही वस्त्र है। इस दशा में मुझे सभा में ले जाना अनु चत है।

द्यूतपर्व – अध्याय ६७ : ३२

दुःशासन बोला – द्रौपदी ! तू रजस्वला, एकवस्त्रा अथवा नंगी ही क्यों न हो, हमने तुझे जुए में जीता है ; अतः तू हमारी दासी हो चुकी है, इस लए अब तुझे हमारी इच्छा के अनुसार दा सयों में रहना पड़ेगा।

द्यूतपर्व – अध्याय ६७ : ३४

यहाँ दुःशासन के बोले शब्द दे खये – दुःशासन का उद्देश्य भी द्रौपदी का चीरहरण करना नहीं था – बल्कि यहाँ भी स्पष्ट है की कौरवो – दुर्योधन आदि को केवल पांडवो और द्रौपदी को "दास" आदि बनाकर भरी सभा में अपमानित ही करना था।

वैशम्पायनजी कहते हैं – जनमेजय ! उस समय द्रौपदी के केश बिखर गए थे। दुःशासन के झकझोरने से उसका आधा वस्त्र भी खसककर गर गया था। वह लाज से गाड़ी जाती थी और भीतर ही भीतर दग्ध हो रही थी। उसी दशा में वह धीरे से इस प्रकार बोली

द्रौपदी ने कहा – अरे दुष्ट ! ये सभा में शास्त्रो के वद्वान, कर्मठ और इंद्र के सामान तेजस्वी मेरे पता के सामान सभी गुरुजन बैठे हुए हैं। मैं उनके सामने इस रूप में कड़ी होना नहीं चाहती।

क्रूरकर्मा दुराचारी दुःशासन ! तू इस प्रकार मुझे ना खींच, ना खींच, मुझे वस्त्रहीन मत कर। इंद्र आदि देवता भी तेरी सहायता के लए आ जाएँ, तो भी मेरे पति राजकुमार पांडव तेरे इस अत्याचार को सहन नहीं कर सकेंगे।

द्यूतपर्व – अध्याय ६७ : ३५-३७

यहाँ ही वह शब्द है जहाँ पर द्रौपदी को घसीटने के कारण – द्रौपदी के रजस्वला अवस्था में पहने हुए एक वस्त्र के सरकने से द्रौपदी के चीरहरण की कथा गढ़ ली गयी – जब क ये चीरहरण नहीं था – केवल द्रौपदी को दुःशासन द्वारा खींचा गया –
घसीटा गया – जिसके परिणामस्वरूप द्रौपदी का एकमात्र पहना हुआ वस्त्र शरीर से थोड़ा सरक गया – जिसके आधार पर पूरी की पूरी मथ्या कथा बना दी गयी – की द्रौपदी का चीरहरण हुआ –

यदि द्रौपदी का चीरहरण करना उद्देश्य ही नहीं था दुर्योधन का तो चीरहरण जैसी कुत्सित भ्रान्ति क्यों और कस लए फैलाई गयी ?

इस लेख को ज्यादा बड़ा बनाने का कोई औ चत्य नहीं – इस लए यहाँ से स्पष्ट होगा की द्रौपदी का चीरहरण नहीं हुआ –

अब जो महाभारत में द्रौपदी के चीरहरण की झूठी और बेबुनियाद कथा जोड़ी गयी है अगले लेख में उसका भंडाफोड़ करेंगे – कैसे "द्रौपदी का चीरहरण" घटना जो महाभारत में जबरदस्ती ठूंसा गया – और क्यों ?

शेष अगले लेख में अगले लेख का इन्तेजार करे –

सीता की उत्प त्त – मथक से सत्य की और

JUNE 30, 2015 LEAVE A COMMENT

जनक के हल जोतने पर भू म के अन्दर फाल का टकराना तथा उससे एक कन्या का पैदा होना और फर उसी का नाम सीता रखना आदि असंभव होने से प्र क्षप्त है । इस वषय में प्र सध्द पौरा णक वद्वान स्वामी करपात्री जी ने स्वर चत "रामायण मीमांसा' में लखा है – "पुराणकार कसी व्यक्ति का नाम समझाने के लए कथा गढ़ लेते है। जनक पुत्री सीता के नाम को स्पष्ट करने के लए उन्होंने वैदिक सीता (= हलकृष्ट भू म) से सम्बन्ध जोड़कर उसका जन्म ही भू म से हुआ

बता दिया" (पृ ० 89) अथवा यह हो सकता है क कसी ने कारणवश यह कन्या खेत में फेक दी हो और संयोगवश वह जनक को मल गई हो अथवा कसी ने 'खेत में पडी लावारिस कन्या मली है' यह कहकर जनक को सौप दी हो फर उन्होंने उसे पाल लया हो । मह र्ष कण्व को शकुन्तला इसी प्रकार मली थी। और प्राप्ति के समय प क्षयों द्वारा संर क्षत एवं पा लत (न क प्रसूत) होने से उसका नाम शकुन्तला रख दिया था ।

धरती को फोड़कर निकलने बालों की "उद् भज्ज" संज्ञा है। तृण, औष ध, तरु, लता आदि उद् भज्ज कहलाते हैं । मनुष्य, पश्वादि, जरायुज, अण्डज और स्वेदज प्रा णयों के अन्तर्गत है । मनुष्य वर्ग में होने के कारण सीता की उत्प त्त पृ थवी से होना प्रकृति वरुध्द होने से असंभव है।

सीता की उत्पति पृ थवी से कैसे मानी जा सकती है, जब क बाल्मी क रामायण में अनेक स्थलों में उसे जनक की आत्मजा एवं औरस पुत्री तथा उ र्मला की सहोदरा कहा गया है –

वर्धमानां ममात्मजाम् (बाल० 66/15) ;

जानकात्मजे (युद्ध० 115/18) ;

जनकात्मजा (रघुवंश 13/78)

महाभारत में लखा है –

वदेहराजो जनकः सीता तस्यात्मजा वभो
(3/274/9)

अमरकोश (2/6/27) में 'आत्मज' शब्द का अर्थ इम प्रकार लखा है –

आत्मनो देहाज्जातः = आत्मजः अर्थात जो अपने शरीर से पैदा हो, वह आत्मज कहाता है। आत्मा क्षेत्र (स्त्री) का पर्यायवाची है ; क्षेत्र और शरीर पर्यायवाची है।

क्षीयते अनेन क्षेत्रम

स्त्री को क्षेत्र इस लए कहते हैं की वह संतान को जनने से क्षीण हो जाती है। पुरुष बीजरूप होने से क्षीण नहीं होता ।

रघुवंश सर्ग 5, श्लोक 36 में लखा है –

ब्राह्मे मुहूर्ते कल तस्य देबी कुमारकल्पं सुषुवे कुमारम् ।
अतः पता ब्रह्मण एव नाम्ना तमात्मजन्मानमजं चकार ।।

महामना पं ० मदनमोहन मालवीय की प्रेरणा से संवत 2000 में वक्रमद् वसहस्राब्दी के अवसर पर संस्था पत अ खल भारतीय वक्रम परिषद द्वारा नियुक्त का लदास ग्रंथावली के संपादक मण्डल के प्रमुख साहित्याचार्य पं ० सीताराम चतुर्वेदी ने उक्त श्लोक में आये "आत्मजन्मान्म" का अर्थ रघु की रानी की कोख से जन्मा कया हैं । तव जनक की 'आत्मजा' का अर्थ पृ थवी से उत्पन्न कैसे हो सकता है ? ब्रह्म मुहुर्त में जन्य लेने के कारण रघु ने अपने पुत्र का नाम अज (अज ब्रह्मा का पर्यायवाची है, क्यों क ब्रह्मा का भी जन्म नहीं होता) रखा। अज का अर्थ जन्म न लेने वाला होता है। कोई मूर्ख ही कह सकता है क अज का यह नाम इस लए रखा गया था, क्यों क वह पैदा नहीं हुआ था।

आत्मज या आत्मजा उसी को कह सकते हैं जो स्त्री – पुरुष के रज-वीर्य से स्त्री के गर्भ से उत्पन्न हो, इसमें सामवेद ब्राह्मण प्रमाण है-

अंगदङ्गात् सम्भव स हृदयाद धजायते .... आत्मा स पुत्र।
(1.5.17)

है पुत्र ! तू अंग-अंग से उत्पन्न हुए मेरे वीर्य से और हदय से पैदा हुआ है, इसी लए तू मेरा आत्मा है । खेत से उत्पन्न होने से तो तृण, औष ध, वनस्पति, वृक्ष, लता आदि सभी आत्मज और आत्मजा हो जाएँगे और बाप-दादा की सम्प त में भागीदार हो जाएंगे।

‘जनी प्रादुर्भावे’ से जननी शब्द निष्पन्न होता है। इससे जन्म देने वाली को ही जननी कहते है। पालन-पोषण करने वाली यशोदा माता कहलाती थीं, परन्तु जन्म न देने के कारण जननी देवकी ही कहलाती थी। बनवास काल में अत्रि मुनि
के आश्रम में अनसूया से हुई बातचीत में सीता ने कहा था –

पा णप्रदानकाले च यत्पुरा तवाग्निसन्निधौ।
अनु शष्टं जनन्या मे वाक्यं तद प मे घृतम् ।।
अयो॰ 118/8-9

 ववाह के समय मेरी जननी ने अग्नि के सामने मुझे जो उपदेश दिया था, उसे मैं कं चत भूली नहीं हूँ । उन उपदेशों को मैंने हृदयंगम कया है ।

क्या यहाँ ववाह के समय उपदेश देने वाली यह ‘जननी’ पृ थवी हो सकती है ?
और क्या बेटी को वदा करते समय बिलख बिलख कर रोने वाली पृ थवी थी ?
यहाँ माता को ही जननी कहकर स्मरण कया है, पृ थवी को जननी नहीं कहा।

तुलसीदास जी ने तो माता = जननी का नाम भी इस चौपाई
में लख दिया है :-

जनक वाम दि स सोह सुनयना ।
हिम गरि संग बनी जि म मैना ।।
(रामचरितमानस बालकाण्ड 356/2)

(ववाह वेदी पर) सुनयना (महारानी) महाराजा जनक की बाई और ऐसी शोभायमान थी, मानो हिमाचल के साथ मैना (पार्वती की माता) वराजमान हो।

पा णग्रहण संस्कार के समय जिस प्रकार रामचन्द्र जी की पीढियों का वर्णन कया गया था उसी प्रकार सीता की भी 22 पीढियों का वर्णन कया गया। यदि सीता की उत्प त्त पृ थवी ये हुई होती तो पृथ्वी से पहले की पीढ़िया कैसे बनती ?
इसे शाखोच्चार कहते है । राजस्थान में ववाह के अवसर पर दोनो पक्षों के पुरोहित आज भी 22 के ही नहीं, 30-40 पीढ़ियों तक के नामो का उल्लेख करते हैं । साधारणतया सौ वर्ष में चार पुरुष समझे जा सकते हैं। इस प्रकार 40 पीढियों में लगभग एक हजार वर्ष बनते है। अर्थात् सर्वसाधारण लोग भी मुहांमुही सैकडों वर्षो के पारिवारिक इतिहास का ज्ञान रख सकते थे। जिसका 22 पीढ़ियों का क्र मक इतिहास ज्ञात है उसे कीड़े-मकौडों या पेड़-पौधों की तरह पृ थवी से उत्पन्न हुआ नहीं माना जा सकता। वस्तुतस्तु सीता के पृ थवी से उत्पन्न होने

सम्बन्धी गप्प का स्रोत वष्णु पुराण, अंश 4, अध्याय 4, वाक्य 27-28 है जिसका वाल्मी क रामायण में प्रक्षेप कर दिया गया है। जन्म को पृथ्वी से मानकर सीता का अंत भी पृथ्वी में समाने की कल्पना करके ही कया गया है ।

अयोनिजा – सीता को अनेक स्थलों में अयोनिजा कहा गया है । पृ थवी से उत्पन्न होने का अर्थ माता- पता के बिना अर्थात स्त्री-पुरुष के संयोग के बिना उत्पन्न होना है। इसी को

अयोनिज सृष्टि कहते है, क्यों क इसमें गर्भाशय से बाहर निकलने में योनि नामक मार्ग का प्रयोग नहीं होता । सृष्टि के आदि काल में समस्त सृष्टि अमैथुनी होती हैं –

अमैथुनी सृष्टि से सम्बं धत पोस्ट का लंक – यहाँ से पढ़े
https://www.facebook.com/Aryamantavya/photos/a.1418444565059896.1073741828.1418437208393965/1618030795101271/?type=1&theater

यहाँ यह तथ्य जरूर जोड़ा जाता है की सृष्टि चाहे मैथुनी हो अथवा अमैथुनी – प्रा णयों के शरीरो की रचना परमेश्वर सदा माता पता के संयोग से ही करता है।
पर दोनों में अंतर केवल इतना है की आदि सृष्टि में माता (जननी) पृथ्वी होती है और वीर्य संस्थापक सूर्य (ऋग्वेद 1.164.3) में कहा है –

"द्यौर्मे पता जनिता माता पृथ्वी महीयम"

अर्थात सृष्टि के आदि काल में प्रा णयों के शरीरो का उत्पादक पता रूप में सूर्य था और माता रूप में यह पृथ्वी। परमात्मा ने सूर्य और पृथ्वी – दोनों के रज वीर्य के सं मश्रण से प्रा णयों के शरीरो को बनाया। जैसे इस समय बालक माता के गर्भ में जरायु में पड़ा माता के शरीर में रस लेकर बनता और वक सत होता है, वैसे ही आदि सृष्टि में पृथ्वी रुपी माता के गर्भ में बनता रहता है। इसी शरीर को साँचा रुपी शरीर भी कहा जाता है जिससे हमारे जैसे मैथुनी मनुष्य उत्पन्न होते रहते हैं।

सीता का जन्म सृष्टिक्रम चालु होने और साँचे तैयार होने के बाद त्रेता युग में हुआ था, अतः सीता के अयोनिजा होने का प्रश्न ही नहीं उठता। जनक उनके पता थे और रामचरितमानस के अनुसार सुनयना उनकी माता का नाम था।

मेरी सभी बंधुओ से वनती है, कृपया लोकरीति, मथक, दंतकथाओं आदि पर आंखमूंदकर वश्वास करने से अच्छा है – खुद अपनी धा र्मक पुस्तको और सत्य इतिहास को पढ़ कर बुद् ध को स्वयं जागृत करते हुए दूसरे हिन्दू भाइयो को भी जगाये – ता क कोई वधर्मी हमारे सत्य इतिहास और महापुरषो महा वदु षयों पर दोषारोपण न कर सके

आओ लौटे ज्ञान और वज्ञानं की और –

आओ लौट चले वेदो की और

नमस्ते

धर्मात्मा महाराज जटायु कोई पक्षी गद्ध नहीं – क्षत्रिय वर्ण के मनुष्य थे

JUNE 30, 2015 LEAVE A COMMENT

महाराज जटायु की वंशावली –

ऋ ष मरी च कुलोत्त्पन्न – ऋ ष ताक्षर्य कश्यप

और महाराज दक्ष कुलोत्त्पन्न – वनीता

ताक्षर्य कश्यप और वनीता के दो पुत्र –

गरुड़ और अरुण

अरुण के दो पुत्र हुए –

सम्पा त और जटायु

इन सभी महापुरषो का ववरण धीरे धीरे प्रस्तुत कया जायेगा – फलहाल आज हम चर्चा करेंगे –

धर्मात्मा महाराज जटायु के बारे में –

महाराज जटायु – ऋ ष ताक्षर्य कश्यप और वनीता के पुत्र थे, आप गृध्रराज भी कहे जाते हैं, क्यों क गृध्र एक पर्वत क्षेत्र है – जिसकी आकृति एक गद्ध की चोंच जैसी है – इनका राज्य – अवध (अयोध्या और म थला) के बीच का हिस्सा था – जो एक पहाड़ी क्षेत्र था। ऐसा में कोई भ्रान्ति वश नहीं लख रहा हु – ना ही मेरी कोई कपोल कल्पना है – आप रामायण में रावण और जटायु का संवाद पढ़े तो स्पष्ट दीखता है – दे खये –

रावण को अपना परिचय देते हुए जटायु ने कहा –

मैं गृध कूट का भूतपूर्व राजा हूँ और मेरा नाम जटायु हैं

सन्दर्भ – अरण्यक 50/4 (जटायुः नाम नाम्ना अहम् गृध्र राजो महाबलः |50/4)

क्यों क उस समय में आश्रम व्यवस्था की मान्यता थी जिसकी वजह से समाज और देश व्यवस्थित थे – आज ये वयवस्था चरमरा गयी है जिसके कारण ही देश पतन की और अग्रसर है – खैर – उस समय धर्मात्मा जटायु वानप्रस्थ आश्रम में होंगे – तभी वे अपने राज्य को युवा हाथो में सौंप देश और समाज की व्यवस्था में लग गए – इसका महत्वपूर्ण परिणाम था की माता सीता को रावण से बचाने के लए अपनी प्राणो की भी बाजी लगा दी –

कुछ लोग धर्मात्मा जटायु को – एक पक्षी – या फर बहुत बड़ा शरीर वाला गद्ध समझते हैं – ऐसे लोग केवल वो पढ़ते हैं जिससे उन्हें अपना मनोरथ सद्ध करना हो – जो सत्य और न्याय से परिपूर्ण हो वो पढ़ना नहीं चाहते – क्यों क यदि पक्षपात और दुराग्रह त्याग कर – सत्य अन्वेषी बने तो सब कुछ साफ़ और स्पष्ट है की वे एक मनुष्य ही थे – दे खये

1. जैसे की ऊपर वंशावली दी गयी है – धर्मात्मा जटायु – ऋ ष मरी च के कुल में उत्पन्न ताक्षर्य कश्यप ऋ ष और महाराज दक्ष के कुल में उत्पन्न वनीता के पुत्र थे – तो भाई क्या एक मनुष्य के गद्ध संतान उत्पन्न हो सकती है ?

2. प्रभु राम ने धर्मात्मा जटायु को अरण्य काण्ड में "गृध्राज जटायु" अनेक बार बोला है क्यों क वो उन्हें जान गए थे की वो गृध्र प्रदेश नरेश जटायु हैं।

3. जटायु राज को इसी सर्ग में श्री राम ने द् वज कहकर सम्बो धत कया – जो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के लए ही उपयोग होता है –

4. जटायु राज को श्री राम इसी सर्ग में अपने पता दशरथ का मत्र बताते हैं।

5. जिस समय रावण सीता का अपहरण कर उसे ले जा रहा था तब जटायु को देख कर सीता ने कहाँ – हे आर्य जटायु ! यह पापी राक्षसपति रावण मुझे अनाथ की भान्ति उठाये ले जा रहा हैं । (सन्दर्भ-अरण्यक 49/38) – यहाँ भी जटायु महाराज को द् वज सम्बोधन है – और यहाँ द् वज कसी भी प्रकार से पक्षी के लए नहीं हो सकता – क्यों क रावण को अपना परिचय देते हुए – जटायु महाराज अपने को – गृध्र प्रदेश का भूतपूर्व राजा बता रहे हैं।

6. जटायु राज का इसी सर्ग के बाद अगले सर्ग में दाह संस्कार स्वयं श्री राम ने कया – कुछ लोग ध्यान पूर्वक पढ़ लेवे – क्यों क बहुत से हिन्दू भाइयो के मन में वचार आता है की जटायु – एक बहुत वशाल – पर्वत तुल्य – और बृहद पक्षी (गद्ध) थे – तो भाई मुझे केवल इतना बताओ –

यदि जटायु महाराज इतने ही वशाल गद्ध थे – तो बाल्मी क रामायण के अरण्यकाण्ड सर्ग 68 में – प्रभु श्री राम बाल्मी क के शव को अपनी गोद में रखते हुए बड़े प्रेम से लक्ष्मण को कहते हैं – लक्ष्मण इनका दाह संस्कार हम करेंगे – प्रबंध करो – तब चता पर जटायु महाराज को चता पर लेटाकर – उनका दाह संस्कार प्रभु राम ने कया। तो बताओ भाई श्री राम इतने पर्वत तुल्य गद्ध शरीर – को कैसे उठा कर चता पर रखकर – दाह कया होगा ?

कुछ भाई अरण्य काण्ड के सर्ग ६७ का एक श्लोक प्रस्तुत करके कहते हैं की – श्री राम ने भी जटायु को गद्ध ही समझा था – क्यों क उन्होंने कहा की

"ये पर्वत के कंग्रे के तुल्य ने ही वैदेही सीता खा ली है, इसमें कोई संदेह नहीं।"

यहाँ पर्वत के कंग्रे तुल्य का सही अर्थ ना जानकार व्यर्थ ही आक्षेप करते हैं – पर्वत के कंग्रे तुल्य अर्थ बड़ा डील वाला – यानी औसत शरीर से बड़ा – और यहाँ वैदेही सीता खा ली है से तात्पर्य है की – उस वन में अनेक "जंगली – असभ्य – राक्षस प्रवर्ति के लोग निवास करते थे जो मांसभक्षी थे – इस लए प्रभु राम ने ऐसी सम्भावना व्यक्त की। भाई कृपया समझ कर पढ़िए –

यदि पर्वत के कंग्रे तुल्य का अर्थ इतना ही बड़ा होगा – तो बताओ कैसे इतने बड़े भरी भरकम शरीर को प्रभु राम ने उठाकर चता पर रखा होगा ? कैसे अपनी गोद में उस धर्मात्मा जटायु के सर को रखकर लक्ष्मण से वार्ता की होगी ?
इसी दाह संस्कार के बाद प्रभु राम ने – महाराज जटायु के लए उदककर्म भी संपन्न कया था।

अब जहाँ तक हिन्दुओ को भी पता होगा – ये उदककर्म – मनुष्यो द्वारा – मनुष्यो के लिए ही किया जाता है – अब यदि फिर भी कोई धर्मात्मा जटायु को गिद्ध समझे – तो ये उसकी मूरखता ही सिद्ध होगी।

कृपया अपने महापुरषो के सत्य स्वरुप को जानिये – उनके बल, पराक्रम, शौर्य और वीरता को व्यर्थ ना करे। उनके पुरषार्थ का मजाक न बनाये। उन्हें पशु पक्षी तुल्य जानकार बताकर – समझकर – उनके चरित्र का मजाक ना स्वयं बनाये न किसी को बनाने ही दे।

कृपया वेदो की और लौटिए – सत्य और न्याय की और लौटिए

धन्यवाद

महर्षि दयानंद और मनुस्मृति के वचनो पर आक्षेप का उत्तर

JUNE 30, 2015 LEAVE A COMMENT

हथिनी और हंसनी चाल संपन्न युवती विवाह के लिए क्यों उपयुक्त है

सत्यार्थ प्रकाश – एक ऐसा कालजयी ग्रन्थ जो सभी आरोपों से आज तक मुक्त रहा है – क्योंकि इसमें कोई ऐसी बात नहीं लिखी गयी जो निरर्थक हो – सभी बाते – ऋषि ने वेदो और अनेको आर्ष ग्रंथो का ध्यानपूर्वक अवलोकन करने के बाद ही लिखा। फिर भी कुछ लोग जानबूझकर अथवा स्वशंका से उत्पन्न कारणों से इस ग्रन्थ के कुछ हिस्सों की यदा कदा आलोचना करते रहते हैं। ऐसे आक्षेपों का इन्हे केवल एक लाभ उठाना है किसी प्रकार इस ग्रन्थ में खोट निकाल कर समाज को दिखा देवे जिससे समाज इस ग्रन्थ को निरर्थक मानकर त्याग दे और फिर ऐसे लालची लोगो की पूछ पुनः समाज में स्थापित हो जावे। कुछ ऐसे भी हैं जो स्वशंका उत्पन्न कर जवाब हासिल करना चाहते हैं। अंतर केवल इतना है की स्वशंका जिसमे उत्पन्न हुई वो सत्य को जानकार मिथ्या को तुरंत त्याग देगा इसमें शंका नहीं लेकिन जो वो लालची लोग हैं जिन्होंने इस आक्षेप को मढ़ा ही अपने प्रपंच के लिए है वो सत्य जानने के बाद भी इस आक्षेप को नहीं छोड़ेंगे।

हम बात कर रहे हैं कुछ लोगो द्वारा ऋषि के लिखे सन्दर्भ पर आक्षेप करने की तो पहले देखते हैं ऋषि ने आखिर लिखा क्या है :

ऋषि ने चतुर्थ समुल्लास में गृहस्थाश्रम के लिए आर्ष ग्रंथो में उपलब्ध व्यवस्थाओ को इंगित किया है। जिस प्रकार सम्पूर्ण सत्यार्थ प्रकाश में बिना आर्ष ग्रंथो के प्रमाण कुछ नहीं लिखा इसी प्रकार इस चतुर्थ समुल्लास में भी बिना आर्ष ग्रंथो के प्रमाण ऋषि ने कोई व्यवस्था नहीं की है।

चतुर्थ समुल्लास गृहस्थ आश्रम को इंगित करता है इसलिए पूरी व्यवस्था गृहस्थों के लिए कब क्या कैसी और क्यों होनी चाहिए से सम्बंधित है। जब ऋषि ने ये ग्रन्थ लिखा था तब की परिस्थिति पर एक बार नजर डालिये :

1. बाल ववाह से देश त्रस्त था।

2. दहेज़ पीड़ा का बोझ था।

3. महिलाओ को शक्षा आदि अ धकार से वं चत रखना प्रथम दायित्व था।

4. सती प्रथा जैसी कुप्रथा और महाबुराई फैली थी।

5. बाल ववाह के कारण "अबोध वधवा" का दुःख।

ये कुछ कारण मैंने गनाये – ऋ ष ने इन पीडाओ को महसूस कया – एक नारी का दर्द जाना – महसूस कया की ये देश और धर्म के लए कतना खतरनाक है। क्या इतने कार्यो से ज्ञात नहीं होता की ऋ ष स्त्री वरोधी नहीं थे बल्कि "नारी के उत्थान" हेतु पूर्ण संकल्पित थे। क्या केवल कुछ मूढ व्यक्तियों की कल्पनाओ के आधार पर ऋ ष दयानंद की वचारधारा को "नारी वरोधी" सद् ध कया जा सकता है ?

क्या इन कुप्रथाओ वरोध करना अपराध था ?

ऋ ष ने केवल सत्य बोला। और कुप्रथाओ का त्याग करने के लए ही इस कालजयी ग्रन्थ को लखा। ऋ ष के अनेक महान कार्यो को ना देखकर – केवल स्वार्थवश कुछ बातो पर आक्षेप करना कहाँ की बुद् धमत्ता है ? चलो आपने आक्षेप कया – ले कन सोच समझकर तो करते भाई – आइये दे खये जिस आक्षेप को तोड़ मरोड़कर पेश कर रहे उसमे प्रमाण क्या हैं और वज्ञानं क्या है – आइये दे खये :

आक्षेप 1. ह थनी और हं सनी जैसी चाल जिस युवती की हो उससे ववाह करे, हिरणी जैसी चाल वाली लड़की से ववाह न करे।

उत्तर : आश्वलायन गृह सूत्र के अनुसार कन्या में निम्न ल खत शुभलक्षण होने चाहिए –

1. बुद् ध 2. रूप 3. लक्षण अर्थात शुभ लक्षण 4. शील 5. आरोग्य

रूप की परिभाषा करते हुए शास्त्रकार कहते हैं की जिसमे वर का मन रमे उसे रूप कहते हैं।

आपस्तम्ब ऋ ष का भी कथन है की –

"यस्यां मनशचक्षुषोनिबन्धस्तस्यामृद् धरिति"

अर्थात जिसको देखने से, नेत्र और मन जहाँ बांध जाए, ऐसी कन्या से ववाह शुभ है।

अब कुछ महानुभाव जिन्होंने ऋ ष पर आक्षेप कर दिया की चाल के बारे में लखा यानी ऋ ष ने चाल पर ध्यान दिया – मंत्रो को तवज्जो नहीं दी – वो आपस्तम्ब ऋ ष के बारे में भी यही सोचेंगे की ऋ ष का ध्यान कन्या के चेहरे पर था – ज्ञान आदि वषय पर नहीं।

कन्या के शुभलक्षणयुक्त होने पर बहुत जोर अनेको ऋ षयों ने दिया है ता क गृहस्थाश्रम में वघ्न न हो – दुःख क्लेश आदि उत्पन्न न हो – जैसे

मनु महाराज ने कहा – कन्या लक्षणान्विता होने चाहिए – कन्या अंगहीन न हो, न ही कोई अंग छोटा बड़ा हो, जिसके नाम में सौम्य हो, जो हंस या हाथी की भांति चलती हो, जिसके शरीर के रोम, केश और दांत पतले हो, जिसका शरीर मृदु हो, ऐसी कन्या से ववाह करना उ चत है।

दक्ष तथा याज्ञवल्क्य ऋ ष ने भी लखा है की ववाह के पूर्व कन्या के लक्षणों को अवश्य देखे।

शातातप प्रणीत – "पृथ्वी चंद्रोदय" में लखा है की जिसकी वाणी हंस के सामान हो और वर्ण मेघ की तरह हो अर्थात चकनाई लए हुए श्याम वर्ण, ऐसी कन्या से ववाह करने से गार्हस्थ सुख प्राप्त होता है।

नारद जी ने भी लखा है की मृग के सामान जिसके नेत्र और ग्रीवा हो और हंस के सामान जिसकी गति और वाणी हो ऐसी स्त्री राजपत्नी होती है।

आजकल ऋ ष के कथन का वरोध और मजाक उड़ाना फैशन बन गया है – ऋ ष ने चतुर्थ समुल्लास में ग्रस्थ आश्रम के लए लखा जिसमे स्त्री लक्षणों के बारे में जो शास्त्रो में बताया गया – उन सम्भावनाओ – लक्षणों को बताया ता क वर स्वयं अथवा वर के माता पता आदि गुरुजन अच्छी कन्या का अन्वेषण करते समय अपने मन में यह निश्चय कर ले की अमुक कन्या में क्या क्या शुभ लक्षण हैं और उससे ववाह करना कहाँ तक उपयुक्त होगा।

शुभ लक्षणों का जानना इस लए आवश्यक है ता क भावी संतान सब सुख और गुणों से भरपूर है, दुर्गणों का लेशमात्र भी न हो। जिससे देश धर्म और समाज की व्यवस्था बानी रहे।

हाँ ये बात भी ठीक है क स्त्री-लक्षण शास्त्र का ज्ञान करके यह कहना उ चत नहीं है की अमुक की पत्नी अच्छी है, अमुक की पत्नी दुष्ट लक्षणा है, ले कन इतना अवश्य है की यदि इन नियमो का यथावत पालन न कया जाए तो दो प्रकार के दोषो की सम्भावना है :

1. शुभाशुभ दोनों प्रकार के लक्षण प्रत्येक व्यक्ति में पाये जाते हैं। जिस प्रकार के लक्षण अ धक बलवान और वशेष संख्या में होते हों वे वपरीत लक्षणों को दबा देते हैं। " ववेक वलास" आर्ष ग्रन्थ तो नहीं ले कन वहां एक पंक्ति समझने योग्य है :

"पुष्टं यादव देहे स्याल्लक्षणम् वाप्यलक्षणम्।
इतराब्दाद्यते तेन बलवत फलदं भवेत्।।

भावार्थ : हो सकता है कसी लक्षण से कोई स्त्री दुष्ट प्रतीत होती हो कन्तु उसमे ऐसे बलवान शुभ लक्षण भी हो जिनको हम नहीं देख सकते।

2. प्रत्येक स्थान पर ज्योतिष की भाँती लक्षण शास्त्र में भी देश, काल और पात्र का वचार करना उ चत है।

आगे के पोस्ट में इसी वषय को जारी रखकर पुराण आदि ग्रंथो से प्रमा णत कया जाएगा की ऋ ष का ज्ञान कतना उच्च कोटि का था। और मॉडर्न वज्ञानं भी पुष्टि करता है ये सद्ध होगा

परम पता परमात्मा ने चार ऋ षयों को चारो वेदो का प्रकश उनके आत्मा में कया था

JUNE 30, 2015 LEAVE A COMMENT

कोई वेद आगे पीछे पहले बाद में नहीं आया।

आक्षेप करिये – मगर जो आक्षेप का जवाब आपको मल चूका – जिसमे आपकी सम्मति हो चुकी – तब पुनः उसी वषय को बार बार उठाना ये बुद् धमानी नहीं – कृपया स्वयं एक बार इस पोस्ट को पढ़े फर यदि कोई शंका हो तो बताये – अन्यथा इस सद्धातं को जिस प्रकार सनातन मत मानता चला आ रहा है उसी प्रकार मानकर आगे बढ़िए – बाकी आपकी जैसी इच्छा वैसे करे।

वेदत्रयी : तीन प्रकार के मंत्रो के होने, अथवा वेदो मे ज्ञान,कर्म ओर उपासना तीन प्रकार के कर्तव्यो के वर्णन करने से वेदत्रयी कहे जाते है ।

यही बात सर्वानुक्रमणीवृ त्त की भू मका मे "षड्गुरु शष्य" ने कही है-

" वनियोक्तव्यरूपश्च त्रि वधः सम्प्रदर्श्यते|
ऋग् यजुः सामरूपेण मन्त्रोवेदचतुष्टये||"

अर्थात् यज्ञो मे तीन प्रकार के रूप वाले मंत्र वनियुक्त हुआ करते है|

तस्माद यज्ञात सर्वहुतः ऋचः सामानि ज ज्ञरे।
छन्दां स ज ज्ञरे तस्माद यजुस्तस्मादजायत।। (यजु० 31.7)

उस सच्चिदानंद, सब स्थानो में परिपूर्ण, जो सब मनुष्यो द्वारा उपास्य और सब सामर्थ्य से युक्त है, उस परब्रह्म से ऋग्वेद, यजुर्वेद सामवेद और छन्दां स – अथर्ववेद ये चारो वेद उत्पन्न हुए।

अन्य साक्षी :

यस्माद्दचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपकशन।
सामानि यस्य लोमानी अथर्वां गरसो मुखं।
स्कम्भं तं ब्रूहि कतमःस्विदेव सः।। (अथर्व० 10.4.20)

अर्थ : जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, उसी से (ऋचः) ऋग्वेद (यजुः) यजुर्वेद (सामानि) सामवेद (अं गरसः) अथर्ववेद, ये चारो उत्पन्न हुए हैं। इसी प्रकार रूपकालंकार से वेदो की उत्प त्त का प्रकाश ईश्वर करता है की अथर्ववेद मेरे मुख के समतुल्य, सामवेद लोमो के सामान, यजुर्वेद

हृदय के सामान और ऋग्वेद प्राण के सामान हैं, (ब्रूहि कतमःस्विदेव सः) चारो वेद जिससे उत्पन्न हुए हैं सो कौन सा देव है ? उसको तुम मुझसे कहो, इस प्रशन का उत्तर यह है की (स्कम्भं तम) जो सब जगत का धारणकर्ता परमेश्वर है, उसका नाम स्कम्भ है, उसी को तुम वेदो का कर्ता जानो। (ऋ० भा० भू० वेदोत्प त्त वषय)

ब्राह्मणो ने भी इस मान्यता को यथावत स्वीकार कया है –

"एवं वा श्वरेस्य महतो भूतस्य निःश्व सतमेतद्।
यद्दग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोथर्वां गरसः।। (शत० 14.5)

अर्थात : उस महान शक्तिशाली परमात्मा के निश्वासरूप में प्रकट ये चारो वेद जो ऋग्वेद, यजुर्वेद सामवेद और अं गरा से प्रकट अथर्ववेद के नाम से प्र सद्द हैं।

अन्य साक्षी :

"तेभ्यस्तप्तेभ्यस्त्र्यो वेदा अजायन्त, अग्नेऋग्वेदो, वायोर्यजुर्वेदः, सुर्यात्साम्वेदः।" (श० 11.5.2.3)

अर्थात : उन तपस्वी ऋ षयों के माध्यम से परमात्मा ने अग्नि से ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद, सूर्य से सामवेद, इस प्रकार त्रयी वद्यारूप चार वेद प्रकट कये।

अब जब वेद और ब्राह्मण ग्रन्थ दोनों ही प्रमाण हैं फर भी कैसे कोई सनातनी ये आक्षेप कर सकता है की अथर्ववेद बाद में आया है ? क्या ये सनातनी ज्ञान होगा अथवा नवीन भूल ?

खैर मनुस्मृति से एक साक्षी और देते हैं :

अध्यापयामास पतण्शिशुरां गरसः क वः।
पुत्रका इतिहोवाच ज्ञानेन परिग्रह्य तान।। (मनु० 2.126)

[इस प्रसंग में एक इतिवृत्त भी है] (अं गरसः शशुः क वः) आं गवंशी " शशु" नामक बालक वद्वान ने (पतृन्) अपने पता के सामान चाचा आदि पतरो को (अध्यापयामास) पढ़ाया (ज्ञानेन परिग्रह्य) ज्ञान देने के कारण (तान "पुत्रकाः" इति ह उवाच) उनको हे पुत्रो इस शब्द से सम्बो धत कया।

क व शब्द की व्युत्प त्त : क वः शब्द 'कु-शब्दे' (अदादि) धातु से 'अच इः' (उणादि 4.139) सूत्र से 'इः' प्रत्यय लगने से बनता है। इसकी निरुक्ति है :

'क्रांतदर्शनाः क्रांतप्रज्ञा वा वद्वांसः (ऋ० द० ऋ० भू०)
"क वः क्रांतदर्शनो भवति" (निरुक्त 12.13)

इस प्रकार वद्याओ के सूक्ष्म तत्वों का दृष्टा, बहुश्रुत ऋ ष व्यक्ति क व होता है।
इसे "अनुचान" भी इस प्रसंग में कहा है [2.129] ब्राह्मणो में भी क व के इस अर्थ पर प्रकाश डाला है –

“ये वा अनूचानास्ते कवयः” (ऐ० 2.2)

“एते वै काव्यो यद्दश्यः” (श० 1.4.2.8)

“ये वद्वांसस्ते कवयः” (7.2.2.4)

शुश्रुवांसो वै कवयः (तै० 3.2.2.3)

शशु अंगरस – यह अंगरावंश का एक वद्वान बालक था। बाल्यावस्था में मन्त्रद्रष्टा होने के कारण यह गुणा भधान “शशु” नाम से ही प्र सद्द हो गया।
इसका यह आख्यान ताण्ड्य ब्राह्मण 13.3.23-24 और पञ्च ब्रा० 13.3.24 में यथावत आता है। वहां इसे “मन्त्रकृतां मन्त्रकृत” कहा है। ऋ० 9.112 सूक्त इसी शशु ऋ ष द्वारा दृष्ट है। सामवेद में यत्सोम चत्रम………” [उ० 3.2.13] तृच् को इसके द्वारा दृष्ट होने के कारण ही “शैशव साम” कहा गया है।

उपरोक्त वेद और इतिहास प्रमाणों से सद्ध है की परमात्मा ने चारो ऋ षये के आत्माओ में एक एक वेद का प्रकाश एक ही समय में कया था। जब चारो वेदो ने स्वंय अर्थववेद के वेदत्व को स्वीकार कया है तो फर अर्थववेद को नया बतलाकर वेद की सीमा से दूर करना मुर्खतामात्र है|

बाकी ज्ञानीजन वचार करे।

।। ओ३म ।।

क्या ववाह के समय श्री राम की आयु १६ वर्ष और माता सीता की आयु ६ वर्ष थी ?

JUNE 30, 2015 LEAVE A COMMENT

शंका निवारण –

कुछ व शष्ट जनो को भगवान राम और माँ सीता के ववाह के सन्दर्भ में कुछ भ्रान्ति है. कुछ तर्क वाल्मी क रामायण से लेकर ये निष्कर्ष निकला जा रहा है की ववाह के वक़्त माँ सीता की उम्र मात्र छ साल की थी, जो सही नहीं है.. बाल्मी क रामायण से एक श्लोक का प्रमाण निकालकर कुछ लोग ऐसा प्रमा णत करना चाहते हैं की श्रीराम और माता सीता का ववाह “बाल ववाह” था – अर्थात – श्री राम की आयु १६ और माता सीता की आयु ६ वर्ष थी – जब क ये सत्य नहीं –

आइये बाल्मी क रामायण में सबसे पहले इसी श्लोक पर चर्चा कर लेते हैं की वहां क्या लखा है –

उ षत्वा द्वादश समाः इक्ष्वाकुणाम निवेशने |
भुंजाना मानुषान भोगतसेव काम समृद् धनी ||
(अरण्यकाण्ड ४७: ४)

ध्यान दे की इस श्लोक में द्वा और दश शब्द अलग अलग है. येद्वादश यानि बारह नहीं बल्कि द्वा "दो" को और दश "दशरथ" को संबो धत करता है. इसमें माँ सीता, रावन से, कह रही है की इक्ष्वाकु कुल के राजा दशरथ के यहाँ पर दो वर्ष में उन्हें हर प्रकार के वे सुख जो मानव के लए उपलब्ध है उन्हें प्राप्त हुए है। क्यों क इस श्लोक में इक्ष्वाकु कुल का नाम सीता जी बोल रही हैं – ले कन उस कुल में दशरथ पुत्र राम से उनका ववाह हुआ – स्पष्ट है – पुरे श्लोक में दशरथ नाम कहीं और भी नहीं लखा है – इस लए "द्वा" दो को और "दश" – महाराज दशरथ को सम्बोधन है।

इसे पूर्ण रूप से न समझ कर – कुछ ऐसा अर्थ कया जाता है – एक उदहारण –

"उस समय छोटे बच्चो को कमरे में बंद रखा जाता था" –
इसे कुछ इस तरह अर्थ कया गया –

"उस समय छोटे बच्चो को कमरे में बंदर खा जाता था" –

श्लोक का अर्थ थोड़ा गलत करने से पूरा मंतव्य ही बदल गया।

मम भर्ता महातेजा वयसा पंच वंशक ||३-४७-१० ||
अष्टा दश हि व र्षणी नान जन्मनि गण्यते ||३-४७-११ ||

इस श्लोक में माँ सीता कह रही है की उस समय (वनवास प्रस्थान के समय) मेरे तेजस्वी पति की उम्र पच्चीस साल थी और उससमय मैं जन्म से अठारह वर्ष की हुई थी. इसे ये ज्ञात होता है की वनवास प्रस्थान के समय माँ सीता की उम्र अठारह साल की थी औरवो करीब दो साल राजा दशरथ के यहाँ रही थी यानि माँ सीता की शादी सोलह साल की उम्र के आस पास हुई थी. ये केवल सोच और समझ का फेर है।

सद्धाश्रम : श्री राम १४-१६वे वर्ष में ऋषी वश्व मत्र के साथ सद्धाश्रम को गए थे। इस तथ्य की पुष्टि वाल्मीक रामायण के बाल काण्ड के वीस्वें सर्ग के शलोक दो से भी हो जाती है, जिसमे राजा दशरथ अपनी व्यथा प्रकट करते हुए कहते हैं- उनका कमलनयन राम सोलह वर्ष का भी नहीं हुआ और उसमें राक्षसों से युद्ध करने की योग्यता भी नहीं है।

उनषोडशवर्षो में रामो राजीवलोचन: न युद्धयोग्य्तामास्य पश्या म सहराक्षसौ॥ (वाल्मीक रामायण ,बालकाण्ड ,सर्ग २० शलोक २)
चूँ क भगवान राम ऋ ष वश्वा मत्र के साथ चौदह अथवा सोलह वर्ष की उम्र में गए थे और उसके बाद ही उनका ववाह हुआ था इसे ये सद्ध हो जाता है की प्रभु रामकी शादी सोलह वर्ष के उपरान्त हुई थी

श्री राम और लक्ष्मण ने – ऋ ष वश्वा मत्र के आश्रम सद्धाश्रम में करीब १२ वर्ष तक निवास कया और ऋ ष वश्वा मत्र ने उन्हें ७२ शस्त्रास्त्रों का सांगोपांग ज्ञान तथा अभ्यास कराया –

यदि श्री राम की आयु ऋ ष वश्वा मत्र के साथ उनके आश्रम में जाते समय १६ नहीं १४ भी माने तो ऋ ष वश्वा मत्र के आश्रम में वद्या ग्रहण करते हुए १२ साल व्यतीत हुए जिसका योग २६ वर्ष होता है –

उपरोक्त तथ्यों से सद्ध है की श्रीराम की आयु म थला में स्वयंवर जाते समय २५-२६ वर्ष थी और माता सीता की आयु १६ वर्ष थी।

अब भी यदि कुछ अतिज्ञानी नहीं मानते – तो कृपया बताये –

स्वयंवर के समय श्री राम की आयु यदि १६ वर्ष और माता सीता की आयु यदि ६ वर्ष मानते हो – तो वनवास क्या श्री राम २-४ वर्ष की आयु में गए ?

कृपया सत्य को जाने वेदो की ओर लौटिए –

नमस्ते –

नोट : प्रथम पद में यह द्वी शब्द रहता है – यहाँ पर द्वा द् ववचन का रूप है।

आदि सृष्टि के मनुष्यो की भाषा क्या थी और भाषा का वस्तार कैसे हुआ ?

JUNE 30, 2015 13 COMMENTS

भाषा की उत्प त्त :

मानव जिस समय पृथ्वी पर उत्पन्न हुआ उस समय बोलने और समझने की शक्ति समपन्न अवस्था थी – यह निर्देश पहले भी कया जा चुका है की आदि सृष्टि के मनुष्य युवा अवस्था के उत्पन्न होते हैं – इस लए उनमे बोलने की शक्ति थी तो यह भी मानना होगा की वर्ण भी थे जिनके द्वारा वह अपनी वाणी को प्रकट कर सके। यदि कोई यह माने की वर्ण नहीं थे तो उसके साथ यह भी स्वीकार करना ही पड़ेगा की मनुष्य आदिम अवस्था में गूंगा उत्पन्न हुआ। यदि गूंगा उत्पन्न हुआ तो फर वह कसी भी हालत में बोलने वाला नहीं हो सकता। इस लए निष्कर्ष यही निकलेगा की उसमे बोलने की शक्ति थी और जब बोलने की शक्ति थी तो ये भी तथ्यात्मक है की जो भाषा वो बोले उनके वर्ण भी होने चाहिए।

जो लोग कहते हैं की से मटिक भाषाए, हीब्रू अथवा अरबी आदि आर्य भाषाओ से स्वतंत्र हैं वह गलती पर हैं, कारण की मनुष्य कसी नवीन भाषा को तो कभी बना ही नहीं सकता ?

क्यों क मैथुनी (सेक्स) सृष्टि के लोगो की भाषा सदैव उनके माता पता तथा गुरु की भाषा होती है। ले कन आदि मनुष्यो की भाषा पूर्ण (संस्कृत) भाषा ही थी ऐसा नियम इस लए

मान्य है क्यों क आदि मनुष्यो का माता पता और गुरु ईश्वर के अतिरिक्त और कोई थे ही नहीं। तो ऐसी स्थति में और कोई देशीय भाषा वरासत में मलना असंभव है – तो साफ़ है उनकी केवल वही भाषा होगी जो सृष्टि के पदार्थो में वद्यमान हो – परमेश्वर द्वारा मनुष्य पर प्रकट कये जाने वाले ज्ञान के पूर्ण माध्यम होने की उस भाषा में क्षमता हो और वह ऐसी भाषा होनी चाहिए जो सदा प्रत्येक कल्प में एक सी रहती हो तथा आगे बोल चाल की समस्त भाषाओ को उत्पन्न करने में सक्षम हो। वशेष बात यह है की वो कसी देश वदेश की भाषा न हो और न उससे पूर्व कोई ज्ञान वा भाषा पृथ्वी पर कहीं मौजूद हो

बस यही बात है जो वशेष वर्णन के योग्य है की परमेश्वर ने मानव के पृथ्वी पर आने के साथ ही साथ वेद ज्ञान की प्रेरणा मनुष्य में दी – और वह वेद की भाषा "संस्कृत" में ईश्वरीय ज्ञान मानव को मला जो आदि ज्ञान और आदि भाषा – दोनों था।

वाणी भाषाओ का वस्तार –

ऊपर जो कुछ दर्शाया गया है उसका भाव यह है की आदि अमैथुनी सृष्टि के मनुष्यो के शरीर तथा शरीर के सब अंग आदि आदर्श रुपी थे, जैसे वो आदि सृष्टि के मनुष्य मैथुनी सृष्टि के मनुष्यो के लए साँचे रुपी थे अर्थात मनुष्य समाज के प्रवर्तक थे वैसे ही आदि भाषा भी साँचा रुपी और सभी भाषाओ की प्रवर्तक होनी चाहिए। इसी लए उस आदि भाषा का नाम संस्कृत है। संस्कृत का अर्थ होगा पूर्ण भाषा यानी जो पूर्ण भाषा हो वो संस्कृत कहलाएगी।

इसी प्रकार अपूर्ण भाषाए जो वेद भाषा से संकोच, अपभ्रंश और मलेच्छित आदि होकर मनुष्य के बोल चाल की भाषाए बनती हैं। क्यों क संस्कृत भाषा के दो भाग हैं –

1. वैदिक संस्कृत
2. लौ कक संस्कृत

प्राय सभी पश्चिमी वद्वान और अनेक भारतीय अनुसन्धानी भी संस्कृत को ही सभी भाषाओ का मूल मानते हैं – पर ध्यान देने वाली बात है की लौ कक संस्कृत की जन्मदात्री वैदिक संस्कृत है। वैदिक संस्कृत ही आदि भाषा है क्यों क वैदिक संस्कृत अर्थात वेद की भाषा कभी भी कसी भी देश वा कसी जाती की अपने बोलचाल की भाषा नहीं रही है – क्यों क वेदो में वाक्, वाणी आदि पदो का प्रयोग देखा जाता है भाषा का नहीं।

अब हम समझते हैं भाषा का वस्तार कस प्रकार हुआ – दे खये वेद में वैदिकी वाणी को नित्य कहा है –

तस्मै नूनम भद्यवे वाचा वरूप नित्यया।

(ऋग्वेद 8.75.6)

नित्यया वाचा – अर्थात नित्य वेदरूप वाणी – यानी की वैदिक संस्कृत यह सब वा णयों (भाषाओ) की अग्र और प्रथम है –

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्नं

(ऋग्वेद 10.71.1)

प्रभु से दी गयी वेदवाणी ही इस सृष्टि के प्रारंभक शब्द थे।

ईश्वर की प्रेरणा से यह वाणी सृष्टि के प्रारम्भ में ऋषयों पर प्रकट होती है।

यज्ञेन वाचः पदवीयमायणतामानव वन्दन्नृषषु प्र वष्टाम्।

(ऋग्वेद 10.71.3)

प्रभु अग्नि आदि को वेदज्ञान देते हैं इससे अन्य यज्ञीय वृत्तवाले ऋषयों को यह प्राप्त होती है – इसी मन्त्र में आगे लखा है –

इस ही प्रथम, निर्दोष और अग्र वाणी को लेकर लोग बोलने की भाषा का वस्तार करते हैं।

तामाभृत्या व्यदधुः पुरूत्रा तां सप्त रेभा अभी सं नवंते।।

(ऋग्वेद 10.71.3)

इस वाणी को ऋष मानव समाज में प्रचारित करते हैं। यह वेदवाणी सात छन्दो से युक्त है अर्थात २ कान – २ नाक – २ आँख और एक मुख ये सात स्तोता बनकर इसे प्राप्त करते हैं –

उपरोक्त प्रमाणों और तथ्यों से सद्ध होता है की मनुष्य की एक ही भाषा थी – और मनुष्यो ने इसी वेद वाणी से अर्थात प्रथम व पूर्ण भाषा संस्कृत से – अपूर्ण भाषाए – अर्थात जितनी भाषाए आज प्रचलत हैं उनका निर्माण कया – लेकन वैदिक संस्कृत में आज भी कोई फेर बदल नहीं हो सका – क्योंक वैदिक संस्कृत पूर्ण भाषा है –

कृपया सत्य को जानिये –

वेद की और लौटिए —

वेद, वज्ञानं, और सृष्टि उत्पति के युवा मनुष्य

JUNE 30, 2015 LEAVE A COMMENT

नमस्ते मत्रो,

अमैथुनी सृष्टि के मनुष्य कैसे और कस अवस्था में उत्पन्न हुए होंगे ?

जैसे की आपने वषय पढ़ा – जो बहुत ही गूढ है – फर भी हम कोशश करेंगे इस वषय पर ध्यान रखकर – वेदो के वज्ञानं को समझने की – वेदो के अनुसार आदि सृष्टि अमैथुनी होती है – पहले समझते हैं ये अमैथुनी सृष्टि क्या है ?

अमैथुनी सृष्टि से अ भप्राय उस सृष्टि से है जिसमे जीवो के शरीर बिना मैथुन (सेक्स) द्वारा उत्पन्न होते हैं – ऐसे शरीर उत्पन्न होने के बाद ही मैथुनी सृष्टि – अभी जो आप देख रहे इस प्रकार संतति उत्पन्न करने वाली होती है।

अब कुछ लोग सोचेंगे – जब प्रकृति का नियम ही मैथुनी सृष्टि से है तो फर कसप्रकार और क्यों अमैथुनी सृष्टि होती है ? कुछ सोचेंगे ऐसा कैसे हो सकता है ? कुछ कहेंगे वेद सदा ही ज्ञान वज्ञान और तर्क की कसौटी पर कसी तथ्य को कसता है मगर यहाँ अमैथुनी सृष्टि के लए कौन सा वज्ञानं और तर्क है ? कुछ भाई बिना कुछ सोचे वचार ही इस पोस्ट को लाइक कर देंगे और कमेंट में अपने वचार भी प्रकट नहीं करेंगे –

खैर पहले हम जांच करते हैं की अमैथुनी सृष्टि कस प्रकार होती है :-

हिंस्राहिंस्रे मृदुक्रूरे धर्माधर्मावृतानृते ।यद्यस्य सोऽदधात्सर्गे तत्तस्य स्वयं आ वशत् ।।

अर्थ : हिंस्रकर्म-अहिंस्र, मृदु (दयाप्रधान) क्रूर, धर्म घृत्यादि-अधर्म, सत्य असत्य, जिसका जो कुछ (पूर्वकल्प का) स्वयं प्र वष्ट था, वह वह उस उस को सृष्टि के समय उस (ईश्वर) ने धारण कराया। (२९)

यथा र्तु लङ्गान्यृतवः स्वयं एव र्तुपर्यये ।
स्वानि स्वान्य भपद्यन्ते तथा कर्मा ण देहिनः।।

अर्थ : जैसे वसंत आदि ऋतुएँ अपने अपने समय में निज निज ऋतु चन्हो को प्राप्त हो जाते हैं, उसी प्रकार मनुष्यादि भी अपने अपने कर्मो को पूर्व कल्प के बचे कर्मानुसार प्राप्त हो जाते हैं। (३०)

(मनुस्मृति अध्याय १ श्लोक २९-३०)

जिस प्रकार प्रलय काल में सभी जीव सुषुप्ति की अवस्था में गहन निद्रा में होते हैं, जैसे ही सृष्टि का समय आता है ईश्वर जीव के पूर्व कल्प के कर्मो अनुसार उ चत फल देकर आदि सृष्टि में उत्पन्न उ चत देह द्वारा फल भोग करवाते हैं।

अब सवाल उठेगा ये देह कैसे बनेगी ?

तो उसका जवाब है –

मह र्ष मनु ने जो ऋतुओं की उपमा देकर आदि अमैथुनी सृष्टि का वर्णन कया है, यह बहुत ही सारग र्भत है, मह र्ष का आशय कुछ इस प्रकार है जैसे ऋतुओं के चन्ह बिना श्रम वशेष स्वाभा वक ही प्रगट होने लगते हैं। वसंत ऋतू में वृक्षों में वह खमीर गर्मी सर्दी के नियत प्रभाव से उत्पन्न होने लगता है और सर्वत्र बाग़ खले फूलो से भर जाता है। भू म की गर्मी सर्दी के प्रभाव से ऐसी दशा स्वयमेव ही हो जाती है की स्वयं ही शंखपुष्पी आदि अनेक फूलवाली औषधीय निकल आती हैं।
ठीक ऐसे ही वसंत ऋतू में भू म को यदि गर्भाशय मान ले तो कोई संशय नहीं होगा क्यों क ऋतुओं के परिवर्तन का कारण जल गर्मी की कमीबेसी इसी प्रकार आदि सृष्टि के समय पर

पृथ्वी अत्यंत गर्म होती है ऐसा ब्राह्मण ग्रन्थ भी कहते हैं और हाल के वैज्ञानिक भी इसी निष्कर्ष पर पहुंचे हैं –

एक अवस्था में पृथ्वी और द्यौ साथ थे :

इमौ लोको सह सन्तौ व्यैताम। जै० ब्रा० १।१४५

इमौ वै लोको सहास्ताम्। एत० ब्रा० ७।१०।१

शतपत ब्रा० (७।१।२२३) आदि अनेक ब्राह्मण ग्रन्थ में श्लोक पाये जाते हैं जिनका
अर्थ है सूर्य और पृथ्वी पहले साथ ही साथ थे। बाद में पृथक हुए

इमौ वै सहास्ताम। ते वायु वर्यवात। तै० शा० ३।४।३

जब पृथ्वी सूर्य से अलग हुई तब बहुत गर्म थी इस हेतु उसमे मनुष्यादि प्रजा का उत्पन्न होना वज्ञानं सम्मत नहीं होता – इस लए पृथ्वी का उ चत तापमान बनाने हेतु वर्षा की गयी और उ चत समय पर पृथ्वी और जल के संपर्क से मनुष्य आदि की उत्प त्त से तीन चतुर्युगी पूर्व वृक्ष औष धयां आदि उत्पन्न हुई –

या औ षधी पूर्वा जाता देमयस्त्रियुग पुरा।
मनै नु बभ्रूणामह शत धामानि सप्तच।।
(ऋग्वेद 10.97.1)

औष धयां मनुष्य से तीन चतुर्युगी पूर्व उत्पन्न होती हैं।

ये सद्धांतभूत नियम है जो वेदो में इस वज्ञानं के सम्बन्ध में पाये जाते हैं।

सद्धांतो को लेकर ब्राह्मण आदि ग्रंथो में वस्तार और क्रम आदि दिखलाया गया है।

तस्मादात्मन आकाश सम्भूत। आकाशाद्वायु। वायोरग्नि। अग्नेराप। अदभ्य पृथ्वी। पृ थव्या औषधय। औश्विम्यो न्नम्। अन्नात्पुरुष।
तै० उ० 2.1

अर्थ : परमात्मा की नि मत्तता से प्रकृति से आकाश उत्पन्न हुआ। आकाश से वायु। वायु से अग्नि और अग्नि से जल। जल से पृथ्वी और पृथ्वी से औषधीय। इनसे अन्न और अन्न से पुरुष उत्पन्न हुआ।

यह एक वैज्ञानिक क्रम है जो उपनिषद में व र्णत है।

तो पृथ्वी में आदि सृष्टि के मनुष्य आदि प्रजा उत्पन्न करने के लए वसंत आदि ऋतू में गर्भ आदि का उ चत तापमान जब आया तब ईश्वर ने "वीर्य" को गर्भ (पृथ्वी) में धारण करवाया।

यहाँ वीर्य उस सामग्री का नाम है जो गर्भ में भ्रूण बनाने में उपयोगी पदार्थ वद्या है – जैसे वीर्य में अनेक गुण (प्रॉपर्टीज) होती हैं – वैसे ही रज में होते हैं – और गर्भ में उ चत तापमान होता है जिससे गर्भ में भ्रूण बनता है।

यदि हमें ४ लोगो का भोजन बनाना हो – तो नमक हल्दी मर्च आदि मसाला – सामान्य ही उपयोग होगा – परन्तु यदि ज्यादा लोगो का खाना बनाना हो तो अवश्य ही ज्यादा हल्दी मर्च आदि मसाला प्रयुक्त होगा – ठीक इसी प्रकार जब आदि सृष्टि के मनुष्य युवा अवस्था में उत्पन्न होते हैं – तब उत्तम और उ चत वीर्य से उस अवस्था के मनुष्य उत्पन्न होते हैं – यदि वज्ञान रज-वीर्य आदि के गुण (प्रॉपर्टीज) ठीक प्रकार जांच लेवे तो वज्ञानिक स्वयं स्वतंत्र रूप से वीर्य का निर्माण कर सकते हैं मगर ऐसा होना अभी हाल के अनुसन्धानियो द्वारा संभव नहीं मगर वज्ञानं ने इतनी तरक्की तो कर ही ली है की "कृत्रिम गर्भ" को बना सके। आने वाले कुछ वर्षो में शायद ये तकनीक ठीक काम करने लगे –

http://en.wikipedia.org/wiki/Artificial_uterus

ठीक इसी प्रकार यदि रज और वीर्य आदि के गुण धर्म (प्रॉपर्टीज) भी ज्ञात कर लेवे तो स्वतंत्र वीर्य – वज्ञानिक स्वयं निर्माण कर सकते हैं। और उ चत समय पर जब गर्भ (पृथ्वी) में मनुष्यादि देह में जीव का संयोग ईश्वर को करना होता है तब वद्युत अग्नि आदि से जीव का शरीर से संयोग होता है और जगत में मनुष्य आदि प्रकट होते हैं।

आपो ह यादवृहती वशवमायन गर्भदयाना जनयतिरग्निम्। (ऋग्वेद म. १० सूक्त १२१ मन्त्र ७) कारण भूत जले गर्भ में अग्नि को धारण करती हुई वश्व को प्रकट करती हैं।

अब कुछ लोग सोचेंगे – ये युवा अवस्था में ही क्यों आदि सृष्टि मनुष्य उत्पन्न होते हैं ? तो मत्रो इसका बहुत ही सुन्दर और सरल जवाब ऋ षवर दयानंद ने दिया है –
ऋ ष ने सत्यार्थ में इस सवाल का जवाब दिया है –

"आदि सृष्टि में मनुष्य युवावस्था में उत्पन्न होता है क्यों क जो बालक उत्पन्न होता तो उसके पालन के लए दूसरे मनुष्य आवश्यक होते और जो वृद्धावस्था में उत्पन्न करता तो मैथुनी सृष्टि न होती। इस लए युवावस्था में ही आदि सृष्टि मनुष्य उत्पन्न होते हैं।

तनिक वचार कया जाए तो ये बात सद्ध भी सही होती है और ऊपर के लेख में वैज्ञानिक और ता र्कक रूप से यही सत्य सद्धांत समझाने का प्रयास कया गया है =

कसी भी लेख में भूलचूक होना स्वाभा वक है – कृपया लेख को पढ़कर अपने सुझाव और परामर्श अवश्य देवे – यदि कोई त्रुटि रह गयी हो तो क्षमा करे

लौटो वेदो की और

नमस्ते

वेद और मनुस्मृति का मूल

JUNE 29, 2015 LEAVE A COMMENT

कुछ पौरा णक महाज्ञानी और अल्पबुद् ध लोग दोनों ही कुछ दिनों से एक वषय पर वार्तालाप करते चले आ रहे हैं, वषय है या सवाल है कुछ भी है वो इस प्रकार है –

मनुस्मृति का मूल वेद में कहाँ है ?

इस सवाल का जवाब देने से पूर्व हम देखते हैं मूल का अर्थ क्या होता है ?

मूल का अर्थ होता है आधार, बुनियाद, जड़, आदि। यानी इस सवाल को इस प्रकार समझा जा सकता है –

मनुस्मृति का आधार वेद में कहाँ है ?

यहाँ दो बाते समझनी चाहिए –

1. वेद अपौरुष्य हैं – अर्थात वेद ईश्वर का नित्य ज्ञान है जो आदि सृष्टि में ही चार ऋ षयों के ह्रदय में प्रका शत कया गया था। इससे सद्ध है की वेद में इतिहास नहीं हो सकता और जो वेद में इतिहास खोजे वो गधे के सर पर सींग खोजने का व्यर्थ कार्य ही कर रहा है। इसी कारण से वेदो को श्रुति कहा गया है। ये परंपरा सनातन काल से चली आ रही है पर खेद की आज कुछ तथाक थत वद्वान अपने स्वार्थ को पूरा करने के चक्कर में इस सनातन परम्परा का अपमान करने से भी नहीं चूक रहे।

2. मनुस्मृति महाराज मनु द्वारा बनाया गया मानवो के लए नि र्मत आचार, व्यव्हार आदि धर्मशास्त्र है जिसे स्मृति कहा गया है। इस धर्मशास्त्र में मनुष्यो को क्या कर्म करने और क्या नहीं करने आदि वषयो से सम्बं धत है, कहने का तात्पर्य है की धर्म पर चलना और अधर्म से पृथक रहने का मनुस्मृति में वधान कया गया है।

अब दोनों तथ्यों को ध्यान में रखकर ये तो सद्ध हो जाता है की मनुस्मृति वेदो के बहुत बाद की रचना है और मनुस्मृति में महाराज मनु ने वेदो के मंत्रो को देख पढ़ कर बहुत वचार करने के उपरान्त ये धर्मशास्त्र बनाया था। ता क समस्त मानव जाति का कल्याण हो।

अब सवाल है की श्रुति और स्मृति में अंतर क्या है ?

सामान्य रूप से वेद को ‘श्रुति कहा जाता है और धर्मशास्त्रा को ‘स्मृति। महाराज मनु ने स्पष्ट रूप से स्मृति को ‘धर्मशास्त्रा कहा है-

श्रुतिस्तु वेदो वज्ञेयो धर्मशास्त्रां तु वै स्मृतिः।

-मनुस्मृति 2/10

भावार्थ : वेद धर्म के मूल हैं। वेद में प्रतिपादित धर्म का ही सरल रूप से धर्मशास्त्रा में वर्णन हुआ है।

तो यहाँ स्पष्ट रूप से सद्ध हो गया की धर्म का मूल वेद है और वेद में प्रतिपादित धर्म का ही सरल रूप से धर्मशास्त्र यानी मनुस्मृति में वर्णन हुआ है।

इससे ये भी सद्ध हुआ की मनुस्मृति का मूल वेद ही है। और इस आक्षेप का समाधान भी हो गया की मनुस्मृति का मूल वेद में कहाँ है।

मह र्ष दयानंद और पं डत तारचरण के मध्य शास्त्रार्थ हेतु जो संवाद हुआ वो पठनीय है :

मह र्ष दयानंद : क्या आप वेदो का प्रमाण मानते हैं वा नहीं ?

पं डत तारचरण : जो वर्णाश्रम में स्थित हैं उन सबको वेदो का प्रमाण ही है।

यहाँ पं डत तारचरण को भी सत्यभाषण ही करना पड़ा क्यों क जो वेदो को प्रमाण न मानते ऐसा कहते तो बहुत ही निंदा होती – ले कन ध्यान योग्य बात है की जब वेद को स्वयं ही प्रमाण मान लया तब अन्य प्रमाण की इन्हे आवश्यकता क्या पड़ी ?

मह र्ष दयानंद : कहीं वेदो में पाषाणादि मूर्ति पूजन का प्रमाण है वा नहीं ? यदि है तो दिखाइए और जो न हो तो कहिये नहीं है।

पं डत तारचरण : वेदो में प्रमाण है वा नहीं परन्तु जो एक वेदो का ही प्रमाण मानता है औरो का नहीं उसके प्रति क्या कहना चाहिए ?

यहाँ ध्यान से पढ़ने वाली बात है – ऋ ष ने केवल मूर्तिपूजा के सम्बन्ध में सवाल कया की क्या वेदो में मूर्तिपूजा का प्रमाण है ? इस पर तारचरण जी से कुछ कहते नहीं बना क्यों क वो जानते थे की वेदो में मूर्तिपूजा का प्रमाण नहीं इस लए अन्य प्रमाणों की और जोर देकर कहा की अन्य प्रमाण भी साक्षी के तौर पर लेने चाहिए मगर तारचरण जी ये भूल गए की खुद भी ऊपर उन्होंने स्वयं माना की जो भी वर्णाश्रम में स्थित है उसके लए वेद ही प्रमाण है। तब जब वेद ही को वर्णाश्रम में स्थित के लए प्रमाण मान तब अन्य प्रमाण की साक्षी क्यों ?

मह र्ष दयानंद : औरो का वचार पीछे होगा। वेद का वचार मुख्य है। इस नि मत्त इसका वचार पाहिले ही करना चाहिए क्यों क वेदोक्त ही कर्म मुख्य है और मनुस्मिृत आदि भी वेदमूलक है इससे इनका भी प्रमाण है क्यों क जो वेद वरुद्ध और वेदो में अप्र सद्ध है उनका प्रमाण नहीं होता।

यहाँ ध्यान योग्य पढ़ने वाली बात है, क्यों क इससे पं डत तारचरण का पं डतव और मह र्ष दयानंद का अद्भुद ज्ञान दोनों ही समझ आ सकते हैं – दे खये मह र्ष ने कहा क्यों क मनुस्मृति वेद पर आधारित है अर्थात जो वेद सम्मत है उसको महाराज मनु ने भी धर्म कहा और जो वेद वरुद्ध है उसे अधर्म कहा – इससे सद्ध है की मनुस्मृति वेदमूलक है। मगर पं डत तारचरण की पंडताई दे खये :

पं डत तारचरण : मनुस्मृति का वेदो में कहाँ मूल है ?

अब दे खये धूर्तता और छल, ऋ ष ने कहा मनुस्मृति वेदमूलक है यानी वेद सम्मत बात मनुस्मृति में धर्म कहा है, मगर तारचरण जी अपनी धूर्तता करते हुए मनुस्मृति का वेदो में कहाँ मूल है ये सवाल पूछते हैं, खैर फर भी मह र्ष ने बहुत ही अच्छा जवाब देते हुए कहा :

मह र्ष दयानंद : जो जो मनुजी ने कहा है सो सो औष धयों का भी औषध है ऐसा सामवेद के ब्राह्मण में कहा है।

यहाँ ये बात बहुत ही गूढ है जो मह र्ष ने बताई – पं डत तारचरण समझ गये इस लए अब इस वषय से हट गए क्यों क जो इसी वषय पर रहते तो वेदो से प्रमाण देना होता की मूर्तिपूजा वेद सम्मत है – जो की कभी दे नहीं सकते थे – इस लए फ़ौरन एक दूसरे पं डत वशुद्धानंद स्वामी ने प्रकरण को बदलते हुए आक्षेप करने शुरू करे।

इतने से ही पाठकगण समझ लेंगे की पौरा णक व्यर्थ ही आक्षेप मढ़ते हैं जवाब उनपर आजतक नहीं मगर फर भी आक्षेप मह र्ष पर लगाने हैं, खैर हम यहाँ ऋ ष के समर्थन में और अनेक ऋ षयों जैसे मह र्ष व्यास और वाल्मी क जिन्होंने मनु महाराज के श्लोको को अपने ग्रंथो में महत्त्व प्रदान कया पठनीय है :

महाभारत में मनुस्मृति के श्लोक –

मह र्ष वेदव्यास (कृष्णद्वेपायन) र चत महाभारत में मनुस्मृति के श्लोक व् मनु महाराज क प्रतिष्ठा अनेकों स्थानो पर आयी है कन्तु मनु में महाभारत वा व्यास जी का नाम तक नही ।

महाभारत में मनु महाराज की प्रतिष्ठा –
मनुनाऽ भहितम् शास्त्रं यच्चा प कुरुनन्दन ! महाभारत अनुशासन पर्व , अ० ४ ७ – श ० ३ ५
तैरेवमुक्तोंभगवान् मनु: स्वयम्भूवोऽब्रवीत् । महाभारत शांतिपर्व , अ० ३ ६ – श ० ५
एष दय व ध : पार्थ ! पूर्वमुक्त : स्वयम्भूवा । महाभारत अनुशासन पर्व , अ० ४ ७ – श ० ५ ८
सर्वकर्मस्वहिंसा हि धर्मात्मा मनुरब्रवीत् । महाभारत शांतिपर्व , मोक्षधर्म आदि ।
अद्भ्योऽग्निब्राह्रतः क्षत्रमश्मनो लोहमु थतं ।
तेषाम सर्वत्रगं तेजः स्वासु योनिशु शाम्यति ।। – मनु अ० ९ – ३ २ १

ठीक यही मनु का श्लोक महाभारत शांतिपर्व अ० ५ ६ – श २ ४
में आया है और महाभारत के इस श्लोक से ठीक पूर्व २ ३ वें श्लोक में आया है –
"मनुना चैव राजेंद्र ! गीतो श्लोकों महात्मना"
अर्थात हे राजेंद्र ! मनु नाम महात्मा ने इन श्लोकों को कहा है !

इसी प्रकार मनु के जो जो श्लोक ज्यों के त्यों महाभारत में है ;
मैं यहाँ अब केवल उनके श्लोक नम्बर ही लखा रहा हूँ

मनु ० १ १ /७ – महा० शांति अ ० १६५ – श ० ५
मनु ० १ १ /१२ – महा० शांति अ ० १६५ – श ० ९

मनु ० १ १ /१८ ० – महा० शांति अ ० १६५ – श ० ३ ७
मनु ० ६ /४५ – महा० शांति अ ० २४५ – श ० १५
मनु ० २ /१२० – महा०अनु ० अ ०१०४ – श ० ६४

अब वो श्लोक लखते है जो मनु के है परन्तु कुछ परिवर्तन के साथ आयें है –

यथा काष्ठमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृग: ।
यश्च वप्रोSन धयान स्त्रयते नाम बिभ्रति । । – मनु २ /१५७

यथा दारुमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृग: ।
ब्राह्मणश्चान धयानस्त्रयते नाम बिभ्रति । । -महा शांति ३६/४७

अब केवल उनके श्लोक नम्बर ही लखा रहा हूँ जो कुछ परिवर्तन के साथ आयें है –

मनु ० १ १ /४ – महा० शांति अ ० १६५ – श ० ४
मनु ० १ १ /१२ – महा० शांति अ ० १६५ – श ० ७
मनु ० १ १ /३७ – महा० शांति अ ० १६५ – श ० २ २
मनु ० ८ /३७२ – महा० शांति अ ० १६५ – श ० ६३
मनु ० २ /२३१ – महा० शांति अ ० १०८ – श ० ७
मनु ० ९ /३ – महा० अनु अ ० ४६ – श ० १४
मनु ० ३ /५५ – महा० अनु अ ० ४६ – श ० ३

लगभग मनु के ५ ० ऐसे श्लोक है जो ज्यों के त्यों वा कुछ परिवर्तन के साथ महाभारत में आये है ।
वाल्मी क रामायण में मनुस्मृति के श्लोक –

मह र्ष वाल्मी क र चत रामायण में मनुस्मृति के श्लोक व् मनु महाराज क प्रतिष्ठा आयी है कन्तु मनु में वाल्मी क , राम जी आदि का नाम तक नही ।

वाल्मी क रामायण में मनु महाराज की प्रतिष्ठा –

कष्किन्धा काण्ड में जब श्री राम अत्याचारी बाली को घायल कर उसके आक्षेपों के उत्तर में अन्यान्य कथनो के साथ साथ यह भी कहते है क तूने अपने छोटे भाई सुग्रीव क स्त्री को बलात हरण कर और उसे अपनी स्त्री बना अनुजभार्या भमर्श का दोषी बन चूका है , जिसके लए (धर्मशास्त्र) में दंड क आज्ञा है ।
इस पृ थवी के महाराज भरत है (अतः तू भी उनकी प्रजा है) ; मैं उनकी आज्ञापालन करता हुआ वचरता हूँ फर में तुझे यथो चत दंड कैसे ना देता ? जैसे –

श्रूयते मनुना गीतौ श्लोकौ चारित्र वत्सलौ ॥
गृहीतौ धर्म कुशलैः तथा तत् चरितम् मयाअ ॥ वाल्मी क ४-१८-३०

राज भः धृत दण्डाः च कृत्वा पापानि मानवाः |
निर्मलाः स्वर्गम् आयान्ति सन्तः सुकृतिनो यथा ॥ वाल्मी क ४-१८-३१

शसनात् वा अ प मोक्षात् वा स्तेनः पापात् प्रमुच्यते |
राजा तु अशासन् पापस्य तद् आप्नोति कल्बिषम् ‖ वाल्मी क ४-१८-३२

उपरोक्त श्लोक ३० में मनु का नाम आया है और श्लोक ३१ , ३२ भी मनु महाराज के ही है ! उपरोक्त श्लोक कं चत पाठभेद (परन्तु जिससे अर्थ में कुछ भी भेद नही आया) मनु अध्याय ८ के है ! जिनकी संख्या कुल्लूकभट्ट क टिकावली में ३१८ व् ३१९ है –

राज भः धृत दण्डाः च कृत्वा पापानि मानवाः |
निर्मलाः स्वर्गम् आयान्ति सन्तः सुकृतिनो यथा ‖ वाल्मी क ४-१८-३१

राज भः धूर्त दण्डाः च कृत्वा पापानि मानवाः |
निर्मलाः स्वर्गम् आयान्ति सन्तः सुकृतिनो यथा ‖ मनु ८ / ३१८

शसनात् वा अ प मोक्षात् वा स्तेनः पापात् प्रमुच्यते |
राजा तु अशासन् पापस्य तद् आप्नोति कल्बिषम् ‖ वाल्मी क ४-१८-३२

शसनाद्वा अ प मोक्षाद्वा स्तेनः स्तेयाद वमुच्यते |
अशा सत्वा तू तं राजा स्तेनस्याप्नोति कल्बिषम् ‖ मनु ८/३१६

रामायण में स्पष्टतः मनु के श्लोकों (मनुना गीतौ श्लोकौ) क प्रशंसा वधमान है ठीक उसी प्रकार जैसे महाभारत में थी "मनुना चैव राजेंद्र ! गीतो श्लोकों महात्मना" – महाभारत शांतिपर्व अ० ५ ६ – श २ ३

ऐतिहा सक ग्रंथो में ही इतिहास का वर्णन हो सकता है, वेद तो ईश्वर का नित्य ज्ञान है उसमे इतिहास नहीं हो सकता, क्यों क वेद धर्म का मूल है इस लए मनुस्मृति वेदमूलक है तभी उसका वर्णन और महाराज मनु की प्रतिष्ठा रामायण व महाभारत दोनों ही ग्रंथो में वस्तार से मलती है, यदि अब भी कोई पौरा णक ना माने हठ करे तो इसे देखे :

इदं शास्त्रां तु कृत्वा-सौ मामेव स्वयमादितः।

व धवद ग्राहयामास मरीच्यादींस्त्वहं मुनीन।।

-मनुस्मृति 1/58

अतएव मनु द्वारा उपदिष्ट होने से ही इसका नाम मनुस्मृति है।

महाराज मनु आदि अनेको ऋ षयों ने धर्म का मूल वेदो के अनुसार जो नियम बनाये और उनका पालन करने की प्रेरणा दी वही धर्म कहा गया है। यदि कुछ महानुभाव वेद से उसे ना भी जोड़ते हुए 'चोदना' प्रेरणा तक ही सी मत रखे जैसे की व्यर्थ ही को शश काशी शास्त्रार्थ के दौरान वशुद्धानन्द जी ने की मगर वो भूल गए की कर्तव्य के मूल में प्रेरणा अवश्यम्भावी है अर्थात जिन लक्षणों, कर्तव्यों या नियमो में लोक को धारण करने की प्रेरणा मूलभूत रहती है वे धर्म हैं और उनका पालन आवश्यक माना जाता है, यही बात मह र्ष ने वशुद्धानन्द जी को जवाब देते समय कही थी :

महर्षि दयानंद : धर्म के दस लक्षण मनुस्मृति में बताये हैं, धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध – फिर सवाल घूम फिर कर विशुद्धानन्द जी पर ही आ गिरा क्योंकि उन्होंने धर्म के स्वरुप को पाहिले 'चोदना' अर्थात प्रेरणा बता दिया फिर बाद में धर्म का केवल एक ही लक्षण बताया।

इससे काशी में मौजूद सभी पंडितो का पंडितव और आडमबर सबके सम्मुख निकल आया। नतीजा आजतक सभी पंडित महर्षि दयानंद पर व्यर्थ आक्षेप लगा रहे हैं, जवाब खुद के पास मौजूद नहीं और जिस महर्षि ने अपनी विद्वत्ता काशी ही नहीं सम्पूर्ण धरती पर वेदो के माध्यम से दिखाई वो कोई साधारण मनुष्य नहीं कर सकता।

निश्चय ही वो महामानव अर्थात महर्षि थे।

धन्य है तुझ को ए ऋषि तूने हमेँ जगा दिया।
सो सो के लुट रहे थे हम,तूने हमेँ जगा दिया।

अब भी चाहे तो अनेको पौराणिक मिथ्या आक्षेप और विलाप करने हेतु स्वतंत्र है।

लौटो वेदो की और।

नमस्ते

ऋग्वेद का दसवा मंडल क्या बाद में जोड़ा गया – मिथक से सत्यता की ओर

JUNE 20, 2015 3 COMMENTS

पश्चिम में कोई एक तथाकथित विद्वान हुए थे – नाम था मैकडोनाल्ड – इन महाज्ञानी व्यक्ति ने अपने साहित्य में लिखा था की ऋग्वेद का दसवा मंडल बाद में जोड़ा गया – अनेको भारतीयों ने भी इस किताब को उस समय पढ़ा था – और बिना जाने सोचे समझे – तथ्य की जांच किये मान लिया की हाँ ऋग्वेद का दसवा मंडल बाद में जोड़ा गया – भाई दिक्कत ये है की मेकाले की अघोषित भारतीय संताने ही इस देश की जड़ खोदने में लग गयी – क्योंकि मेकाले की शिक्षा पद्धति ही यही थी – और ईसाइयो को विश्वास था की यदि वो आर्यो को उनकी ही धार्मिक पुस्तको से नीचे दिखा दे तो ईसाई आसानी से इस देश का इसाईकरण कर सकते हैं।

मगर भारतीय मानव समाज में आर्यो का "ज्ञान सूर्य" उदय हुआ था – जिसका नाम था ऋषि दयानंद – उसने इन ईसाइयो की ऐसी पोल खोली थी – और वैदिक सिद्धांतो का ऐसा डंका बजाया की आज तक और आने वाले भविष्य में भी वेदो का मंडन होता रहेगा – हर आक्षेप का जवाब ऋषि ने दिया – बस जरुरत है उस पुस्तक को सही से पढ़ने की – पुस्तक का नाम –

"सत्यार्थ प्रकाश"

खैर ये बात हुई ईसाइयो की धूर्तता की जिसका खंडन ऋ ष ने कया।

अब हम आते हैं मैकडोनाल्ड के आक्षेप पर – वो कहते हैं – ऋग्वेद का दशम मंडल बाद में जोड़ा गया है – जिसके लए वो दो तर्क देते हैं :

1. भाषा की साक्षी अनुसार ऋग्वेद में पहले ९ मंडल थे बाद में दसवा जोड़ा गया।

2. पद की साक्षी अनुसार ऋग्वेद में पहले ९ मंडल थे बाद में दसवा जोड़ा गया।

अब इनके आक्षेपों पर एक पुस्तक "वैदिक ऐज" जो एक भारतीय स्वघो षत वद्वान ने ही लखी थी – इनके तर्कों का बिना खोजबीन कये समर्थन कया –

ले कन ये भूल गए की ऋ ष दयानंद, सत्यार्थ प्रकाश और उसके अनुयायी सभी आक्षेपों का जवाब देने में सक्षम हैं। लहाजा एक पुस्तक वैद्यनाथ शास्त्री जी ने लखी थी जो ऐसे अनेक पाश्चात्य लोगो के अनैतिक वचारो को खंड खंड कर देती है – ऐसे मूर्खता पूर्ण वचारो का शास्त्री जी ने बहुत ही उत्तम रीति से जवाब दिया था दे खये :

दशम मंडल और अन्य मंडल में कोई भी ऐसा भाषा – पद नहीं पाया जाता है जो यह सद्ध करे की दशम मंडल पश्चात में जोड़ा गया। जब क वैदिकी परंपरा में ऋग्वेद का दूसरा नाम दाश्तयी है। यास्क मुनि ने 12.80 "दाश्तयीषु" शब्द का प्रयोग कया है। यह साक्षात प्रमाण है की ऋग्वेद में १० मंडल सर्वदा ही रहे। अन्यथा दाश्तयी नाम का अन्य कोई कारण नहीं।

त्वाय से अंत होने वाला पद केवल दशम मंडल में ही पाया जाता है यह भी वैदिक एज के कर्ताका कथन मात्र है। ऋग्वेद 8.100.8 में 'गत्वाय' पद आया है जो त्वाय से अंत हुआ है। 'कृणु' और 'कृ ध' प्रयोग भी पहले मंडलों में पाये जाते हैं। 'कुरु' का प्रयोग पाया जाना यह नहीं सद्ध करता की यह प्राकृतिक क्रया भाग हिअ। प्राकृत का यह प्रयोग है – इसका कोई प्रमाण नहीं। कृञ धातु का ही वेद कृणु, कृ ध प्रयोग भी है और उसी का कुरु भी प्रयोग है। 'प्रत्सु' पद का प्रयोग न होने से कुछ बिगड़ना नहीं। 'पृतना' पद को भी व्याकरण के नियमनुसार अष्टाध्यायी 6.1.162 सूत्र पर पढ़े गए वार्तिक के अनुसार 'पृत' आदेश हो जाता है। 'पृत्सु' भी निघन्टु में संग्राम नाम में है और 'पृतना' भी (निघन्टु 2.17)। 'पृतना' निघण्टु 2.3 में मनुष्य नाम से भी पठित है। 'पृतना' पद ऋग्वेद 10.29.8, 10.104.10 और 10.128.1 में आया है। 'पृतनासु' 10.29.8, 10.83.4 और 10.87.19 में पठित है। ऐसी स्थिति में यदि 'पृत्सु' पद का प्रयोग न भी आया तो कोई हानि नहीं। निघण्टु 2.3 में में 'चर्षणय' मनुष्य नाम में पठित है। ऋग्वेद 10.9.5, 10.93.9, 10.103.1,10.126.6, 10.134.1 और 10.180.3 में 'चर्षणीनाम' पद आया है। 10.89.1 में चपणीधृत पद भी आया है। यदि ' वचपणी, प्रयोग नहीं है तो इससे कोई परिणामांतर निकालने का अवकाश नहीं रह जाता है।

लेखक ने आक्षेप लगाये अनेक पदो पर वस्तृत जानकारी देते हुए सद्ध कया है की ऋग्वेद का दशम मंडल अथवा अन्य भी कोई मंडल बाद में नहीं जोड़ा गया।

लेखक ने एक जगह पाश्चात्य वद्वानो और भारत में मौजूद मेकाले की बढ़ाई करने वाली अवैध संतानो को ताडन करते हुए स्पष्ट बात लखी है :

पाश्चात्य वचारको ने पूर्व से ही एक निश्चित अवधारणा बना ली है अतः उस लकीर को बराबर पीटते रहते हैं। यही बात वैदिक ऐज के लेखक ने भी की है। वेद के आंतरिक रहस्य का ज्ञान तो कसी को है नहीं – अपनी तुक मार रहे हैं।

बहुत ही सैद्धांतिक बात करते हुए लेखक ने सभी आक्षेपों का बहुत सुन्दर और ता र्कक जवाब दिया है।